आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 अक्टूबर, 2017
डाक प्रेषण तिथि 10 अक्टूबर, 2017

वर्ष : 75 अंक : 10
कार्तिक, 2074 मूल्य : 10 रु.

डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
WPP LICENCE NO. JAIPURCITY/WPP-004/2015-17

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

कषाय अंक-4

75 हीरक वर्ष

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मायावी स्वयं को भी धोखा देता है एवं दूसरों को भी।
लोभी के चित्त का बहाव इकतरफा एवं सत्य से विमुख होता है।
लोभ धन का ही नहीं, हर इन्द्रिय के विषय का पद-प्रतिष्ठा का भी होता है।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी

हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : editorjinvani@gmail.com
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
WPP Licence No. JaipurCity-004/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सद्धं नगरं किच्चा,
तव-संवरमग्गलं।
खंतिं निउणपागारं,
तिगुत्तं दुप्पधंसयं।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 9.20

श्रद्धा नगर तप की आगल,
संयम का दृढ़ क्षान्ति प्राकार।
मन-वाणी-काया से गोपित,
रक्षा का मुनिवर करे विचार।।

अक्टूबर, 2017
वीर निर्वाण संवत्, 2543
कार्तिक, 2074

वर्ष 75 अंक 10

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, फैक्स : 0141-4068798, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

'कषाय' अंक (4)

सम्पादकीय-	जिनवाणी की हीरक यात्रा (10)	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
विचार-वारिधि-	मोह और अज्ञान	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	9
प्रवचन-	अशान्ति का मूल : क्रोध और लोभ	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	10
	सामायिक : कषाय-विजय की साधना	-महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.	14
कषाय-विवेचन -	कषाय-विजय	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	17
	ध्यान से कषाय विजय	-श्री रणजीत सिंह कूमट	19
	कषाय-विजय में सम्यक् तप की भूमिका	-प्रो. धर्मचन्द जैन	25
	क्या आधुनिक युग में कषायों की आत्यन्तिक निवृत्ति संभव है?	-डॉ. राजकुमार छाबड़ा	35
	माया महाठगिनी	-श्री पारसमल चण्डालिया	40
	संघ-सेवा से जुड़ें - समर्पण, स्नेह एवं सूझ का परिचय दें	-श्री नौरतनमल मेहता	44
प्रवचनांश-	शुद्ध संयम विरति के वृन्दावन में प्रवेश के मार्ग	-महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.	34
तत्त्व-बोध-	जिज्ञासा-समाधान	-संकलित	48
कविता/गीत-	जुआरी सपूतों की दिवाली	-श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा	34
	यह भूल जाता है	-श्री राजीव माथुर (नेपालिया)	47
	सुमिरण करो हीरा गुरुवर का	-श्री शान्तिलाल कुचेरिया	49
चिन्तन/विचार-	कषाय के रावण अभी जिन्दा हैं	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	51
	कषाय आत्मा के सब गुणों को नष्ट कर देता है	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	78
बाल-जिनवाणी -	गाय का पश्चात्ताप	-डॉ. दिलीप धींग	84
	पशु-पक्षी हैं मित्र हमारे!	-डॉ. नरेन्द्र भानावत	84
	Without love & Spirituality-Nothing	-*Mrs. Shashi Suresh Rathi*	85
	छठा बोल - प्राण दस	-संकलित	85
	Good Thoughts	-*Collected*	86
	स्थिरता व गति	-श्रीमती मीनाक्षी दिनेश जैन	86
	प्रकृति का नियम	-श्रीमती कंचन जैन	86
	सहेली की सीख	-श्रीमती विमला भण्डारी	88
स्वाध्याय-संघ-	पर्युषण रिपोर्ट-2017	-संकलित	52
परिणाम-	अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड परिणाम-2017	-संकलित	57
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	50
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	60
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	79

सम्पादकीय

जिनवाणी की हीरक यात्रा (10)

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जिनवाणी पत्रिका का अक्टूबर से दिसम्बर 1984 का अंक 'कर्मसिद्धान्त विशेषांक' के रूप में प्रकाशित हुआ था, इसलिए जनवरी 1985 के अंक में समाचारों का आधिक्य रहा। श्री जशकरण डागा के तात्त्विक लेख, डॉ. इन्दरराज जैन की कविताओं बालकथामृत में राजीव भानावत की कथाएँ प्रकाशित होने के साथ डॉ. नरेन्द्र भानावत के राजस्थानी दोहे एवं हिन्दी कविताओं ने भी विशेष स्थान बनाया। उनका दोहा मानव के सम्बन्ध में पठनीय है- ''सब चीजां महंगी थई, ससतो मिनख जवान। नैतिकता री ताकड़ी, राखै हरदम काण।।'' (अप्रेल 1986)।

सितम्बर-अक्टूबर 1985 का अंक 'श्रावक धर्म और समाज संगोष्ठी' के लेखों से सज्जित रहा। इसके प्रथम खण्ड में आचार्यप्रवर, संतप्रवरों एवं कतिपय विद्वानों के उद्‌बोधन और वक्तव्य हैं तथा द्वितीय खण्ड में 22 निबन्ध हैं। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्ती ने विद्वानों के सम्बन्ध में फरमाया-''विद्वानों का यह कर्त्तव्य है कि वे अपनी बुद्धि का प्रयोग स्व-पर के कल्याण व आध्यात्मिक दिशा में करें तथा लोग यह समझें कि विद्वान् समाज के लिए उपयोगी हैं। धनिकों का यह कर्त्तव्य है कि वे विद्वानों को अपने ज्ञान और बुद्धि के सम्यक् उपयोग के लिए आवश्यक समुचित साधन उपलब्ध करायें और उनके सम्मान व स्वाभिमान की रक्षा करें।'' दो संवत्सरी के प्रसंग पर आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने अपना अभिमत दिया जो नवम्बर 1985 के अंक में प्रकाशित है। पूज्य आचार्य श्री का एकता की दिशा में अभिमत रहा- ''आवश्यक है कि एक-दूसरे को शास्त्र विरुद्ध कहने की अपेक्षा प्रेमपूर्वक कोई मध्यम रास्ता निकाला जाय, तभी पर्वाराधन की एकता हो सकती है।'' भोपालगढ़ चातुर्मास में 23 से 27 अक्टूबर 1985 तक 'सामायिक साधना और जीवन व्यवहार' विषयक साधक शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 37 साधकों ने भाग लिया। 20 से 22 अक्टूबर तक 'अपरिग्रह एवं उपभोग परिमाण व्रत' विषयक विद्वत्संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें लगभग 50 विद्वानों ने सहभागिता की। इस अवसर पर आचार्यश्री के प्रेरणाप्रद आह्वान पर उपस्थित विद्वानों ने एक वर्ष के लिए कई नियम ग्रहण किए। यथा- द्रव्यों का परिमाण, कर्मादानों का त्याग, सप्तकुव्यसनों का त्याग, चाय-दूध को छोड़कर तिविहार, रात्रिभोजन का त्याग, 101 हरी लीलोती की मर्यादा, चमड़े का उपयोग नहीं करना, बिना टिकट यात्रा नहीं करना आदि नियम लिए गए। 16 नवम्बर 1985 को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री एवं भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी श्री सज्जननाथजी मोदी का संथारापूर्वक स्वर्गगमन हो गया। आदर्श रामायण, व्रत-प्रवचन संग्रह(जनवरी 1986) उपमिति-भव-प्रपंच कथा (फरवरी 1986) आदि की समीक्षाएँ प्रकाशित हुईं। पशु-पक्षियों के प्रति क्रूरता को दूर करने के लिए पशु-क्रूरता निवारण समिति ने अभियान चलाया। अखिल भारतीय श्री जैन विद्वत् परिषद् ने लघु पुस्तिकाएँ (ट्रैक्ट) प्रकाशित करना प्रारम्भ किया, जिनमें एक-एक विषय पर विवेचन किया गया। कुछ विषय इस प्रकार रहे- चरित्र निर्माण में नारी की भूमिका, सुखी जीवन कैसे जीएं, जैन परम्परा के अनुष्ठान, स्वाध्याय, सामायिक, धर्म और हम, सेवा करें : सुखी रहें आदि। वीर उपासिका पत्रिका भी प्रकाशित होने लगी, जिसका प्रकाशन श्राविका मण्डल द्वारा किया जा रहा था। साध्वी प्रमुखा, प्रवर्तिनी महासती श्री सुन्दरकंवरजी म.सा. का 07 अप्रेल 1986 को पावटा जोधपुर में 75 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया।

जून-जुलाई-अगस्त 1986 में फिर एक नया विशेषांक आ गया, जिसका विषय था 'अपरिग्रह'। इसके प्रथम विचार खण्ड में 35 प्रवचन एवं आलेख तथा द्वितीय खण्ड में 30 आलेख प्रकाशित हैं। बीच-बीच में बोध कथा, प्रसंग, सूक्ति, कविता आदि को भी योजित किया गया। यह विशेषांक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, जिसमें अपरिग्रह

के सभी पक्षों पर विभिन्न विचारकों के विचार उपलब्ध हैं। रायचूर चातुर्मास में विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के सान्निध्य में महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. ने 16 वर्ष की वय में मासक्षपण तप सम्पन्न किया।

श्री पी.एम. चोरडिया ने विभिन्न विषयों पर प्रश्नमंच कार्यक्रम प्रारम्भ किया, जिसका प्रकाशन जिनवाणी के अंकों में कई वर्षों तक निरन्तर होता रहा। इनमें ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक सामग्री विद्यमान है। क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रतिक्रमण, चन्दनबाला आदि विभिन्न विषयों पर यह प्रश्नमंच प्रबुद्ध सामग्री उपलब्ध कराता है। समभाव की साधना के क्या उपाय हो सकते हैं, इस पर विचार करते हुए अपने एक आलेख में श्री चाँदमल कर्णावट ने अग्रांकित उपाय बताये- 1. ममता भाव का त्याग, 2. अनित्यता का चिन्तन, 3. संकल्प की दृढ़ता, 4. आत्मस्वरूप का विचार, 5. विषमभाव के परिणामों का चिन्तन, 6. स्वाध्याय एवं ध्यान, 7. जप-तप आदि। पूना में अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी श्रमण संघ का अधिवेशन हुआ, जिसमें 12 मई को खुले अधिवेशन में आचार्य श्री आनन्दऋषिजी म.सा. ने श्री देवेन्द्रमुनिजी शास्त्री को उपाचार्य एवं डॉ. शिवमुनिजी को युवाचार्य घोषित किया। इसके साथ संघहित में 44 प्रस्ताव पारित किये गये।

जून 1986 से स्वाध्यायियों की ज्ञानवृद्धि हेतु स्वाध्याय शिक्षा पत्रिका प्रारम्भ हुई, जिसके प्रथम सम्पादक श्री श्रीचंद सुराणा 'सरस'आगरा थे। यह पत्रिका निरन्तर प्रकाशित होती रहे इस दृष्टि से कई श्रावकों ने अर्थ सहयोग प्रदान किया; जिसकी सूची अगस्त 1987 के जिनवाणी अंक में प्रकाशित है। अजमेर चातुर्मास में 30 सितम्बर से 04 अक्टूबर तक 'अ' श्रेणी के विशिष्ट स्वाध्यायियों एवं साधकों का सम्मिलित रूप से शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 43 स्वाध्यायियों एवं 45 साधकों ने भागीदारी की। पूज्य आचार्यश्री की प्रेरणा से सभी स्वाध्यायियों ने नियमित स्वाध्याय करने, दहेज का ठहराव न करने आदि के नियम अंगीकार किये। कर्मादान पर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्ती के प्रवचनों का निरन्तर 10 किश्तों में प्रकाशन हुआ। श्रावक के द्वारा यह सभी कर्मादान त्यागने योग्य हैं।

जैन परम्परा में राजस्थानी एवं गुजराती भाषा में विविध प्रकार का साहित्य लिखा गया। इनमें रास साहित्य महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। फरवरी-मार्च 1988 के अंक में डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे ने 'आदिकालीन हिन्दी साहित्य में जैन रासो काव्य-परम्परा' आलेख के अन्तर्गत सन् 1000 से 1400 ईस्वी तक रचित 33 रासों की सूची दी है। श्रीमती लालकंवरबाई सुकलेचा के द्वारा जयपुर समाज को चौड़ा रास्ता स्थित जैन स्थानक लाल भवन को अर्पित किये हुए 50 वर्ष होने के उपलक्ष्य में 03 सितम्बर 1988 को श्रावक संघ की ओर से गुणानुवाद समारोह आयोजित किया गया। उन्होंने आचार्यप्रवर श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. से गुरुआम्नाय ग्रहण की थी। लाल भवन के समर्पण का विवरण इस अंक में प्रकाशित है। जिनवाणी पत्रिका के संस्थापक सम्पादक श्री चम्पालाल जी कर्णावट का 66 वर्ष की आयु में मुम्बई में निधन हो गया। सन् 1989 से स्वाध्याय संघ के सचिव श्री चंचलमलजी चोरडिया द्वारा विशिष्ट स्वाध्यायियों का परिचय जिनवाणी में दिया जाने लगा। उन्होंने कई चिन्तनपरक लेख भी लिखे। इन दिनों डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष थे। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री डी.आर. मेहता एवं कार्याध्यक्ष श्री मोफतराजजी मुणोत थे। श्री रमेशमुनि शास्त्री जिनवाणी पत्रिका के प्रमुख लेखक रहे हैं। उनके अनेक लेखों की शृंखला में सन् 1989 में 'जैन संस्कृति में नारी का स्थान' विषय पर 10 अंकों में विस्तृत आलेख प्रकाशित हुआ। मई 1989 का अंक पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के आचार्यपद के 60 वें वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष्य में उनके गुणानुवाद से युक्त रहा। इसमें पूज्यश्री के आध्यात्मिक जीवन एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया। 11 मई 1989 को सुश्री विमलेश जैन मण्डावर महुवा रोड ने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की जो सम्प्रति व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. के रूप में संघ को दीप्त कर रही हैं। साहित्य समीक्षा की दृष्टि से जून 1989 का अंक विशिष्ट रहा, जिसमें 'मुहूर्तचिन्तामणिः एवं सिद्धान्तशिरोमणेः गोलाध्यायः' इन दो ज्योतिष ग्रंथों तथा टी.जी. कलघटगी द्वारा लिखित Study of Jainism पुस्तकों की समीक्षा की गई। ज्ञानामृत शीर्षक से डॉ. प्रेमचन्द रांवका द्वारा संस्कृत श्लोकों की व्याख्या का एक

नया स्तम्भ प्रारम्भ हुआ, जो कुछ वर्षों तक जारी रहा। जैन कथा साहित्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसकी विकास यात्रा पर श्री देवेन्द्रमुनिजी द्वारा लिखित पुस्तक की समीक्षा अक्टूबर 1989 के अंक में हुई है।

पूज्य आचार्यप्रवर के कोसाणा चातुर्मास में 11 से 13 नवम्बर 1989 को 'जैन धर्म और उसके प्रचार-प्रसार' पर एक संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें अनेक आलेख प्रस्तुत हुए। दिसम्बर के अंक में श्री उदयलाल जारोली ने जैन विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार हेतु भारतीय संविधान के प्रकाश में उपयोगी सुझाव दिए। अब जैन समुदाय अल्पसंख्यक है, अतः ये बिना किसी बाधा के जैन सिद्धान्तों को अपनी शिक्षण संस्थाओं में अध्यापन करा सकते हैं। विदेशों में जैन सिद्धान्त के प्रचार-प्रसार के सम्बन्ध में डॉ. कामता कमलेश का आलेख प्रकाशित हुआ है। उन्होंने बर्लिन यूनिवर्सिटी के डॉ. क्रोज का वक्तव्य दिया है- "जैन धर्म के सिद्धान्तों पर मुझे दृढ़ विश्वास है, यदि सब जगह उनका पालन किया जाये तो वे इस पृथ्वी को स्वर्ग बना देंगे तथा वहाँ शान्ति और आनन्द ही आनन्द होगा।" डॉ. आर.के. अग्रवाल ने फरवरी 1990 के अंक में मोटापे से युद्ध स्तर पर निपटने हेतु अनेक सुझाव दिए हैं। उनका कथन है- 'चखो, पर चरो मत। चरो, तो फरो। न फरो तो मरो।'

पूज्य आचार्य हस्ती के अंतिम पाली चातुर्मास में तप-त्याग का विशेष आराधन हुआ। लगभग 300 से ऊपर अठाई तप सम्पन्न हुए। 03 अक्टूबर को अनन्य गुरुभक्त, गुणानुरागी, संघहितैषी श्री पृथ्वीराजजी कवाड़ पुन्नमली (पीपाड़) का संथारापूर्वक देहावसान हो गया।

12 अप्रेल 1991 को 12.45 बजे निमाज में उच्च कोटि के आध्यात्मिक संत संयम-साधना के कल्पवृक्ष, प्रज्ञापुरुष पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. ने यावज्जीवन संथारा अंगीकार कर लिया तथा 21 अप्रेल 1991, वैशाख शुक्ला अष्टमी को रात्रि 8 बजकर 21 मिनिट पर निमाज (पाली) राज. में तेले की तपस्या सहित 13 दिवसीय संथारा पूर्वक उनका समाधिमरण हो गया। आचार्य श्री के लिखित संकेत के अनुसार पण्डित रत्न श्री हीराचन्द्र जी म.सा. को आचार्य एवं पण्डित रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. को उपाध्याय घोषित किया गया। दिवंगत पूज्य आचार्य भगवन्त पर प्राप्त श्रद्धांजलियों, काव्यांजलियों एवं समाधिमरण की विवेचना से सम्पृक्त जिनवाणी का लगभग 400 से अधिक पृष्ठों का श्रद्धांजलि विशेषांक मई-जून-जुलाई 1991 के अंक रूप में प्रकाशित हुआ। ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, 2 जून 1991 को पण्डित रत्न श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का आचार्य पद चादर महोत्सव सरदार सीनियर हायर सैकेण्डरी स्कूल के प्रांगण में सहस्रों श्रावक-श्राविकाओं की साक्षी में सम्पन्न हुआ। 16 से 18 अक्टूबर 1991 को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में जोधपुर में आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विद्वत्संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें लगभग 50 विद्वानों ने भाग लिया। 07 जून 1991 को प्रचण्ड लू के कारण तरुण तपस्वी श्री कैलाशमुनि जी म.सा. का असामयिक देवलोकगमन हो गया। जिनवाणी के प्रचारक श्री देवराज जी भंडारी का 91 वर्ष की आयु में 6 अगस्त को जयपुर में निधन हो गया।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की स्मृति में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा 'आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान' प्रारम्भ हुआ। प्रो. कल्याणमलजी लोढा इस सम्मान समिति के संयोजक मनोनीत हुए। प्रथम सम्मान 9 मई 1992 को विद्वद्वर्य श्री कन्हैयालाल जी लोढा को उनकी 'दुःखमुक्ति सुखप्राप्ति' पुस्तक पर तथा युवा प्रतिभा शोध सम्मान डॉ. संजीवजी भानावत को उनके शोध ग्रंथ 'सांस्कृतिक चेतना और जैन पत्रकारिता' पर प्रदान किया गया। यह आयोजन राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भैरोसिंह जी शेखावत के मुख्य आतिथ्य एवं राजस्थान पत्रिका के प्रमुख सम्पादक श्री कर्पूरचन्द कुलिश की अध्यक्षता में रवीन्द्र मंच पर सम्पन्न हुआ।

21 नवम्बर 1991 को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक संघ का प्रथम अधिवेशन लोकाशाह जयंती के पावन प्रसंग पर जोधपुर के जयनारायण व्यास स्मृति भवन, टाउन हॉल में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में विभिन्न ग्राम-नगरों के युवकों ने भाग लिया। अध्यक्षता अखिल भारतीय

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री मोफतराज जी मुणोत द्वारा की गई। श्री अमिताभजी हीरावत-जयपुर को अध्यक्ष मनोनीत किया गया। श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना एवं श्री चंचलचन्द जी सिंघवी परामर्शदाता बने।

28 मार्च 1992 को अहमदनगर में आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. का संथारा पूर्वक समाधिमरण हो गया। श्री एल.सी. कोठारी, श्री डी.सी. हीरावत एवं श्री सुमेरसिंह जी बोथरा के सद्प्रयत्नों से 40 महानुभावों ने अमेरिका में जिनवाणी पत्रिका की आजीवन सदस्यता स्वीकार की। मई-जून-जुलाई 1992 का अंक 'आचार्य श्री हस्ती व्यक्तित्व एवं कृतित्व विशेषांक' के रूप में लगभग 380 पृष्ठों में प्रकाशित हुआ। प्रथम खण्ड में पूज्य आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व पर 30 प्रवचन एवं आलेख उपलब्ध हैं। द्वितीय खण्ड में उनके कृतित्व के मूल्यांकन पर 30 आलेख तथा तृतीय खण्ड में पूज्य आचार्य प्रवर के प्रेरक पद एवं प्रवचन अंश प्रकाशित हैं। 29 महानुभावों ने हांगकांग में श्री प्रवीण कुमार जी लोढा, श्री महेन्द्र कुमार जी संचेती, श्री लाभचन्द जी कोठारी एवं श्री सुमेरसिंह जी बोथरा के प्रयत्नों से जिनवाणी की आजीवन सदस्यता ग्रहण की। इस प्रकार विदेशों में भी जिनवाणी पत्रिका की पहुँच बढ़ती रही।

जनवरी 1993 में जिनवाणी पत्रिका का स्वर्ण-जयंती वर्ष मनाया गया। डॉ. भानावत के अनुसार जिनवाणी की उस समय प्रसार संख्या 4300 थी तथा यह पत्रिका प्रमुख विश्वविद्यालयों के केन्द्रीय पुस्तकालयों, प्रमुख शोध संस्थानों एवं सूचना केन्द्रों को निःशुल्क प्रेषित की जा रही थी। जिनवाणी के लेखकों को मानदेय का प्रावधान 25-30 वर्ष पूर्व प्रारम्भ कर दिया गया था। डॉ. भानावत साहित्य-समीक्षा में निष्णात विद्वान थे। फरवरी 1993 के अंक में 21 पुस्तकों की समीक्षा प्रकाशित हुई, जिनमें से कुछ पुस्तकें थी- 1. योग बिन्दु के परिप्रेक्ष्य में जैन योग-साधना का समीक्षात्मक अध्ययन- डॉ. सुव्रत मुनि शास्त्री, श्री आत्मज्ञान पीठ, मानसा मण्डी, भटिण्डा 2. पुनर्जन्म का सिद्धान्त- डॉ. एस. आर. व्यास, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर 3. स्वाभाविक आहार और शाकाहार- जशकरण डागा, संघपुरा, टोंक 4. जैन समाज का वृहद् इतिहास प्रथम खण्ड- डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल, 867, किसान मार्ग, बरकत नगर, जयपुर।

मार्च-अप्रेल-मई-जून 1993 का संयुक्तांक 'स्वर्ण-जयंती अहिंसा विशेषांक' के रूप में प्रकाशित हुआ। विज्ञापन सहित लगभग 500 पृष्ठों में प्रकाशित इस विशेषांक के प्रथम खंड में अहिंसा विचार से सम्बद्ध 38 प्रवचन एवं आलेख तथा द्वितीय खंड में अहिंसा व्यवहार से सम्बद्ध 41 प्रवचन एवं आलेख प्रकाशित हुए। यथास्थान बोध कथा, प्रसंग, सूक्ति, कविता आदि को भी योजित किया गया। अहिंसा के संबंध में जैन दर्शन के अतिरिक्त विविध धर्मों की दृष्टि से भी अहिंसा पर प्रकाश डाला गया। अहिंसा के सकारात्मक स्वरूप पर भी लेख पठनीय हैं। 28 मार्च 1993 को श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर के रूप में श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. का उदयपुर में चादर समारोह आयोजित हुआ तथा 3 अप्रेल को 83 वर्ष की आयु में उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी म.सा. का संथारापूर्वक समाधि-मरण हो गया।

4 नवम्बर 1993 को प्रातः 6 बजे जिनवाणी के यशस्वी मानद सम्पादक डॉ. नरेन्द्रजी भानावत का निधन होने के साथ ही संघ-समाज में एक बहुत बड़ी रिक्तता का अनुभव हुआ। वे छह माह से पैन्क्रियाज के कैन्सर से पीड़ित होते हुए भी जिनवाणी पत्रिका का कार्य कर रहे थे। डॉ. भानावत का जिनवाणी पत्रिका को लगभग 26 वर्ष तक निरन्तर तथा उससे पूर्व में भी सम्पादन में सहयोग प्राप्त हुआ। वे उदारवादी विचारक एवं जैनदर्शन के विशिष्ट व्याख्याता होने के साथ ही अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद् के बहुमुखी कार्यक्रमों का संचालन कर रहे थे। डॉ. भानावत के पश्चात् उनकी धर्मपत्नी विदुषी डॉ. शान्ताजी भानावत ने जिनवाणी का सम्पादन कार्य संभाला, किन्तु उनका भी 24 मई 1994 को आकस्मिक निधन हो गया। डॉ. नरेन्द्र भानावत एवं डॉ. शांता भानावत दोनों श्रमणोपासक पत्रिका का भी सम्पादन कर रहे थे।

उनके पश्चात् जून 1994 से उनके विद्वान् सुपुत्र डॉ. संजीव भानावत ने जिनवाणी पत्रिका के सम्पादन का सितम्बर 1994 तक दायित्व संभाला। अक्टूबर 1994 से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के द्वारा वर्तमान सम्पादक को प्रधान सम्पादक के रूप में यह दायित्व सौंपा गया।

(क्रमशः)

विचार-वारिधि

मोह और अज्ञान

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- जहाँ मोह का आधिक्य होगा वहाँ शोक का भी अतिरेक होगा और जहाँ भोग की प्रबलता होगी, वहाँ रोग का साम्राज्य होगा।
- लोभवृत्ति मनुष्य की विचारशक्ति को कुंठित कर देती है, नष्ट कर देती है।
- जिस प्रकार दर्शनशक्ति से शून्य आँखें होकर भी व्यर्थ हैं, ठीक उसी प्रकार धर्म के बिना कुबेर का भण्डार, भीम का बल, वैज्ञानिकों का विज्ञान, काम का सौन्दर्य, वसुन्धरा का धन व रत्नाकर का रत्न सब व्यर्थ हैं।
- संसारी जीव ने अपनी तूली (चित्तवृत्ति) को कभी धन से, कभी तन से और कभी अन्य सांसारिक साधनों से रगड़ते-रगड़ते अल्प सत्त्व बना लिया है। अब उसे होश आया है और वह चाहता है कि तूली की शेष शक्ति भी कहीं इसी प्रकार बेकार न चली जाए। अगर वह शेष शक्ति का सावधानी के साथ सदुपयोग करे तो उसे पश्चात्ताप करके बैठे रहने का कोई कारण नहीं है, उसी बची-खुची शक्ति से वह तेज को प्रस्फुटित कर सकता है, क्रमशः उसे बढ़ा सकता है और पूर्ण तेजोमय भी बन सकता है। वह पिछली तमाम हानि को भी पूरी कर सकता है।
- परिवार में शिक्षा देने के प्रसंग से समूह के बीच किसी की व्यक्तिगत न्यूनता नहीं कहना चाहिए। मुखिया को निद्राजित् और भयजित् होना आवश्यक है, प्रातः एवं सन्ध्या असमय में निद्रा लेने से वह परिवार को सम्भाल नहीं सकेगा और ज्ञान-श्रवण व स्वाध्याय नहीं होगा।
- गगन में सूर्योदय अन्त में ज्ञानोदय की प्रेरणा करता है।
- मोह और अज्ञान के धूम्र एवं मेघावरण को दूर करने से अन्तर में ज्योति प्रकट हो सकती है।
- राग को गलाने से क्लेश-मुक्ति होती है।
- सम्यग्दर्शी परिग्रह को बन्धन मानता और मिथ्यात्वी बन्दी खाने को घर मानता है। एक राग को गलाता है तो दूसरा फलाता है।
- सूक्ष्म शरीर के त्याग के बाद चेतन द्रष्टा मात्र है।
- हिंसा और परिग्रह छोड़ने से ही विश्वशान्ति हो सकती है।
- भूमि पर रहने वाला मानव पदार्थों पर अधिकार जमाये बिना रहना सीखे तो वैर एवं संघर्ष का नाम न रहे।
- साधना का क्रम विनय से ज्ञान, दर्शन, चारित्र और मोक्ष की प्राप्ति है।
- धर्म को साधना का रूप दिया जाय, न कि रिवाज के रूप में रहे।
- पाप की कालिमा से कलुषित जीव को जो पवित्र करे, उसे पुण्य कहते हैं।
- मन, वचन एवं काय योग की शुभ प्रवृत्ति से शुभ कर्म का बन्ध होता है। अतः शुभयोग को पुण्यास्रव और उससे होने वाले शुभ कर्म के संचय को पुण्य बन्ध कहा है।
- सम्यक् ज्ञान के बिना व्यावहारिक शिक्षण का कोई मूल्य नहीं।
- हिंसा और परिग्रह का गाढ़ सम्बन्ध है, परिग्रह बढ़ेगा तो हिंसा भी बढ़ेगी।
- सच्चा धर्म वह है जो रागादि दोष को उत्पन्न ही न होने दे।
- परिग्रह और आरम्भ को घटाना ही जैन का लक्षण है। - *'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार*

प्रवचन

अशान्ति का मूल : क्रोध और लोभ

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

असमाधि और उसके भेद

बन्धुओं! अभी आपके सामने दशाश्रुत स्कन्ध का प्रसंग चल रहा है। उसके पहले अध्याय में भगवान ने फरमाया है कि मानव के मन में असमाधि किन-किन कारणों से पैदा होती है? मन की अशान्त और चंचल स्थिति को असमाधि कहते हैं। असमाधि की दशा में मानव किसी भी काम को मन लगाकर नहीं कर पाता। कारण उसके मन में चंचलता और अशान्ति रहती है। अतः शास्त्रकार ने असमाधि से बचने की शिक्षा दी है।

असमाधि के कुछ बाहरी कारण होते हैं और कुछ भीतरी कारण। कांटा, कील, दण्ड, प्रहार आदि बाहरी और राग-रोष, कलहादि आन्तरिक कारण होते हैं। भगवान महावीर ने इन दोनों प्रकार की असमाधियों का प्रथम अध्याय में विचार किया है और साधक को इस बात के लिए सावधान किया है कि यदि वह असमाधि तथा असमाधि के कारणों से बचेगा, तो साधना में सरलता से आगे बढ़ सकेगा।

असमाधि के दो प्रकारों में एक को द्रव्य असमाधि तथा दूसरे को भाव असमाधि कहा गया है, भाव असमाधि के प्रसंग में दो बातें कही गयी हैं- ''कोहणे और संजलणे'' अर्थात् क्रोध और लोभ। यों तो दोनों एक ही हैं, परन्तु कषाय के भेदों के साथ दो बताये गये हैं। ये दोनों भाव असमाधि के कारण हैं। हम करीब-करीब द्रव्य असमाधि से बचने की बड़ी चिन्ता करते हैं। कभी पेट में दर्द हो गया, कभी सिर में दर्द हो गया, कभी चलते-चलते ठोकर लग गई, कभी पैर में कांटा लग गया तो उसका हमारे मन को बड़ा खयाल आता है और सोचते हैं कि इस पीड़ा को, दर्द को, वेदना को, किस तरह जल्दी से रफा-दफा किया जाय, किनारे लगाया जाय।

द्रव्य से भाव असमाधि बड़ी

परन्तु सोचने की बात है। भगवान महावीर कहते हैं कि मानव! यह बाहरी असमाधि तो कुछ भी नहीं है, जबकि तू इस असमाधि को इतना बड़ा महत्त्व का रूप दे रहा है और इसके लिए बड़ी चिन्ता कर रहा है तथा हाय-हाय मचा रहा है। अरे! यह बड़ी असमाधि नहीं है। बड़ी असमाधि तो कोई दूसरी है। जिस ओर तू लक्ष्य ही नहीं कर रहा है। वह असमाधि विकारों की है, कषायों की है। यदि क्रोध मन में जाग रहा है, मान जाग रहा है, माया का जाल मन के भीतर बिछ रहा है अथवा लोभ सता रहा है या कुछ ऐसे ही दूसरे विकार खड़े हो रहे हैं- इन विकारों की ज्वालायें उठ रही हैं तो जल्द सावधान हो जा। ये बड़ी असमाधि के कारण हैं। इनसे होने वाले पतन या सर्वनाश को सहसा कोई नहीं बचा सकता।

इनको रोकने का, समाप्त करने का प्रयत्न करो। ये सारी भाव असमाधियाँ हैं। ये असमाधियाँ कब किसको, किस तरह पछाड़ देती हैं, इसके लिए शास्त्रों में अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं, जिनमें भाव असमाधि के कटुक फल का चित्रण किया गया है। इनमें से एक उदाहरण आपके सामने चल रहा है और वह है भगवान महावीर के पूर्वभवों में सोलहवें विश्वभूति के भव का।

भगवान महावीर ने अपने पूर्वभवों में छोटी-बड़ी साधना करते हुए, जीवन को ऊपर उठाया, साधना के अनुकूल सामग्री उपलब्ध की। पहले खूब अटके और भटके भी। साधना जब ज्ञानभाव में चलती है तो भटकना रुकता है और अज्ञानभाव में चलती है तो भटकना बढ़ाती है। महावीर कहते हैं कि कर्मों का फल, किसी व्यक्ति विशेष के साथ पक्षपात नहीं करता। कर्म के सामने कोई छोटा या बड़ा हो, अमीर या गरीब हो, राजा या रंक हो, चाहे कोई अवतारी होने वाला भी क्यों न हो, परन्तु कर्मों

का बंध करते सावधानी रहे। यदि बंध करते सावधानी नहीं रक्खी, चूक गये तो उसका परिणाम भयंकर हो सकता है।

साधना के दो शत्रु– क्रोध और लोभ

बन्धुओं! आपको पूर्व का कथन ध्यान में होगा कि विश्वभूति ने अपने सामने आये हुए, सांसारिक प्रतिकूल वातावरण और भाई के द्वारा किये कपटपूर्ण व्यवहार को सहन कर लिया। उन्होंने इसके लिए विशाखभूति राजकुमार से लड़ाई नहीं की, झगड़ा नहीं किया। घटित घटना से उग्ररूप धारण करने के बजाय, अपनी उग्र वृत्तियों का शमन कर लिया। आचार्य संभूतिविजय के चरणों में, साधना करते हुए, वे कर्म काटने में लग गये। परन्तु देखा जाता है कि कभी-कभी आगे बढ़ने के संयोग, प्राणी के लिए, प्रतिकूल भी बन जाते हैं। कहा गया है कि उन लुभाने वाले और साधक को बीच में रोकने वाले भावों में दो प्रमुख शत्रु हैं, बाधक हैं– क्रोध और लोभ। नीतिकारों ने भी कहा है– ''क्रोध-लोभाद् विनश्यति।'' यानी क्रोध और लोभ से धर्म नष्ट होता है। धर्मरूपी कल्पतरु सत्य से पैदा होता है, दयादान से बढ़ता है, क्षमा से कायम रहता है और क्रोध-लोभ से नष्ट हो जाता है। जैसा कि कहा है–

सत्येनोत्पद्यते धर्मः, दयादानेन वर्धते।
क्षमया च स्थाप्यते धर्मः, क्रोध-लोभाद् विनश्यति।।

आप उपवास आदि तपस्या कम कर सकें या ज्यादा कर सकें, यह आपकी शारीरिक अनुकूलता पर निर्भर है। परन्तु आप तपस्या करने के साथ-साथ इस तपस्या को भी ध्यान में रखें कि मैं क्रोध-लोभादि विकारों पर, जो अपने को हानि पहुँचाने वाले हैं, नियन्त्रण कर रहा हूँ या नहीं? यदि हम बाह्य तपस्या करने में ही रहे और इस बात को भूल गये; दिमाग की उत्तेजना को नहीं रोका एवं धन के प्रलोभनों में युग की हवा की तरफ ही बहते गये और ईर्ष्या एवं रोष आदि का शमन नहीं किया तो हमारी तपस्या जो फलवती होनी चाहिये, कर्म काटने वाली होनी चाहिये, भव बन्धनों से बचाने वाली होनी चाहिये, वह सार्थक नहीं बन पायेगी। भव बन्धन को नहीं काट सकेगी। प्रत्युत भव बन्धनों में और जकड़ा देगी।

इसलिए असमाधि की चर्चा के प्रसंग में, भगवान ने कहा कि मानव! तू संज्वलन क्रोध में जलता रहा, बात-बात में उबलता रहा, तो तुम्हारे ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के गुण भीतर ही भीतर, भस्म होते जायेंगे– जलकर खाक हो जायेंगे। फिर तो तुम्हारा सारा किया कराया व्यर्थ हो जायेगा। फलस्वरूप तुम्हें भयंकर मानसिक अशान्ति होगी। इसलिए प्रभु ने कहा कि पहले इस बड़ी असमाधि से दूर रहो।

क्रोध से बचने का उपाय

भाव असमाधि अर्थात् क्रोध से बचने का एक रास्ता तो यह है कि जिस किसी निमित्त को पाकर आपके मन में क्रोध उत्पन्न होता हो, उससे अलग हो जाओ। यदि वहाँ खड़े रहोगे तो आपके मन में उत्तेजना बढ़ेगी, आवेश में कभी कुछ बोल दिया तो दोनों ओर के मुकाबिले से झगड़ा हो जायेगा। अतः कितना शीघ्र संभव हो, उस स्थान से दूर हो जाओ। दूसरा उपाय है, हटने के साथ दांत बन्द कर लो, मुँह बंद कर लो अर्थात् किसी को कुछ भी जवाब मत दो। मन ही मन यह सोचो कि मैं गूँगा और बहरा बन गया हूँ। मुझे कुछ देर तक भगवान का ही नाम स्मरण करना है। ऐसा सोच कुछ समय तक मत बोलो।

यदि क्रोध आपको आया और आप उस निमित्त से दूर हो गए और दूसरे नम्बर का उपाय भी आपने काम में लिया तो आप उस क्रोध की आग में भस्म होने से बच जायेंगे। साधनाशील व्यक्ति को, शान्ति के पुजारी को, इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। जो इस ओर ध्यान रखकर साधना करता है, उसकी छोटी साधना भी बड़ी बलवती हो जाती है।

आपने पर्युषण पर्व के दिनों में, कल्पसूत्र में, ऐसा उदाहरण भी सुना होगा कि क्षुधा परीषह को सहन नहीं करने वाले, एक क्षुल्लक साधु ने, संवत्सरी के दिन भी उपवास नहीं किया और कहीं से लूखी खिचड़ी ले आया। उसे वह खिचड़ी दिखाने पर, अन्य साथियों से तिरस्कार भरे भावों में, उपालम्भ के शब्द सुनने पड़े और उसमें थूंक भी दिया गया। परन्तु उसने किसी पर क्रोध नहीं करते हुए

भोजन में घी समझकर उस खिचड़ी को खा लिया। पश्चात् उसने अपनी आत्मा का अवलोकन किया और गलितयों के लिए धिक्कारा। इस प्रकार आलोचना करते-करते ही उसे केवलज्ञान प्राप्त हो गया। वह असमाधि के बजाय, समाधि का उपाय सीख रखा था।

गाय की टक्कर और राजा की हंसी

मासखमण के पारणे को, गोचरी में घूमते हुए विश्वभूति के कृश और दुबले शरीर को देखकर राजा के मन में पूर्व वैरभाव जाग गया। न मालूम किसके कितने जन्म हैं और कौन कब, किसके प्रति, किसलिए कषाय बढ़ाता रहता है? उसका निर्णय साधारण आदमी के वश की बात नहीं है। विशाखभूति, मुनि विश्वभूति को देखकर, वैरभाव से जलने और उबलने लगा। इधर तो उसका रोष करना और उधर मुनि को, भीड़ से चौंक कर एक गाय ने टक्कर मार दी। गौ की टक्कर से मुनि बीच सड़क पर धराशायी हो गये। यह दृश्य देखकर राजा का दिल बाग-बाग हो गया- बांसों उछलने लगा। उसे उस समय जो आनन्द प्राप्त हुआ, वह पूर्व के प्राप्त सभी आनन्दों से बढ़कर था। नीतिवचन है कि-

गच्छतः स्खलनं क्वापि, भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः।।

चलते हुए कभी कोई आदमी असावधानी से ठोकर खाकर गिर जाता है, तो दुर्जन उसे देखकर हँसते हैं। परन्तु सज्जन पुरुष उसका समाधान करते- यथायोग्य सेवा शुश्रूषा करते हैं और उसके इस आकस्मिक पतन पर चिन्ता व्यक्त करते हुए संवेदना प्रगट करते हैं।

आज भी कदाचित् कोई आदमी प्रमादवश या अन्य किसी कारण से गिर पड़े, तो कुछ आदमी हँसेंगे और बोलेंगे कि हाँ, ठीक हुआ। आँख मींचकर चलने वालों को ऐसा ही मजा मिलता है। कुछ को यह हंसी अच्छी नहीं लगेगी और वे उस गिरने वाले को, दिलासा देते हुए कहेंगे कि भाईसाहब! आपने तो पूरा ध्यान रखा, मगर यहाँ की भूमि ही ऐसी है। खैर, आगे से संभलकर चलिए, और चोट पर पट्टी बंधवा लीजिए। इस तरह एक ही घटना पर, सज्जन और दुर्जन दोनों की दो मनःस्थितियाँ देखी जाती हैं।

राजा को वैरभाव तो था ही, परन्तु गाय ने मुनि को गिरा दिया, यह देखकर उन्हें जोरों की हँसी आ गई। जैसे कहा है-

"सहसा गौ की टक्कर से, मुनि भू गिर जाते हैं।
देख भूप खुश हो मुनिवर की, हँसी उड़ाते हैं।।"

गौ की टक्कर से मुनि गिरे तो कुछ आदमी विचार करने लगे कि अरे! गुरु महाराज को गाय ने पटक दिया। आओ इन्हें यहाँ से अलग करें।

क्रोध को सहना सरल नहीं

विशाखभूति ने जब झरोखे से गाय की टक्कर से गिरते हुए मुनि को देखा तो वह बोलने लगा- ओहो! ये तो अपने पौरुष के आगे किसी को कुछ समझते ही नहीं थे। कभी द्वारपालों से भी बोलते थे कि चाहूँ तो कपित्थ फल की तरह तुम्हारे सिर को भी धड़ से अलग कर दूँ। तो क्या यही इनकी जबां-मर्दी का हौसला है, जो एक साधारण सी गाय की टक्कर भी बर्दाश्त नहीं कर सके।

विशाखभूति ने जब विश्वभूति मुनि की, इस तरह हँसी उड़ाई, चुटकी ली और व्यंग्य वचन कहे तो मुनि को गाय की टक्कर से जो चोट नहीं पहुँची, उससे भी अधिक गहरी ठेस उन वचनों से लगी। अन्तर्मन में क्रोध भड़क उठा। साधना के पौरुष पर किए गए इस कुटिल प्रहार, सुप्तभावावेश को जगा दिया और वे क्रोध से भर उठे।

भगवान् महावीर ने कहा है कि दुर्वचन के प्रहार कान में पड़कर मन को दूषित करते हैं पर जो जितेन्द्रिय और शूर साधक धर्म समझ कर, उनको सहन करता है, वही पूज्य और उत्तम है। शास्त्र कहता है- क्रोध को गालिये, तर्जना को सहन कीजिए, जो कि मानव हृदय के लिए कांटे के समान है, शूल के तुल्य है। बाहर का कांटा सहना आसान है। परन्तु अन्दर के कांटे को सहना बड़ा कठिन है। लेकिन जो इन्हें सहन कर लेता है, वही श्रेष्ठ है। साधना की दो दशायें हैं, एक प्रमत्त और दूसरी अप्रमत्त। हम साधक लोग जब प्रमाद भाव में आ जाते हैं, तो हमारा ज्ञान हल्का हो जाता है। उस समय हमारे ज्ञान

की ज्योति मंद पड़ जाती है। ज्ञान यदि मन्द और मलिन हो गया तो उसकी शक्ति एवं तेजस्विता भी कम हो जाती है।

विश्वभूति क्रोध के वश में

विश्वभूति गिरने से जरा आर्तभाव में थे। उस समय अचानक यह आवाज कान में पड़ी और दिल में तीर की तरह चुभ गई। शास्त्र में ठीक ही कहा है कि- ''दुर्वचन के दुरुद्धर कांटे वैरानुबन्धी और अतिशय भयंकर होते हैं।'' उसने आँख उठाकर देखा तो विशाखभूति दिखाई पड़ा। मन में वैर जागृत हो गया। ओ हो! यह मेरा पीछा अभी भी नहीं छोड़ रहा है। संसार दशा में मुझे हैरान कर रहा था, तब तो मैंने संसार छोड़ा। राजभवन व प्रिय परिवार का परित्याग कर साधु बन गया। अब भी यह मेरा पीछा कर रहा है। अतः मुझे भी इसको इसका प्रतिफल बताना चाहिये। सहने और बर्दाश्त करने से बात आगे बढ़ी हुई है।

यद्यपि मुनि की दीर्घकालीन तपस्या बड़ी थी। परन्तु उस बड़ी तपस्या में आया हुआ, यह छोटा-सा रोष का भाव, मनोभर दूध में कांजी का काम कर गया। मुनि के मन में, यह कलुषित भाव आया कि मैं तपस्या से कमजोर भी हो गया हूँ, फिर भी तुमसे भिड़ सकता हूँ, मजा चखा सकता हूँ। शेर कमजोर भी हो जाये,तो भी सियार से कम तो नहीं होता।

मुनि ने मन ही मन कहा कि मुझको कमजोर समझकर क्यों हंस रहा है? मेरे बल को देख! ऐसा कह चट से गाय के सींग पकड़े और उसको ऊपर उठाकर घुमा दिया। देखने वाले चकित हो गये। सब कहने लगे- क्या पौरुष है इनका? शरीर तो ऐसा दीख रहा है कि हवा के झोंके से गिर जाये। परन्तु अभी भी इनमें इतनी ताकत है। मुनि ने भावावेश में ही कहा कि मत समझना कि मैं तपस्या कर रहा हूँ और दुर्बल हो गया हूँ। नहीं! नहीं!! अब भी मुझ में वही ताकत है। मैं तुम्हारे लिए काफी हूँ। परन्तु तपी हूँ, साधु हूँ। इस प्रकार तपस्वी मुनि क्रोधवश आत्मभाव भूल गये।

वैर का बदला वैर से नहीं

क्रोध में भान भूलकर न जाने मुनि क्या से क्या चिन्तन कर गये और बोल गये। उन्हें क्रोध ने इस तरह झकझोर दिया कि वे मुनि प्रकृति से बहुत दूर हट गये थे। जब थोड़ा भान आया तो उन्होंने सोचा- ''अरे! मैं तो मुनि हूँ। कोई कुछ भी कहे, पृथ्वी के समान मुझे सब कुछ सह लेना चाहिये। क्रोध से तो मेरी वर्षों संचित तपस्या और साधना भस्म हो जायेगी। क्या कभी आग से आग बुझती है?'' क्या वैर से वैर का बदला लिया जा सकता है? जाओ हमने तुमको क्षमा कर दिया। तुम मेरी कल्याण साधना में अन्तराय बने। अब मैं फिर से अपने साधना पथ का पथिक बनने जा रहा हूँ। यह कह कर वे वहाँ से चले गये और अपनी तप-साधना में पूर्ववत् लग गये। परन्तु लगे दोषों की शुद्धि नहीं की।

आप बहुमूल्य उज्ज्वल कपड़ा पहनते हो, तो उस पर धब्बा लग सकता है। यह सम्भव नहीं कि उस पर कभी गन्दा धब्बा लगे ही नहीं। धब्बा लगना उतना बुरा नहीं जितना कि उस धब्बे को दबाये रखना बुरा है। ऐसे ही साधक के संयमी जीवन पर दोष लगे ही नहीं, यह सम्भव नहीं। तपस्वी मुनि को निमित्त मिला, उत्तेजना आई और बोल गये। परन्तु उसकी आलोचना करके, पश्चात्ताप की आग में, कषाय के मैल को धो लेते तो भटकते नहीं, किन्तु वे धोना भूल गये।

विश्वभूति के व्यवहार से शिक्षा

विश्वभूति ने दीर्घकाल तक दीक्षा-पालन की। उनके जीवन में भटकने का मौका क्यों आया? उत्तर स्पष्ट है कि अन्त समय में उन्होंने अपने अशुभ भावों की आलोचना किये बिना ही कालधर्म प्राप्त किया।

भगवान महावीर ने कहा- भव्यों! संसार-चक्कर में घूमते हुए मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि तुम अनशन करो या नहीं करो, परन्तु क्रोध, मान, माया और लोभ को जरूर मारो। उनको मारने के लिए तप का सही उपयोग करो। साधना में अपने आपको इस ओर बढ़ाओगे तो भव-भव के चक्कर से मुक्त हो जाओगे तथा अनन्त-अनन्त काल के लिए आनन्द और कल्याण की प्राप्ति हो सकेगी।

-जिनवाणी, मार्च 1986 से गृहीत

सामायिक : कषाय-विजय की साधना

व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.

जीवन में सभी लक्ष्यों का एक ही लक्ष्य है 'समता'। समता की प्राप्ति में सामायिक-साधना सहायक है। जिनशासन में वीतरागियों के द्वारा वीतराग धर्म की व्याख्या की गई है। वीतराग धर्म यानी रागद्वेष या कषायों को जीतने की कला सिखाने वाला धर्म। जिन पवित्र आत्माओं ने रागद्वेष को पूर्ण जीत लिया है, वे जिनेश्वर हैं, जो प्रयासरत हैं वे निर्ग्रंथ गुरु हैं तथा जो जीतने की विधि समझाता है, वह धर्म है। जिनशासन में तीर्थंकर देवों की विशेष महिमा गाई गयी है तथा उन्हें विशिष्ट गौरवमय स्थान प्रदान किया गया है। तीर्थंकर भी जब तक सामायिक-चारित्र अंगीकार नहीं करते तब तक वन्दनीय नहीं होते। चाहे केवलज्ञान प्रकट नहीं हुआ हो, तीर्थ की स्थापना नहीं हुई हो, पर सामायिक-चारित्र अंगीकार कर लिया तो वे वन्दनीय, पूजनीय होते हैं।

सामायिक में क्रोध, मान, माया एवं लोभ स्वरूप कषायों पर विजय पायी जाती है। स्थानांग सूत्र में क्रोध एवं मान को द्वेष के अन्तर्गत तथा माया और लोभ को राग के अन्तर्गत लिया गया है। छद्मस्थ काल में हमारे आराध्य प्रभु रागद्वेष को पराजित करने का प्रयास सामायिक रूपी शस्त्र से करते हैं। वे सामायिक चारित्र में असंयम का त्याग कर संयम को ग्रहण करते हैं। असंयम के त्याग में क्रोधादि विकारों का त्याग भी सहज होता है। सामायिक अर्थात् समता। विषमता के विपरीत है समता। हर हाल में समता। लाभ-हानि, सुख-दुःख, अनुकूलता-प्रतिकूलता में समता रखना रागद्वेष अथवा कषाय को जीतने का उपाय है। अनुयोगद्वार सूत्र में सामायिक का नाम, स्थापना, द्रव्य एवं भाव इन चार निक्षेपों से वर्णन प्राप्त होता है। वहाँ भाव सामायिक का स्वरूप बताया गया है कि जिसकी आत्मा संयम, नियम और तप में लीन है उसी को सामायिक होती है तथा जो सर्वभूतों, त्रसों एवं समस्त स्थावर आदि प्राणियों के प्रति समभाव धारण करता है, उसी को सामायिक होती है। ऐसा केवली प्रभु का वचन है। ऐसी उच्च साधनारूप सामायिक चारों कषायों का शमन करती है। ऐसा भी कहा जा सकता है कि सामायिक की साधना कषाय विजय के लिए ही की जाती है।

अल्पकषायी ही सामायिक का अधिकारी

कप की गरम चाय को ठण्डा करने के लिए जिस प्रकार प्लेट में डाला जाता है, उसी प्रकार गरम दिमाग को ठण्डा करने के लिए मन को समता रूपी प्याली में डालने की आवश्यकता है। समता की साधना हेतु सामायिक दो प्रकार से की जाती है- दो करण एवं तीन योग से तथा तीन करण और तीन योग से। गृहस्थ साधक दो करण एवं तीन योग से सामायिक करता है तथा सर्व सावद्य निवृत्ति का साधक श्रमण तीन करण एवं तीन योग से सामायिक करता है। इसमें सभी प्रकार की पाप प्रवृत्ति का मन, वचन और काया के स्तर पर त्याग किया जाता है। जिसमें कषाय का त्याग भी सम्मिलित रहता है। गृहस्थ साधक देशविरति गुणस्थान में रहकर अनन्तानुबंधी चतुष्क एवं अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क इन आठ कषायों का त्याग करता है तथा श्रमण एवं श्रमणी प्रत्याख्यानावरण सहित 12 कषायों के त्यागी होते हैं।

*आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 1-2 अक्टूबर 2016 को निमाज, जिला-पाली में आयोजित 'जैन आगम साहित्य में कषाय विषयक चिन्तन' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत प्रवचन।

सामायिक से कषाय मंदता

सामायिक से कषाय में मंदता आती है। सामायिक साधना करने वाला आयुष्य कर्म को छोड़कर सात कर्मों की प्रकृतियों के गाढबंधन को शिथिल करता है। कर्म की दीर्घ स्थिति को अल्प स्थिति, तीव्र अनुभाग को मंद अनुभाग, बहु प्रदेशों को अल्प प्रदेश वाला करता है। इस प्रक्रिया में कषाय के सत्तागत कर्म दलिकों की प्रकृति, स्थिति अनुभाग एवं प्रदेश बंध में मंदता आती है तथा सामायिक काल में बध्यमान कर्मों की प्रकृति आदि अल्प ही बंधते हैं। अतः इससे द्विपक्षीय लाभ प्राप्त होता है। जो आग बरसाए उसे चन्द्रमा नहीं कहते, जिसका सेवन मृत्यु लाए उसे अमृत नहीं कहते। जो रोग वृद्धि कराए उसे औषध नहीं कहते, जो कषाय वृद्धि करे उसे समता नहीं कहते।

द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव की शुद्धि

द्रव्य, क्षेत्र एवं काल की शुद्धि भाव शुद्धि की जनक है। इनकी अशुद्धि भाव-अशुद्धि का निमित्त है। उदाहरणार्थ ब्रह्मचर्य की शुद्धि के लिए प्रभु ने नववाड़ के द्वारा द्रव्य शुद्धि की रूपरेखा फरमाई है, जिससे भावों में उपासना का वास हो। सामायिक में समस्त सावद्य क्रियाओं का, सांसारिक भावों का एवं सांसारिक कार्यों का त्याग होता है। क्षेत्र शुद्धि भी सामायिक कर्ता के विवेक पर निर्भर है। सामायिक का काल साधक के लिए शुद्ध ही होता है। अतः इन तीनों की शुद्धि होने पर भाव शुद्धि तो नियमेन प्राप्त होती है। कषाय निवृत्ति को ही जैनागम में भाव विशुद्धि कहा है। अतः सामायिक में द्रव्य, क्षेत्र एवं काल के शुद्ध होने से कषाय मंदता रूप भाव विशुद्धि का विकास माना जाता है।

सामायिक के पाठों से भी कषाय विजय

सामायिक के पाठों से भी कषाय विजय का मार्ग प्रशस्त होता है। आवश्यक सूत्र में सामायिक के पाठों का निरूपण हुआ है। आगम के उपदेष्टा वीतराग भगवान हैं तथा इन्हें सूत्र रूप में ग्रथन करने वाले गणधर भगवन्त हैं। वीतरागियों की वाणी वीतरागता को बढ़ाने वाली है। सामायिक के प्रत्येक पाठ सकषाय से अकषायी होने की प्रेरणा करते हैं। हर पाठ भावों को शुद्ध बनाकर कषाय को मंद करता है। फिर भी सामायिक के पाठों में मुख्यतः 'नवकार', 'तिक्खुत्तो', 'लोगस्स' एवं 'नमोत्थुणं' के पाठ विनय एवं भक्ति से सम्पन्न होने के कारण इनसे मान कषाय पर विजय प्राप्त होती है। 'इच्छाकारेणं' का पाठ मैत्री को बढ़ाने वाला है, अतः क्रोध विजय में साधन है। 'तस्स उत्तरी' का पाठ आत्म पुरुषार्थ के लक्ष्य को प्रदर्शित करता है। वीर्य का गोपन माया है। अतः 'तस्स उत्तरी' का पाठ माया विजय की साधना से सम्बद्ध है। 'करेमि भंते' का पाठ सावद्य योगों का त्याग किए जाने से आरम्भ एवं परिग्रह पर विजय दिलाता है। परिग्रह में आसक्त व्यक्ति आरम्भ भी अधिक करता है। आरम्भ का त्यागी परिग्रह का त्यागी होता है। अतः करेमि भंते का पाठ लोभ विजय की साधना का पाठ है। इस प्रकार सामायिक सूत्र के सभी पाठ कषाय विजय की साधना का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

अन्य प्रकार से समझें तो 'इच्छाकारेणं' का पाठ ईरेजर (मिटाने वाला रबड़) है जो ज्ञात-अज्ञात क्रूरता को मिटाता है। 'तस्स उत्तरी' एनेस्थीसिया है। साधक स्वयं ही इस कायोत्सर्ग के पाठ से ममत्वरूपी ट्यूमर का ऑपरेशन करता है। 'लोगस्स' का पाठ एक दिव्य ग्लूकोज है, जिससे दिव्य एनर्जी प्राप्त होती है। कायोत्सर्ग शुद्धि का पाठ चेकिंग मशीन है, जो कमियों को मिटाता है। करेमि भंते अलौकिक कक्ष है। अलौकिकता का प्रकटीकरण होने से खतरों की आशंकाएँ निर्मूल हो जाती हैं। 'नमोत्थुणं' का पाठ शक्तिवर्धक पेस्ट है, जिससे शक्ति बढ़ती है। 'एयस्स नवमस्स' का पाठ स्विच है, जिससे द्रव्य सामायिक रूपी बल्ब ऑफ हो जाता है।

सामायिक में करणीय साधनाएँ कषाय विजय में सहकारी

सामायिक दो घड़ी की साधना है। इसमें कुछ साधक स्वाध्याय, जाप, माला, आनुपूर्वी, भजन द्वारा भक्ति करते हैं। भक्ति से मान कषाय मंद होता है। कुछ साधक वाचना आदि स्वाध्याय के भेदों की साधना

करते हैं, जिससे जीव समता में आता है तथा क्रोध कषाय को जीतने में सफल होता है। सामायिक का आराधक प्रतिक्रमण, आलोचना व स्वनिरीक्षण आदि करता है। वह माया विजय की साधना में सफल होता है। ध्यान, कायोत्सर्ग आदि की साधना लोभ विजय में सहायक है। इसमें देहासक्ति, ममता, मूर्च्छा आदि का त्याग लोभ विजय को आसान कर देता है। यह कथन मुख्यता के आधार पर किया गया है। वैसे तो स्वाध्याय हो या ध्यान, प्रतिक्रमण हो या भक्ति, सभी कषायों को मंद, शिथिल व क्षय करते हैं।

दशवैकालिक सूत्र के आठवें अध्ययन में कहा गया है-

''उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
मायं चऽज्जव भावेणं, लोहं संतोसओ जिणे।।

-गाथा, 39

सामायिक धर्माराधना है। क्षमा, मार्दव, आर्जव, आदि दस प्रकार के धर्म हैं। इन धर्मों में कषाय विजय के उपाय रूप गुणों का समावेश हो जाता है। अतः सामायिक कषाय विजय की साधना है।

सामायिक और कषाय-विजय

सामायिक एवं कषाय विजय के सम्बन्ध को हम दूसरी अपेक्षा से भी समझ सकते हैं। सामायिक को समता का पर्याय कहा जा सकता है। समता कषाय विजय पर ही प्रतिष्ठित होती है। अतः सामायिक अपने-आप में आधार आधेय की अपेक्षा कषाय-विजय ही है। कषाय की क्षयोपशमता आदि को ही आगमकार सामायिक कहते हैं। जैसे- वृक्ष से फल प्राप्त होते हैं वैसे सामायिक से कषाय विजय रूप फल की प्राप्ति होती है। कषाय विजय के लक्ष्य से सामायिक की जाती है। अतः सामायिक का लक्ष्य ही कषाय-विजय है। कषाय से निवृत्ति ही सामायिक है। समता एवं वीतरागता का प्रगाढ़ सम्बन्ध है। सामायिक की साधना वीतरागता को पुकार कर प्रेम के समीप बुलाती है।

महामहिम आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने अजमेर में फरमाया था कि वीतराग साधना पद्धति में परिणाम की कामना न करने पर भी परिणाम प्राप्त होता ही है। जैसे पानी पीने से प्यास बुझती ही है। प्यास बुझने हेतु प्रार्थना की आवश्यकता नहीं होती। आहार करने पर भूख मिटती ही है, प्रार्थना नहीं करनी पड़ती कि भूख मिटे। वैसे ही सामायिक से कषाय विजय हो यह प्रार्थना नहीं करनी पड़ती। सामायिक से कषाय पतला पड़ता ही है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि मंद कषायी आत्मा ही सामायिक करती है तथा सामायिक से कषाय मंद पड़ते ही हैं। चतुःस्थान से कषाय मंद होता हुआ त्रिस्थान, द्विस्थान, एकस्थान होता हुआ समाधि के समीप आ ही जाता है।

साधक जब वीतरागवाणी से जुड़ता है तब उसे एहसास होता है कि मेरे दुःख का कारण संसार की परिस्थितियाँ नहीं, अपितु मेरा कषाय भाव है। आगम के वाक्य उसकी अनुभूति बन जाते हैं। 'कसाया अग्गिणो वुत्ता' उसे कषाय अग्नि की भाँति प्रतीत होते हैं। उसे अनुभव होता है कि कषाय से उसका अन्तःकरण जल रहा है। आत्मा मलिन बनी हुई है व शांति का पिपासु कषाय का मार्ग आगम में खोजता है। जैसे अहिंसा प्रथम महाव्रत भी है एवं अणुव्रत भी। वैसे ही श्रमण एवं श्रावक के लिए भी कषाय मुक्ति का उपाय निर्दोष सामायिक है। यह सामायिक साधना जैसे-जैसे सधती जाती है, वैसे-वैसे कषाय मुक्त दशा फलती जाती है। सिद्धि की रौनक चढ़ती जाती है, साधक श्रेणियाँ चढ़ता जाता है और चौदह राजू के इस लोक के अग्र भाग में पूर्ण निष्कषाय बनकर सिद्ध स्वरूप का गौरव प्राप्त करता है।

भूख 12 रोटी की हो, किन्तु थाली में मात्र दो ही रोटी हो तब भी व्यक्ति उन्हें खा लेता है, भूखा नहीं रहता। उधारी के पाँच लाख हो, उसमें से मात्र पाँच हजार रुपये भी आये तो समझदार व्यक्ति उसे ले ही लेता है। इसी प्रकार भले ही अभी पंचम आरा हो, मोक्ष में जाना सम्भव नहीं हो, तो भी व्यक्ति आराधक तो बन ही सकता है।

कषाय-विजय

श्री पी. शिखरमल सुराणा

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा द्वारा आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 1-2 अक्टूबर 2016 को निमाज, जिला-पाली में आयोजित 'जैन आगम साहित्य में कषाय विषयक चिन्तन' शीर्षकवती राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में 01 अक्टूबर 2016 को प्रदत्त अध्यक्षीय उद्बोधन।-सम्पादक

1. आचार्य हस्ती के शब्दों में-
   काल अनन्त रुला भव वन में,
   बंधा मोह के पाश।
   काम, क्रोध, मद, लोभ भाव से
   बना जगत का दास।।
2. भगवान किसको मिलते हैं?
   डसे न जिसको क्रोध का काला,
   पिये नहीं जो मद का प्याला,
   जिस पर नहीं माया का जाला,
   जले न जिसके लोभ की ज्वाला।
   शांत-धीर हो, नम्र सरल हो, निलोर्भी गुणवान,
   उसी को मिलते हैं भगवान।।
3. श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने बड़े सुन्दर ढंग से क्रोध के स्वरूप, कारण और निवारण पर प्रकाश डाला।
4. मान कषाय परिवार, समाज व संघ में झगड़ा कराता है। इसके कारण कई दम्पतियों का जीवन खण्ड-खण्ड हो गया है। 'मान' प्रेम और वात्सल्य की धारा तोड़ देता है। हमारे संघ का लक्ष्य भ्रातृत्व भावना एवं पारस्परिक प्रेम भावना का विकास है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु हमें अपने अहंकार को नम्रता पूर्वक जीतना है। आचरण में जो छल छद्म है, उसका परिहार कर जीवन में सरलता लानी है। जो सरल एवं शुद्ध हृदय वाला होता है, उसमें ही धर्म ठहरता है। हम सब सरल-चित्त बनें।
5. लोभ कषाय पर अभी आपने विदुषी बहिन डॉ. सुषमाजी सिंघवी के रोचक विचार सुने तथा मुख्य अतिथि जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ के कुलपति प्रो. बच्छराजजी दुगड़ का विद्वत्तापूर्ण वक्तव्य सुना।
6. चेतन चतुर कषाय उपशम कीजिए रे।
   शुद्ध समता रस रुच-रुच पीजिये रे।।(आचार्य हस्ती)
7. बंधुओं! जितने जीव मोक्ष गयें हैं, जा रहे हैं, जाएंगे, वे सब सामायिक के प्रभाव से ही गये थे, जा रहे हैं, जायेंगे।
8. भगवती सूत्र, शतक 1, उद्देशक 9 में कहा गया है- आत्मा ही सामायिक है, आत्मा ही सामायिक का प्रयोजन है। समता से ही आत्मगुणों का विकास होता है। इस समता गुण को रोकने वाले, नष्ट करने वाले दोष को आगम में कषाय की संज्ञा दी गई।
9. उत्तराध्ययन के 23 वें अध्ययन में कषाय को अग्नि कहा गया। जो आत्म गुणों को जलाकर शान्ति, आनन्द, अन्दर के रस को खाक कर देता है, उसे कषाय कहते हैं।
10. 18 पापों में 6 पाप तो सीधे कषाय हैं- क्रोध, मान, माया, लोभ, राग एवं द्वेष। और शेष पाप भी कषाय से अनुबंधित हैं।
11. कषाय का वमन होने पर पाप छूट जाते हैं। वीर-स्तुति की 26 वीं गाथा कह रही है- कषाय का

वमन करने पर भगवान ने न पाप किया न करवाया।

12. आस्रव में भी चार कषाय आस्रव हैं। बंध के मुख्य कारण कषाय और योग हैं। कषाय पाप है, कषाय आस्रव है; कषाय बंध है।

13. साधु-साध्वियों की बात छोड़ो, श्रावक के लिए पहला बोल है-''श्रावकजी नवतत्त्व के जानकार होवें।'' आचरण के बिना कषाय की जानकारी सिर्फ माथे का बोझ है।

14. तीव्र कषाय छूटने पर ही जीव सम्यग्दृष्टि बन सकता है।

15. हम सभी वीतराग पथ के साधक हैं। हमारा प्रबल पुरुषार्थ होना चाहिए कि हम इन कषायों का समूल नाश करने के लिए तत्पर हो जाएं।

16. दशवैकालिक के आठवें अध्ययन में इन कषायों को जीतने के साधनों की सुन्दर व्याख्या की गई है।

17. क्रोध, मान, माया, लोभ सब पापों के मूल हैं। अपना हित चाहने वाले को चारों का त्याग कर देना चाहिए।

18. क्षमा से क्रोध भाव जीते, मृदुता से जीते मान सदा।
ऋजुता से माया को जीते, संतोष भाव से लोभ सदा।।

19. शुद्ध सामायिक करते रहने से समभाव की वृद्धि होती है। समभाव आने से कषायों पर नियंत्रण किया जा सकता है, कषायों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। समभाव आने पर सब जीवों से प्यार होता है- किसी जीव के प्रति क्रोध, मान, माया, लोभ नहीं कर सकते हैं।

''करना सभी को प्यार है, यही धर्म का सार है,
गजमुनि का आधार है, सुख शांति का द्वार है।
कर लो भैया सामायिक तो निश्चय बेड़ा पार है।।

20. महात्मा गाँधी के आध्यात्मिक गुरु श्रीमद् राजचन्द्र ने निम्नोक्त पदों में साफ-साफ कहा है कि-

(क) जो व्यक्ति कषायों को उपशान्त नहीं कर सकता, यह उसका दुर्भाग्य है।

(ख) कषायों को उपशान्त किये बिना कोई व्यक्ति मोक्ष की पहली सीढ़ी सम्यक्त्व को भी नहीं पाता।

(ग) कषायों को उपशान्त करने वाला सम्यक्त्व को प्राप्त करता है तथा कषायों को शांत कर मोक्ष तक पहुँच सकता है। वीतराग पद तक पा सकता है।

21. नहीं कषाय उपशांतता, नहीं अन्तर वैराग्य।
सरलपणुं न मध्यस्थता, अे मतार्थी दुर्भाग्य।।

22. ''कषाय नी उपशांतता, मात्र मोक्ष अभिलाष।
भवे खेद, प्राणी दया, त्यां आत्मार्थ निवास।।''
''दशा न अेवी ज्यां सुधी, जीव लहे नहिं जोग।
मोक्ष मार्ग पामे नहीं, मटे न अन्तर रोग।।
''आवे ज्यां अेवी दशा, सद्गुरु बोध सुहाय।
ते बोधे सुविचारणा, त्यां प्रगटे सुखदाय।''
''ज्यां प्रगटे सुविचारणा, त्यां प्रगटे निजज्ञान।
जे ज्ञाने क्षय मोह थई, पामे पद निर्वाण।''

23. ''कषाय नी उपशांतता, मात्र मोक्ष अभिलाष।
भवे खेद, अंतर दया, ते कहिए जिज्ञास।।''
''ते जिज्ञासु जीव ने थाये सद्गुरु बोध।
तो पामे समकित ने, वर्ते अंतर शोध।।''
''मत दर्शन आग्रह तजी, वर्ते सद्गुरु लक्ष।
लहे शुद्ध समकित ते, जेमां भेद न पक्ष।।''
''वर्ते निज स्वभावनो, अनुभव लक्ष प्रतीत।
वृत्ति वहे निजभाव मां, परमार्थे समकित।।''
''वर्धमान समकित थई, टाले मिथ्याभास।
उदय थाय चारित्र नो, वीतराग पद वास।।''

24. जैन धर्म का मूल लक्ष्य है- वीतरागता। सारी साधना जैन धर्म में वीतरागता को केन्द्र में रखकर की जाती है। वीतरागता तभी संभव है जब राग-द्वेष से रहित हुआ जाए अथवा दूसरे शब्दों में कहें तो कषाय से रहित होने पर ही वीतरागता संभव है।

-राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

ध्यान से कषाय विजय

श्री रणजीत सिंह कूमट

कषाय न केवल हमारे जीवन को कलुषित करता है, अपितु यह हमारे सब दु:खों की जड़ है और मुक्ति की राह का सबसे बड़ा रोड़ा है। कषाय से मुक्ति के लिये किसी ने सही कहा है "कषायमुक्ति: किल मुक्तिरेव" अर्थात् कषाय से मुक्ति ही वास्तविक मुक्ति है। कषाय क्या है, कैसे कर्म बंधन का हेतु है और कैसे इस पर विजय पाई जा सकती है तथा इसमें ध्यान कैसे सहायक है ? इस लेख में इन प्रश्नों पर विचार किया जायेगा।

कषाय और उसका प्रभाव

जैन आगम में कषाय चार प्रकार के बताये हैं :- 1. क्रोध 2. मान 3. माया 4. लोभ। ये चारों कषाय हमारे जीवन को कलुषित करते हैं और जीवन के मूल गुणों का नाश करते हैं। दशवैकालिक सूत्र में इनसे क्या हानि होती है निम्न प्रकार बताया है-

कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो,
माया मित्ताणि नासेइ, लोहो सव्व विणासणो।।

दशवैकालिक सूत्र अध्याय 8 गाथा 38

अर्थ- क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय को समाप्त करता है, माया मित्रता का नाश करती है और लोभ सर्वनाश (सर्व गुणों का नाश) करता है।

जीवन के मूल गुणों यथा प्रेम, विनय, सरलता, सौम्यता आदि सभी गुणों का नाश कषाय कर देता है और जीवन नीरस व कष्टमय हो जाता है। क्रोध से मित्र, रिश्तेदार, जानकार सब से प्रेम के स्थान पर वैर भाव आ जाता है और तब सब ओर शत्रु ही शत्रु दिखाई देने लगते हैं। क्रोध से उच्च रक्तचाप और मधुमेह जैसी जानलेवा बीमारियाँ घर कर लेती हैं तो स्वास्थ्य खराब होने लगता है। भोजन पर तरह तरह की रोक लग जाती है और डॉक्टर व दवाइयों का खर्चा बढ़ने लगता है। यह सब दु:खी जीवन के लक्षण हैं। इसी प्रकार लोभ से माया जाल फैलाने और कपट करने का धंधा शुरू होता है और अपने प्रिय जन से भी धोखाधड़ी करने से नहीं चूकते हैं। रिश्ते सब धन की तराजू में तोले जाते हैं, जीवन से प्रेम भाव तिरोहित हो जाता है। जिस जीवन में प्रेम का रस न हो वह नीरस जीवन नरक समान बन जाता है। लोभ के साथ कपट और धोखाधड़ी के अलावा अन्य दुर्गुण भी जीवन में आ जाते हैं, जो जीवन को दु:खी और कष्टप्रद बना देते हैं। लोभी व्यक्ति संचित धन का आनन्द भी नहीं ले सकता है, क्योंकि आनन्द उठाने में पैसा खर्च होता है और वह लोभी व्यक्ति से हो नहीं सकता।

उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन में प्रश्न पूछे गये कि क्रोध, मान, माया और लोभ पर विजय से जीव क्या प्राप्त करता है अर्थात् क्या लाभ होता है तो उत्तर दिया गया-"क्रोध-विजय से जीव शांति को प्राप्त होता है, मान-विजय से जीव मृदुता को प्राप्त होता है, माया-विजय से जीव ऋजुता को प्राप्त होता है तथा लोभ-विजय से जीव संतोषभाव को प्राप्त होता है। इस विजय से क्रोधवेदनीय, मानवेदनीय, मायावेदनीय और लोभवेदनीय कर्म का बंध नहीं करता और पूर्व बद्ध कर्मों की निर्जरा होती है"। (उत्तराध्ययन सूत्र, अध्याय 29, श्लोक 68 से 71)

शांति, मृदुता, ऋजुता और संतोष जीवन के उच्चस्थ गुण हैं, जो जीवन को आनन्दमय और सरस

*आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 1-2 अक्टूबर 2016 को निमाज, जिला-पाली में आयोजित 'जैन आगम-साहित्य में कषाय विषयक चिन्तन' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी हेतु प्रेषित आलेख।

बनाते हैं। मुक्ति आखिर है क्या? दु:ख से मुक्ति ही मुक्ति है और जीवन में कषाय हैं तो दु:ख से मुक्ति असंभव है। यदि कषाय जीव में है तो दु:ख से मुक्ति असंभव है। यदि जीवन में आनन्द और मुक्ति चाहिये तो कषाय से मुक्ति ही एक मात्र रास्ता है। उपर्युक्त सूत्र में तीन बातें कही गई हैं-

1. कषाय विजय से गुण (शांति, मृदुता, ऋजुता, संतोष) की प्राप्ति होती है।
2. कषाय विजय से जीव नये कर्म का बंध नहीं करता है।
3. वह पूर्व बद्ध कर्मों की निर्जरा करता है।

कर्म बंध और कषाय की कड़ी को समझना अत्यन्त आवश्यक है। बंध चार प्रकार का होता है- प्रकृति बंध, स्थिति बंध, अनुभाग बंध और प्रदेश बंध। मन, वचन और काया (योग) की प्रवृत्ति से कर्म का आगमन (आस्रव) होता है और वह प्रकृति बंध कहलाता है, परन्तु योग की प्रवृत्ति के साथ कौनसे कषाय कितनी तीव्रता से कार्य कर रहे हैं वे ही निर्धारित करेंगे कि कर्म की स्थिति कितने काल तक रहेगी और क्या अनुभाग (रस या तीव्रता) रहेगा। इस प्रकार स्थिति और अनुभाग बंध कषाय पर निर्भर करता है। यदि क्रिया के साथ कषाय का लेश मात्र भी पुट नहीं है (जैसा कि सयोगी केवली की स्थिति में होता है) तो कर्म का प्रकृति बंध तो होगा, परन्तु स्थिति और अनुभाग बंध नहीं होगा। कर्म का आस्रव होगा और तत्काल निर्जरित भी हो जायेगा।

आस्रव और बंध के पांच हेतु बताये हैं- मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग। यदि गंभीरता से विचार करते हैं तो मिथ्यात्व, अविरति तथा प्रमाद की सत्ता तो कषाय के कारण ही मानी गई है। जैन कर्म सिद्धान्त की मान्यता है कि जब तक अनंतानुबंधी कषाय अर्थात् तीव्रतम कषाय का उदय रहता है तभी तक मिथ्यात्व रहता है। मिथ्यात्व से ऊपर उठने के लिए अनंतानुबंधी कषायों का क्षय या उपशम आवश्यक है। इसी प्रकार अविरति और प्रमाद भी कषाय आधारित हैं। अन्य शब्दों में आस्रव के पांच हेतुओं का मूल हेतु तो कषाय ही है। कषाय सब बंधनों के हेतु की जड़ है। "इस प्रकार बंधन के पांच हेतुओं में मूल हेतु तो कषाय ही है। यदि बंधन से मुक्त होना है तो कषायों से मुक्त होना होगा। जैन परम्परा की यह स्पष्ट मान्यता रही है कि कर्म बंध तभी तक संभव है जब तक कषायों की सत्ता रही हुई है।"

कषाय से मुक्ति ही जीवन को मुक्त व आनन्दमय बना सकती है तो प्रश्न उठता है कि हमारे जीवन में कषाय कैसे आये और इनका जनक कौन है? कषाय का आधार है- मोह और तृष्णा। इनसे उत्पन्न होते हैं- राग और द्वेष। जीवन में हम हर वस्तु और परिस्थिति का चुनाव करते हैं। जो मनोज्ञ वस्तु या परिस्थिति हो तो उसको चाहते हैं अर्थात् मोह करते हैं और उसको प्राप्त करने व संग्रह करने का प्रयास करते हैं और यह तृष्णा कभी समाप्त नहीं होती। जिन वस्तुओं व परिस्थितियों को नहीं चाहते, उनसे घृणा करते हैं अर्थात् द्वेष करते हैं और उनको हटाने व दूर रखने का प्रयास करते हैं। यह चाहने और न चाहने के चक्कर में ही हम सारा जीवन बिता देते हैं। जो चीज चाहिए उसके प्रति लालायित होकर प्राप्त करने का भरसक प्रयास करते हैं और कोई उसमें बाधा बने तो उसके प्रति क्रोध करते हैं। पाने के लिये कपट भी कर लेते हैं। यों तृष्णा पूरी करने के लिए लोभ, क्रोध और माया कषाय काम करते हैं। चाही गई वस्तु का संग्रह अन्य शब्दों में धन, जन आदि का संग्रह मान या अहम् को पुष्ट करता है और जैसे-जैसे अहम् को जरा भी ठेस लगे तो क्रोध का बवाल फूट पड़ता है। अहम् की पुष्टि के लिए ही संग्रह किया जाता है और कषाय ही संग्रह के साधन बनते हैं और कषाय से बंधन और दु:ख का प्रारम्भ होता है। कषायों से मुक्ति के लिए मोह से मुक्ति पानी होगी अर्थात चाहने और न चाहने का चुनाव करने की आदत को बदलना होगा। जब तक जीवन में चाह और अचाह बने हैं तब तक मोह और राग-द्वेष से मुक्ति नहीं हो सकती और इसके बिना

कषाय से मुक्ति असंभव है।

दुःख की उत्पत्ति

उत्तराध्ययन सूत्र के अध्ययन 32 में दुःख की परम्परागत उत्पत्ति का वर्णन करते हुए कहा है :-

जहा व अण्डप्पभवा बलागा,
अण्डं बलागप्पभवं जहा य।
एमेव मोहाययणं खु तण्हा,
मोहं य तण्हाययणं वयन्ति।।
रागो व दोसो वि य कम्मबीयं,
कम्मं च मोहप्पभवं वयन्ति।
कम्मं च जाई-मरणस्स मूलं,
दुक्खं च जाई-मरणं वयन्ति।।
दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो,
मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो,
लोहो हओ जस्स न किंचणाइं।।

उत्तराध्ययन सूत्र अध्याय 32, गाथा 6, 7, व 8

अर्थ- जिस प्रकार मुर्गी अण्डे से पैदा होती है और अण्डा मुर्गी से उत्पन्न होता है, उसी प्रकार मोह का आयतन (जन्म स्थान) तृष्णा है और तृष्णा का जन्म स्थान मोह है।

कर्म के बीज राग और द्वेष हैं। कर्म उत्पन्न होता है मोह से। कर्म ही जन्म-मरण के मूल हैं और जन्म-मरण ही (वास्तव) में दुःख है।

जिसके मोह नहीं है, उसने दुःख को नष्ट कर दिया। जिसने मोह को मिटा दिया है, उसके तृष्णा नहीं है। जिसने तृष्णा का नाश कर दिया, उसके लोभ नहीं है और जिसने लोभ को समाप्त कर दिया उसके पास कुछ भी परिग्रह नहीं है अर्थात् अकिंचन है।

उपर्युक्त श्लोकों में मोह, तृष्णा, कषाय और जन्म-मरण (जो दुःख का मूल कारण है) की कड़ी को स्पष्ट किया है। जब तक मोह और तृष्णा है, जन्म-मरण का चक्कर चलता रहेगा और दुःख से मुक्ति नहीं मिलेगी। इसी बात को भगवान बुद्ध ने पतिच्चसमुपदा (Doctrine of Interdependence) से समझाया है कि जिस प्रकार अविद्या अथवा मोह से संस्कार बनते हैं और उसी से जन्म होता है, इन्द्रियां मिलती हैं और उन पर होने वाले स्पर्श से वेदना मिलती है और उस वेदना से तृष्णा जागती है। जो उपादान अर्थात् चिपकाव (attachment) पैदा करता है और उसी से जन्म मरण का चक्र चलता है। इस तरह मोह से तृष्णा और तृष्णा से चिपकाव और उसी से जन्म मरण का चक्र चलता है। इस कड़ी को निम्न प्रकार से समझाया जा सकता है:-

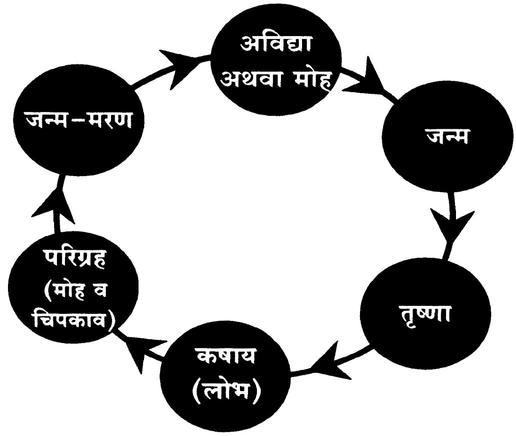

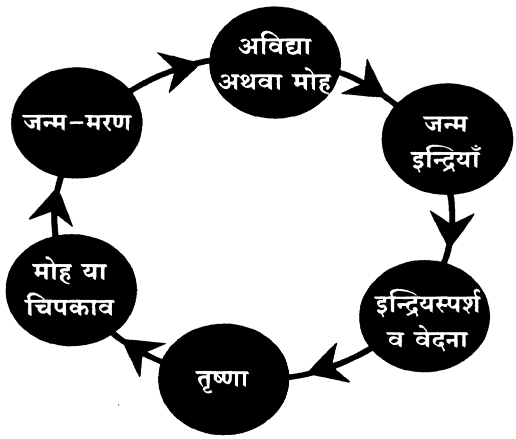

उत्तराध्ययन सूत्र पतिच्चसमुपदा : बुद्ध का सिद्धान्त

दोनों सिद्धांत एक ही बात कह रहे हैं, परन्तु बुद्ध सिद्धान्त ने जन्म और तृष्णा के बीच इन्द्रियों के

स्पर्श से हो रही वेदना को कड़ी में और जोड़ा है और उनके अनुसार वेदना से जागृत तृष्णा पर यदि ध्यान दिया जाये तो तृष्णा से हो रहे जन्म-मरण के चक्र को तोड़ा जा सकता है। इसका विस्तृत विश्लेषण ध्यान की चर्चा करते हुए करेंगे। मोटे रूप से दोनों सिद्धांतों में तृष्णा और उससे उत्पन्न चिपकाव व कषाय ही दु:ख का मूल कारण है। यदि तृष्णा को समाप्त कर दिया जाय तो कषाय भी समाप्त हो जायेंगे और तब जन्म-मरण से मुक्त हो पूर्णत: दु:ख से मुक्त हो सकते हैं।

राग-द्वेष एवं कषाय मुक्ति के उपाय

उत्तराध्ययन सूत्र के 32वें अध्याय में राग-द्वेष के उन्मूलन के उपाय बताये गए हैं। प्रथम उपाय- भोजन व रसों के अत्यधिक सेवन का त्याग, क्योंकि रस उन्माद अथवा काम को बढ़ाने वाले होते हैं। दूसरा उपाय- अब्रह्मचर्य का त्याग। तीसरा उपाय- जिसका विस्तार से वर्णन किया है वह है मनोज्ञ रूप, गंध, शब्द, रस और भाव आदि में राग तथा अमनोज्ञ रूप, गंध, शब्द, रस और भाव आदि से द्वेष न करना। इन्द्रियों के विषय हैं- रूप, गंध, शब्द, रस और मन का विषय है- भाव। इन विषयों में हम चुनाव करते रहते हैं। अच्छा या मनोज्ञ हो तो उसके प्रति तृष्णा जगाते हैं और जो अमनोज्ञ है उसके प्रति द्वेष जगाते हैं। यहीं से राग-द्वेष की कड़ी प्रारंभ हो जाती है, जो दु:ख की शृंखला आरंभ करती है। जैसा कि बुद्ध द्वारा कहा गया कि इन्द्रियों पर हो रही वेदना से तृष्णा जागती है और उस तृष्णा से जन्म-मरण की कड़ी बनती है, वही बात उत्तराध्ययन सूत्र के इस अध्याय में विस्तार से बताई है कि शब्द, गंध, रूप और रस के प्रति राग और द्वेष न करें। उदाहरण के लिए निम्न श्लोक दिया जा रहा है जिसे रूप, शब्द, रस, गंध, भाव सब पर लागू किया जा सकता है :-

जे इंदियाणं विसया मणुन्ना न तेसु भावं निसिरे कयाइ।
न या अमणुन्नेसु मणं पि कुज्जा समहिकामे समणे तवस्सी।।
चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो।।

अध्याय- 32, गाथा 21 व 22

अर्थ- समाधि की भावना वाला तपस्वी श्रमण, जो इन्द्रियों के शब्द, रूपादि मनोज्ञ विषय हैं, उनमें कदापि राग न करे तथा इन्द्रियों के अमनोज्ञ विषयों से भी द्वेष भाव न करे। चक्षु का ग्राह्य विषय है- रूप। जो रूप राग का हेतु होता है, उसे मनोज्ञ कहते हैं और जो रूप द्वेष का हेतु होता है, उसे अमनोज्ञ कहते हैं। इन दोनों (मनोज्ञ और अमनोज्ञ रूपों) में जो सम (समता में) रहता है (न राग न द्वेष) वह वीतराग है।

जो बात ऊपर कथित गाथाओं में रूप के सम्बन्ध में कही है, वही बात शब्द, गंध, रस व भाव के लिए भी कही गई है साथ ही राग या द्वेष करने पर किस प्रकार कषाय का जन्म होता है और कितने पाप कर्म करता है, इसका विशद विवेचन भी उत्तराध्ययन में उपलब्ध है। समभाव में रहना ही वीतरागता है। कषाय विजय का मार्ग समभाव ही है। अध्याय के अंत में लिखा है कि ''विरक्त व्यक्ति के मन में इन्द्रियादि के शब्दादि विषय मनोज्ञता या अमनोज्ञता उत्पन्न नहीं करते। व्यक्ति का संकल्प-विकल्प (राग-द्वेष-मोहरूप अध्यवसाय) सब दोषों के कारण हैं, इन्द्रियों के विषय नहीं है- ऐसा जो संकल्प करता है उसके मन में समता उत्पन्न होती है और उस समता से उसके कामगुणों की तृष्णा क्षीण हो जाती है''।

ध्यान से कषाय विजय

उपर्युक्त चर्चा से स्पष्ट हो गया कि कषाय विजय का मार्ग समभाव है, परन्तु प्रश्न उठता है, कि समभाव कैसे प्राप्त करें। बुद्धि के स्तर पर तो स्वीकार करना आसान है, परन्तु उसे व्यवहार में कैसे लायें, यह एक समस्या है। अनेक साधकों का अनुभव है कि वे क्रोध नहीं करना चाहते, परन्तु अचानक आ जाता है; उन्हें पता भी नहीं लगता और वे क्रोध के अधीन हो जाते हैं। वास्तविक स्थिति यह है कि हमारा सजग चित्त तो सम्पूर्ण चित्त का दस प्रतिशत है और शेष 90 प्रतिशत अवचेतन या अचेतन चित्त है, जिसका हमें पता नहीं, परंतु वह चित्त बहुत सक्रिय है।

जितने भी आवेश हैं वे सब अवचेतन चित्त में सोये पड़े हैं वे अनजाने में मौका पाकर जाग पड़ते हैं और हमें पता भी नहीं लगता। उस अवचेतन चित्त तक पहुंच कर अपने राग आर द्वेष के स्वभाव को बदल कर समभाव में आना एक आतंरिक प्रक्रिया है। जब तक हम अपने आप को नहीं जानेंगे, हम स्वयं के भावों और आवशों पर नियंत्रण नहीं कर पायेंगे। यह बाहर से अंतर की ओर यात्रा है और जब तक चित्त को बाहर से मोड़ कर अंतर्मुखी नहीं बनाएंगे चित्त हमेशा अशांत रहेगा; उसका शांत होना असम्भव है। चित्त की उद्विग्नता ही दुःख है। चित्त की यह दशा विभाव दशा है और अंतर्मुखी होने पर ही वह स्वभाव में आयेगा। अधिकांश धार्मिक पद्धतियों की मान्यता है कि चित्त को तनावों से मुक्त करवाकर शांति व समाधि भाव में लायें तब ही दुःख का अंत सम्भव है। यह समाधि भाव ही समता, समभाव या सामायिक है। वे सभी साधना पद्धतियां जो चित्त को निराकुल, निराकार, अनुद्विग्न और निर्विकल्प या समत्वयुक्त बनाने का प्रयास करना चाहती हैं, वे अपनी साधना पद्धति में ध्यान का सहारा अवश्य लेती हैं।

वासनाओं और इन्द्रियों के वशीभूत मन चंचल, विघटित (Scattered) और कमजोर होता है। ध्यान साधना द्वारा हम मन को बाहर से हटा कर एकाग्र एवं सशक्त बनाते हैं और संकल्प-विकल्प से मुक्त करते हैं। एकांत और शांत मन अपनी वास्तविक स्थिति का ज्ञान करता है और जानने लगता है कि वे कितनी क्षणिक हैं और उनके प्रति मोह और तृष्णा निरर्थक है। श्वास को देखने से प्रारम्भ कर ध्यान में शरीर का पर्यवेक्षण करते हैं और फिर शरीर की संवेदना को गहराई से देखते हैं। शरीर पर हो रही संवेदनाओं को ध्यान से देखते हैं और संवेदना की क्षणिकता की अनुभूति कर उनके प्रति समभाव में बने रहने का अभ्यास करते हैं। अनित्य बोध जागता है कि भौतिक संसार की समस्त वस्तु, वेदना और आकर्षण अनित्य हैं और उनके प्रति मोह जगाना या तृष्णा में घूमना दुःख को आकर्षित करना है। इस बोध को ही प्रज्ञा कहा जाता है। इससे अच्छी संवेदना का चुनाव कर राग तथा अमनोज्ञ संवेदना के प्रति द्वेष जगाने की पुरानी आदत को बदल कर समभाव में रहने की आदत का विकास किया जाता है। यही समभाव जीवन में वस्तुओं, संबंधों, व्यक्तियों के प्रति रखने से कषाय का प्रादुर्भाव नहीं होता और यों जीवन सरस होने के साथ-साथ शांति और समाधिपूर्ण होने लगता है। कषाय की प्रवृत्ति ज्यों ज्यों कम होती जायेगी, जीवन बंधन और कष्ट से मुक्त होता जायेगा। बाहरी वस्तुओं के प्रति आकर्षण कम होने से तनाव भी कम होगा और लोभ व तृष्णा पर नियंत्रण होगा। तृष्णा कम होने पर मोह या चिपकाव कम होगा और यही जन्म-मरण के चक्र को समाप्त करेगा। जैसा कि उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णित गाथा में लिखा है ''जो समता में रहता है उसे वीतराग कहते हैं'' यही बात ध्यान के अभ्यास और बाहर की वस्तुओं से विरति (वैराग्य) से व समभाव से वीतरागता की स्थिति प्राप्त होती है। श्रीमद्भगवद्गीता और पतंजलि के योग शास्त्र में भी यही लिखा है कि अभ्यास और वैराग्य से ही समता की स्थिति प्राप्त होती है। जैसा कि पतंजलि के योगसूत्र में लिखा है :- 'अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः' (योग सूत्र अध्याय 1 श्लोक 12) अर्थ :- चित्त वृत्तियों का निरोध अभ्यास और वैराग्य से होता है।

सुदीर्घ काल तक निरन्तर आदरपूर्वक सेवन किए जाने पर अर्थात् लगातार अभ्यास करने पर समाधि की भूमि दृढ़ अवस्था वाली होती है। ध्यान से समाधि प्राप्त करने के लिए लगातार अभ्यास आवश्यक है। वैराग्य के लिए चित्त को तृष्णा रहित बनाना होता है, इसके लिए योगसूत्र में इस प्रकार कहा है:-'**दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा वैराग्यम्।**'- **योगसूत्र अध्याय 1, सूत्र 15**

दृष्ट और आनुश्रविक विषयों की तृष्णा से रहित चित्त की वशीकार अवस्था वैराग्य है। देखे और सुने विषयों में गृद्ध चित्त की तृष्णा से मन को हटा कर

मन को वश में करना वैराग्य है। तृष्णा को हटाये बिना वैराग्य नहीं और अभ्यास के बिना मन को वश में करना सम्भव नहीं। इसलिए अभ्यास और वैराग्य से ही समभाव में स्थित हुआ जा सकता है।

कर्म निर्जरा के लिए 12 प्रकार के तप बताये हैं, उनमें से 6 बाह्य और 6 आंतरिक तप हैं। भोजन व रसों में कमी व अब्रह्मचर्य के त्याग के लिए अनशन, ऊणोदरी, रस-परित्याग आदि तप आवश्यक हैं, परन्तु अवचेतन मन को वश में करने और समभाव में स्थापित होने के लिए आंतरिक तप आवश्यक हैं, जिनमें ध्यान और कायोत्सर्ग शामिल हैं। उनके माध्यम से अंतस्तल तक पहुंच कर कर्म-निर्जरा कर दुखों का अंत कर सकते हैं। आचारांग सूत्र में ध्यान से समभाव प्राप्त करने के लिये सूत्रों पर ध्यान देना आवश्यक है:-'**जहा अंतो तहा बाहिं, जहा बाहिं तहा अंतो, अंतो अंतो पुई-देहंतराणि पासइ पुढेवि सवंताइं पडिए पडिलेहाए।**'-

आचारांग सूत्र अध्याय 2 उद्देशक 5 सूत्र 118, 119

अर्थ- जैसा भीतर है वैसा बाहर है और जैसा बाहर है वैसा भीतर है। देह के भीतर-भीतर देखता है, पुनः पुनः देखता है, पृथक्-पृथक् करके देखता है। प्रतिलेखन करता है, वह पंडित है।

क्रोध आदि कषायों का आपस में क्या जोड़ है, इसको भी आचारांग सूत्र के निम्न सूत्र में समझाया गया है:-

जे कोहदंसी से माणदंसी, जे माणदंसी से मायादंसी। जे मायादंसी से लोभदंसी, लोभदंसी से पेज्जदंसी।।

आचारांग सूत्र अध्याय 3 उद्देशक 4 सूत्र 81

अर्थ- जो क्रोध को देखता है वह मान को देखता है, जो मान देखता है वह माया को देखता है, जो माया को देखता है वह लोभ को देखता है, जो लोभ को देखता है वह राग को देखता है। सब कषाय एक दूसरे से जुड़े हैं और एक पर विजय सब पर विजय प्राप्त करने में सहायक होती है। इसी प्रकार आगे कहा है जैसा है वैसा देखो और द्रष्टा भाव में बने रहो :- **तहा चेय, अस्सि चेयं पवुच्चइ तं पाइत्तु ण णिहे णिक्खिवे, जाणित्तु धम्मं जहा तहा दिट्ठेहिं णिव्वेयं गच्छेज्जा णो लोगस्सेसणं चरे।**

आचारांग सूत्र, अध्याय 4 उद्देशक 2 सूत्र 13

अर्थ- जैसा तथ्य है वैसा निरूपित किया है। धर्म को जैसा है वैसा जानें, न पकड़े न छोड़ें। द्रष्टा की तरह निर्वेद रहें (किसी भी संवेदना को वेदे नहीं, भोगे नहीं, केवल देखें), लोक की एषणा (संसार की चाहना) न करे।

इस प्रकार जैन आगम में वैराग्य और समता के निर्देश सब ओर भरे पड़े हैं, परन्तु आचारांग सूत्र और उत्तराध्ययन सूत्र में विशेष निर्देश हैं। लेखक की पुस्तक 'ध्यान से स्वबोध' में आचारांग सूत्र के अनुसार ध्यान का विशद विवेचन किया गया है और उसका तुलनात्मक अध्ययन बुद्ध धर्म की विपस्सना ध्यान पद्धति और पतंजलि के योग सूत्र में बताये ध्यान और समाधि के साथ किया गया है। तीनों पद्धतियों में ध्यान से कषाय विजय का मार्ग निरूपित है। समता में स्थित होने से ही दुःख का अंत कर मुक्त स्थिति की प्राप्ति की जा सकती है। जब तक हम इन्द्रियों के विषयों से प्राप्त संवेदनाओं में से मनोज्ञ और अमनोज्ञ के बीच चुनाव करते रहेंगे तब तक राग और द्वेष के अधीन होकर दुःख की श्रृंखला को बढ़ाते जायेंगे। हमें चाह रहित बनना होगा। कोई भी वस्तु, व्यक्ति और कैसी भी परिस्थिति हो, उसे स्वीकार करना सीखना होगा। जीवन में स्वीकारोक्ति आ जाये तो राग और द्वेष तथा कषाय गायब हो जायेंगे, समभाव का प्रादुर्भाव होगा और तब यह जीवन मुक्त और आनन्दमय हो जायेगा।

संदर्भः-

1. डॉ. सागरमलजी जैन, कन्हैयालालजी लोढ़ा द्वारा लिखित पुस्तक 'बंध तत्त्व' की भूमिका, पृष्ठ XLVI
2. उत्तराध्ययन सूत्र, अध्याय 32, गाथा 106-107

-सी-1701, लेक प्रिमरोज, लेक होम्स, फेज-4, मुम्बई-400076 (महा.)

कषायविजय में सम्यक् तप की भूमिका*

प्रो. धर्मचन्द जैन

कषाय का पूर्ण क्षय, कषाय का उपशम एवं क्षयोपशम स्वरूप न्यूनता- ये सभी कषायविजय के द्योतक हैं। जब तक कषाय का पूर्ण क्षय न हो तब तक कषाय का शमन भी उपयोगी होता है। इस कषाय विजय में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक् चारित्र (समिति, गुप्ति, दशविध धर्म, परीषह जय, सामायिकादि चारित्र) एवं सम्यक् तप की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यहाँ पर सम्यक् तप को प्रमुखतया आधार बनाकर कषायविजय का प्रतिपादन किया जा रहा है।

सम्यक् दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान जहाँ मिथ्यात्व का नाश करते हैं, वहाँ सम्यक् चारित्र एवं सम्यक् तप कषायों पर विजय प्राप्त करने में सहायक हैं। उत्तराध्ययन सूत्र में ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र के साथ तप को भी मुक्ति के मार्ग में सहायक स्वीकार किया गया है-

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एस मग्गुत्ति पण्णत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 28.2

तप में वह विशिष्ट शक्ति है, जिसके कारण करोड़ों भवों के संचित कर्म भी निर्जरित हो जाते हैं- ''भवकोडिसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ।'' (उत्तराध्ययन सूत्र, 30.6)। इसीलिए जैन दर्शन में तप पर बल प्रदान किया गया है। किन्तु यहाँ यह प्रश्न खड़ा होता है कि तपस्या के साथ कर्म निर्जरा का क्या संबंध है? यह कैसे माना जाए कि तप करने पर मोह आदि कर्मों की अथवा कषाय की निर्जरा होती है? इस सम्बन्ध में कहना होगा कि सम्यक् ज्ञानपूर्वक किया गया तप ही कर्म-निर्जरा में विशेष रूप से सहायक होता है। बाह्य तप हो अथवा आभ्यन्तर, दोनों ही कर्म-निर्जरा में सहायक हैं। तप करके शरीर को एवं मन को साधा जा सकता है तथा बद्धकर्मों का स्थितिबन्ध एवं अनुभाग बन्ध शिथिल किया जा सकता है। यह भी सत्य है कि तप से कुछ कर्म उदीरित होकर निर्जरित हो जाते हैं। जो कर्म बाद में उदय होने वाले थे, तप के माध्यम से वे पहले उदय में आने योग्य हो जाते हैं। साधक जब तप करते हुए उन कर्मों के उदय में आने पर नये कर्मों का बंध न करे तो उन पूर्वबद्ध कर्मों की तीव्रता से निर्जरा होती है। क्रोध, मान, माया एवं लोभ स्वरूप कषाय सत्ता में विद्यमान रहता है। तप के द्वारा सत्ता में विद्यमान कषाय उदीरित होता है एवं उदय में आकर निर्जरित हो जाता है।

स्थूल रूप में हमें कषाय का निरन्तर अनुभव नहीं होता। जब वह तीव्र होता है तभी हमें प्रतीति होती है कि कषाय उदय में आया है। जैन सिद्धान्त के अनुसार क्रोध, मान, माया एवं लोभ का उदय हमारे सदैव बना हुआ है। क्रोध हमें अशान्त बनाता है। जो शान्ति को भंग करता है वह क्रोध है। स्थूलरूप से हमें क्रोध का अनुभव तब होता है जब हमारी कामनाएं पूर्ण नहीं होती हैं, अपने मन के अनुकूल कार्य सम्पन्न नहीं होते हैं, हमारा तिरस्कार होता है, हमारी अपेक्षाओं और मान्यताओं के अनुरूप व्यवहार नहीं होता है आदि अनेक कारण होने पर स्थूल क्रोध अनुभव में आता है। किन्तु सूक्ष्म रूप में देखा जाए तो जब तक मिथ्यात्व है एवं पर से कुछ अपेक्षाएं सत्ता में विद्यमान हैं तब तक क्रोध का अस्तित्व है तब तक क्रोध सत्ता बनाए रखता है, क्योंकि इससे अशान्ति उत्पन्न होती है। मान हमें बाह्य पदार्थों के साथ जोड़कर

***आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 1-2 अक्टूबर 2016 को निमाज, जिला-पाली में आयोजित 'जैन आगम साहित्य में कषाय विषयक चिन्तन' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।**

अपने स्वरूप को प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए मैं धन से अपने को जोड़कर धनी कहता हूँ। पत्नी से अपने को जोड़कर पति मानता हूँ। शरीर से जोड़कर स्वस्थ या अस्वस्थ समझता हूँ। इस प्रकार स्व से भिन्न पर पदार्थ के साथ जुड़कर अपने स्वरूप को स्वीकार करना मान है। ऐसा मान हमारे सदैव बना रहता है। किन्तु जब इस मान का आवेग तीव्र हो जाता है तभी हम कहते हैं कि यह व्यक्ति अहंकारी है अथवा मानी है। सत्य का अनादर करते हुए आचरण करना माया है अथवा सच्चाई को जानकर भी तदनुरूप आचरण न करना अथवा सत् कार्य में पुरुषार्थ करने का सामर्थ्य होते हुए भी पुरुषार्थ न करना माया है। ऐसी माया से हम सदैव ग्रस्त रहते हैं। इसलिए यह सही कहा गया है कि माया का उदय निरन्तर बना हुआ है। यह माया तभी समाप्त हो सकती है जब सत्य का अथवा विवेक का आदर करते हुए आचरण किया जाए। जिन बाह्य पदार्थों के सम्पर्क में हम आते हैं, उनसे हमें सुख या दुःख की प्रतीति होती है। जब सुख की प्रतीति होती है एवं उन बाह्य पदार्थों को हम निरन्तर अपने साथ रखना चाहते हैं तो हम लोभ नामक कषाय से ग्रस्त होते हैं। हमें पाँच इन्द्रियाँ मिली हैं। उनके रूप, रस, गंध, स्पर्श एवं शब्द ये पाँच विषय हैं। जब मनोज्ञ अथवा मनचाहे अथवा मन को अच्छे लगने वाले रूप, रस आदि के सम्पर्क में हम आते हैं तो उन्हें बार-बार चाहते हैं। यह वृत्ति लोभ का रूप है। लोभ में हम आवश्यकता को नहीं देखते, अपितु विषयों के प्रति आकृष्ट होकर उनका अधिकाधिक उपभोग अथवा संग्रह करना चाहते हैं। लोभ की यह वृत्ति अनेक पापों का मूल है। इसके कारण हिंसा, झूठ, चोरी, परिग्रह आदि पाप किए जाते हैं तथा क्रोध, मान, माया, लोभ, कलह आदि दोष भी इसके कारण उत्पन्न होते हैं। इसलिए लोभ को पाप का बाप अथवा सर्वविनाशक कहा गया है। प्रायः धन के लालच को ही लोभ समझा जाता है। किन्तु धन का लोभ सब में नहीं पाया जाता। इसलिए जीव में यह निरन्तर नहीं होता। किन्तु विषयों के प्रति उपभोग एवं संग्रह की रुचि प्रत्येक संसारी जीव में निरन्तर उपलब्ध होती है। इस दृष्टि से लोभ सदैव एवं निरन्तर बना रहता है।

कषायक्षय में रत्नत्रय की भूमिका

इन चारों कषायों का क्षय दृष्टि को सम्यक् बनाने पर ही सम्भव है। जब यह समझ में आ जाए कि अशान्त होना हेय है, परवस्तुओं के आधार पर अपना स्वरूप स्वीकार करना मिथ्या है, सत्य का अनादर करके जीना त्याज्य है, विषयों के प्रति लालायित रहना हानिप्रद है, तभी कोई अपनी दृष्टि को सम्यक् बना पाता है। यह दृष्टि सम्यक् बनने पर क्रोधादि कषायों की समाप्ति अवश्यंभावी है। बशर्ते यह समझ निरन्तर बनी रहे। सम्यक् दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान की कषाय के क्षय में इसीलिए महत्त्वपूर्ण भूमिका अंगीकार की गई है। इन दोनों के अभाव में कितना भी तप कर लिया जाए अथवा कष्ट पा लिया जाए, किन्तु वह कषाय की निर्जरा में विशेष सहायक नहीं होता। बाह्य दृष्टि से आचरण की कितनी भी ऊँचाइयाँ छू ली जाएं तब भी सम्यक् दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान के अभाव में कर्म-निर्जरा नहीं हो पाती। इसका कारण है मिथ्यात्व की उपस्थिति। जब तक मिथ्यात्व है तब तक सत् क्रिया का अपेक्षित फल प्राप्त नहीं होता। मिथ्यात्व को तोड़कर ही कषायों को समूल नष्ट किया जा सकता है। मिथ्यात्व के रहते कोई कितना भी प्रयास कर ले, किन्तु कषायों का पूर्ण विनाश नहीं कर पाता। क्योंकि वह कषायों का निरन्तर बंध भी करता रहता है। इसलिए कषाय के विनाश में मिथ्यात्व के नाश की अथवा कहें तो सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान की प्रारम्भिक भूमिका होती है। इसके पश्चात् चारित्र की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि चारित्र के रहते हुए नये कर्मबंधन को रोका जा सकता है। चारित्र के द्वारा इन्द्रियों का निग्रह किया जाता है, मन को नियंत्रित किया जाता है, वचन को संयमित किया जाता है तथा प्रत्येक प्रवृत्ति सजगतापूर्वक की जाती है। इससे नये कर्मों के आस्रव का निरोध होता है। कुछ कर्म स्वतः उदय में आकर निर्जरित होते रहते हैं। किन्तु चारित्र का पालन न किया जाए तो नये कर्मों का आस्रव एवं बंध जारी रहता है। इसलिए चारित्र का पालन भी कषाय की वृद्धि को रोकता है।

तपसाधना से कर्मक्षय या कषायक्षय

चारित्र को धर्म कहा गया है- चारित्तं खु धम्मो। चारित्र के अन्तर्गत पाँच समिति, तीन गुप्ति, दशविध धर्म, द्वादश अनुप्रेक्षा, परीषह जय एवं सामायिक आदि पाँच चारित्रों का ग्रहण होता है। ये सब भी कषायविजय की साधना में सहायक हैं। इनके द्वारा कषाय के आस्रव का निरोध होता है। कषाय नियन्त्रित होता है अर्थात् कषाय पर विजय प्राप्त की जाती है। पाँच समिति की साधना आत्मजागृति पूर्वक सम्यक् प्रवृत्ति (गमनागमन, भाषा, आहार आदि की एषणा, वस्तु के आदान-निक्षेपण एवं परिष्ठापना) की साधना है। इसमें दोषों का परिहार किया जाता है। तीन गुप्ति के अन्तर्गत मन, वचन एवं काया की अशुभ प्रवृत्तियों का गोपन किया जाता है, जिसमें काषायिक प्रवृत्तियों का भी निरोध होता है। दशविध धर्म भी कषायविजय की साधना के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। दशधर्म हैं- 1. उत्तम क्षमा, 2. मार्दव, 3. आर्जव, 4. शौच, 5. सत्य, 6. संयम, 7. तप, 8. त्याग, 9. अकिंचन्य एवं 10. ब्रह्मचर्य। क्षमा के द्वारा क्रोध पर, मार्दव से मान पर, आर्जव से माया पर, शौच से लोभ पर कषायविजय प्राप्त की जाती है। दशवैकालिक सूत्र में कहा भी गया है-

उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
मायं चऽज्जवभावेण, लोहं संतोसओ जिणे।।

उपशम (क्षमा) से क्रोध का नाश करे, मार्दव (विनय, मृदुता) से मान को जीते। आर्जव (सरलता) से माया को तथा संतोष से लोभ को जीते। इस प्रकार कषायविजय में यह धर्मसाधना सहायक है। शौच शब्द यहाँ अर्थशौच अथवा आजीविका की शुद्धि का सूचक है। संतोषवृत्ति वाला व्यक्ति अर्थ शौच को अपना पाता है। सत्यनिष्ठ, संयमनिष्ठ, तपोनिष्ठ, त्यागधर्मी, अपरिग्रही एवं ब्रह्मचारी भी अपने विकारों पर लगाम लगाने के कारण कषायविजय की साधना में सफल होता है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति अपने दोषों का कारण किसी अन्य को नहीं अपितु स्वयं को मानता है, अतः वह अपने विकारों पर विजय प्राप्त करने में सफल होता है। संयमी व्यक्ति तो विकारों पर विजय पाने हेतु सन्नद्ध रहता ही है, वह काषायिक भावों, चिन्तनों, वचनों एवं व्यवहारों पर लगाम लगाता है। तप के द्वारा प्राचीन कषायभावों की भी निर्जरा होती है। 'तवसा धुणइ पुराण पावगं।' पुराने पापकर्मों को तप के द्वारा धुना जाता है। तप से कषाय-निर्जरा के सम्बन्ध में पृथक् से विचार किया जाएगा। त्यागवृत्ति के द्वारा भी कषाय-विजय सम्भव है, क्योंकि इसमें भोगोपभोग की सामग्री विद्यमान होने पर भी उनके भोग का परिहार किया जाता है। अपना कुछ भी न मानना अकिंचनता है। जो अपना कुछ भी नहीं मानता उसे कहाँ बंधन है और कहाँ काषायिक प्रवृत्ति है। ब्रह्मचर्य में जीने वाला व्यक्ति भी राग-द्वेष की प्रवृत्ति पर विजय पाता है, क्योंकि वह भी अपने विकारों को जीतने के मार्ग पर चलता है।

इन तीनों रत्नों के होने पर भी सत्ता में रहे हुए कर्मों का क्षय करने की दृष्टि से तप साधना विशेष महत्त्व रखती है। यह पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा में साक्षात् कारण है। तप के द्वारा कर्म का स्थितिघात एवं रसघात होता है। अर्थात् पूर्वबद्ध कर्मों की स्थिति घटती है एवं अनुभाग बंध में भी कमी आती है।

तप के दो प्रकार हैं- बाह्य एवं आभ्यन्तर। यह दोनों ही तप कर्मनिर्जरा में एवं कषाय क्षय में उपयोगी हैं। बाह्य तप की अपेक्षा आभ्यन्तर तप के द्वारा शीघ्रता से कर्मनिर्जरा होती है। बाह्य तप से भूमिका तैयार होती है तथा आभ्यन्तर तप कर्म-निर्जरा को तीव्र कर देता है। बाह्य तप करने वाले अनेक तपस्वियों के लिए प्रायः यह कहा जाता है कि तपस्वी क्रोधी होते हैं। तपस्वियों को क्रोध अधिक आता है। दुर्वासा आदि ऋषि इसके उदाहरण हैं। किन्तु जैन सिद्धान्त के अनुसार यह स्पष्ट रूप से विदित होता है कि उन्हीं तपस्वियों को क्रोध आता है, जिनकी भूमिका में सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान नहीं होता। जो तप को निर्जरा का नहीं अपने अभिमान का एवं प्रदर्शन का निमित्त मानते हैं उनके लिए तप ताप बन जाता है। जबकि तप वह है जो साधक को तत्काल

पवित्र करता है। तप के समय जब दृष्टिकोण पवित्र नहीं होता है, तो शारीरिक शक्ति के साथ मानसिक शक्ति का भी ह्रास होता है। इसलिए तपस्वी को क्रोध आता है। जो सही दृष्टिकोण से तप करता है उसके शरीर में तेजस्विता मुखरित होती है, मन में अपार शान्ति एवं चित्त में सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव का विकास होता है।

बाह्य तप के छः प्रकार हैं- 1. अनशन, 2. अवमोदरिका (ऊणोदरी), 3. भिक्षाचर्या, 4. रस परित्याग, 5. कायक्लेश एवं 6. प्रतिसंलीनता। बाहर से इन तपों के आराधन का भान होता है। इसलिए इन्हें बाह्य तप कहा जाता है।

1. अनशन- अशन अर्थात् आहार का त्याग करना अनशन कहलाता है। अनशन में सब्जी रोटी आदि अशन, बादाम, काजू आदि खादिम तथा इलायची, सुपारी आदि स्वादिम आहारों का त्याग करने के साथ, पान अर्थात् जल का भी त्याग किया जाता है। **आहार का त्याग करने से चित्त विषयों की ओर नहीं दौड़ता।** उसे भीतर का उत्प्रेरक तत्त्व प्राप्त नहीं होता। **अनशन का एक पर्यायवाची शब्द उपवास है।** जिसका तात्पर्य है आत्मा के निकट रहना। आत्मा के निकट तभी रहा जा सकता है, जब विषय विकारों से परे रहा जाए। मात्र आहार का त्याग लंघन कहा गया है, जबकि उपवास में आहार के साथ विषय कषाय का भी त्याग किया जाता है-

विषयकषायाहाराणां, त्यागो यत्र विधीयते।
उपवासः स विज्ञेयः शेषं लंघनकं विदुः।।

जैन साधना पद्धति का लक्ष्य वीतरागता की प्राप्ति है। इसलिए तप-साधना भी वीतरागता की ओर ले जाती है। **अनशन तप भी राग एवं आसक्ति को तोड़ने में सहायक है।** इस तप के द्वारा भी विषय विकारों को जीता जा सकता है। आहार के प्रति आसक्त व्यक्ति अनशन तप के द्वारा अपनी आसक्ति को जीतने का सामर्थ्य जुटाता है। भारतीय परम्परा में तप का सामान्यतया यही अभिप्राय समझा जाता है कि इसमें आहार का त्याग किया जाता है। किन्तु आहार का त्याग करना मात्र तप नहीं है। अपनी इन्द्रियों का निग्रह करते हुए मन का निग्रह करना एवं सजगतापूर्वक पूर्व संस्कारों को तोड़ना तप कहलाता है। भारतीय परम्परा में अनेक तापस एवं परिव्राजक तप करते थे, किन्तु उनका तप अज्ञान तप था। सम्यग्दर्शनपूर्वक जो तप किया जाता है। वहीं तप अधिक फलदायी होता है। अज्ञान तप से कर्म-निर्जरा अथवा कषाय निर्जरा का वह फल प्राप्त नहीं होता, जो ज्ञानपूर्वक तप करने से होता है।

अनशन के औपपातिक सूत्र में दो प्रकार निरूपित हैं- 1. इत्वरिक, 2. यावत्कथिक। इत्वरिक अनशन उपवास से लेकर छह माह पर्यन्त होता है। जबकि यावत्कथिक तप जीवनपर्यन्त होता है। दूसरे शब्दों में इत्वरिक तप सीमित अवधि के लिए किया जाता है-एवं यावत्कथिक तप एक बार स्वीकार करने के पश्चात् जीवनपर्यन्त रहता है। यावत्कथिक तप तभी किया जाता है जब संथारापूर्वक समाधिमरण प्राप्त करना अभीष्ट हो। इसलिए समाधिमरण के जितने प्रकार हैं उतने ही प्रकार यावत्कथित तप के होते है। औपातिक सूत्र में इसके दो प्रकार बताये गये हैं- 1. पादोपगमन, 2. भक्तप्रत्याख्यान। पादप की भाँति एक ही स्थान पर शरीर को निश्चेष्ट रखना पादोपगमन संथारा होता है। भक्तप्रत्याख्यान तप दो प्रकार का होता है। एक में तीन प्रकार के आहारों का त्याग किया जाता है तथा दूसरे में चारों प्रकार के आहारों का त्याग होता है। ये दोनों प्रकार के यावत्कथित तप स्वयं को निष्पाप एवं निष्कषाय बनाने के लक्ष्य से आराधित किए जाते हैं। अर्थात् यावत्कथिक तप का लक्ष्य कषाय रहित होना है। यह कहने को बाह्य तप है, किन्तु इसका लक्ष्य कषायों को जीतना है। भक्त प्रत्याख्यान तप एक प्रकार का अनशन तप ही है, जिसका लक्ष्य भी विषयों एवं कषायों को जीतना है।

2. अवमोदरिका तप- भूख से कुछ कम आहार ग्रहण करना अवमोदरिका अथवा ऊनोदरी तप होता है। इस तप के द्वारा भी कषायों पर विजय प्राप्त की जाती है। इस तप की साधना करने वाले को शारीरिक एवं मानसिक

लाभ भी होते हैं। सदैव ऊनोदरी तप करने वालों की कभी तोंद नहीं बढ़ती। मन में उद्वेग एवं विषय-विकारों की वृद्धि नहीं होती। क्योंकि व्यर्थ के विकारों को उत्तेजना नहीं मिलती। औपपातिक सूत्र में ऊनोदरी तप का व्यापक स्वरूप प्रकट हुआ है। इसमें अवमोदरिका तप के दो प्रकार कहे गए हैं- **1.द्रव्य अवमोदरिका** एवं **2. भाव अवमोदरिका**। द्रव्यों का मर्यादापूर्वक अथवा आवश्यकता से न्यून उपयोग करना द्रव्य अवमोदरिका है। उपकरण एवं भक्तपान की दृष्टि से द्रव्य अवमोदरिका भी दो प्रकार की है। **उपकरण द्रव्य अवमोदरिका** में वस्त्र, पात्र आदि की मर्यादा की जाती है। टी.वी., मोबाइल आदि उपकरणों की भी मर्यादा इसी कोटि में आती है। **भक्तपान द्रव्य अवमोदरिका** आहार से सम्बन्धित है। इसमें भूख से कम आहार किया जाता है। इसे ही ऊनोदरी नाम दिया गया है। ऊन अर्थात् कम तथा उदर अर्थात् पेट। यानी भोजन की जिस विधि से पेट अधिक बढ़े नहीं वह तप ऊनोदरी तप है। औपातिक सूत्र में इस तप को व्यापक रूप देते हुए भाव अवमोदरिका तप का भी विधान किया गया है। भाव अवमोदरिका के अनेक प्रकार निरूपित हैं- अल्पक्रोध, अल्पमान, अल्पमाया, अल्पलोभ, अल्पशब्द, अल्पझंझा आदि। अर्थात् क्रोध को अल्प करना, मान को अल्प करना, माया को अल्प करना एवं लोभ को अल्प करना भी अवमोदरिका तप है। एक सच्चा साधक द्रव्य अवमोदरिका तप करते हुए भी भाव अवमोदरिका तप की साधना करता है। अर्थात् वह अपने उपकरण एवं भोजन की मर्यादा करते हुए क्रोधादि कषायों को भी नियंत्रित करता है। इस तरह आगम के अनुसार अवमोदरिका तप कषाय नियंत्रण में सहायक है।

3. भिक्षाचर्या- भिक्षा मांग कर आहार करना भी एक प्रकार का तप है जिसे भिक्षाचर्या तप कहा गया है। साधु-साध्वी एषणा समिति का पालन करते हुए इस तप की आराधना करते हैं। वे इस तप को अधिक विशिष्ट बनाने के लिए द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव का अभिग्रह (विशेष संकल्प) धारण करते हुए भिक्षाचर्या तप की आराधना करते हैं। इस तप के साधकों को कभी योग्य आहार मिलता है तो कभी नहीं। कभी औद्देशिक आदि दोषों के कारण साधु-साध्वी आहार लाभ नहीं कर पाते हैं तो कभी एषणा समिति की जानकारी के अभाव में श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा आहार उपलब्ध कराने में अशक्तता रहती है। कई बार विपरीत परिस्थितियों में भी साधु-साध्वी को समता धारण करनी होती है एवं क्रोध के क्षणों में भी वे अपने को संयमित करने का अवसर प्राप्त करते हैं। इस तरह भिक्षाचर्या तप साधक के लिए क्रोधादि कषायों पर विजय प्राप्त करने में सहायक बनता है। साधक इस तप के माध्यम से न केवल क्रोध कषाय को जीतता है, अपितु मान, माया एवं लोभ कषाय पर भी विजय प्राप्त करने में समर्थ होता है। वह भिक्षाचर्या में आहार प्राप्त करने के लिए कभी अपने कुल, गोत्र आदि का बखान नहीं करता। अपनी महिमा का गान नहीं करता। अपने को उच्च बताकर आहार प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं करता। इस रूप में वह मान कषाय को भी जीतता है। दूसरी बात यह है कि मांगने में भी अहंकार को वश में करना होता है। कई दुत्कार, फटकार या तिरस्कार होने की संभावना रहती है। फिर भी वे समभाव से रहकर अपने को जीतने का प्रयत्न करते हैं। वे तंत्र-मंत्र-यंत्र आदि का प्रयोग करके आहार प्राप्ति का यत्न नहीं करते। क्योंकि वे माया से दूर रहते है। श्रावक-श्राविकाओं अथवा गृहस्थों के साथ छल-छद्म का व्यवहार नहीं करते हुए माया कषाय को जीतते हैं। कहीं किसी घर में स्वादिष्ट एवं मनोनुकूल आहार के लिए साधु का यदि बार-बार जाने का मन करता है, तो इसका तात्पर्य है कि वह उस आहार के प्रति लोभ कषाय से आविष्ट है। इसलिए आगम में एक ही घर में बार-बार आहार के लिए जाने का निषेध किया गया है। जो साधु एक ही घर में रुचिकर भोजन मिलते हुए भी उसमें बार-बार नहीं जाता अपितु अन्य घरों में कम स्वाद वाले आहार को ग्रहण करके भी संतुष्ट रहता है, वह लोभकषाय को जीतने में समर्थ होता है।

4. रस-परित्याग- मधुर, अम्ल, तिक्त, लवण आदि रसों का यथाशक्ति या यथासंकल्प त्याग करना रसपरित्याग कहलाता है। यह त्याग लोभ कषाय को जीतने में सहायक है। जिह्वा को प्रिय रसों का त्याग करने से लोभ की वृत्ति को जीता जा सकता है। जैन परम्परा में अनेक प्रकार के तप ऐसे हैं, जिनमें रसों का भाँति-भाँति से परित्याग किया जाता है। उदाहरण के लिए नींवी तप में धृत, दूध, दही, तेल एवं गुड-शक्कर से रहित आहार कर रसों का परित्याग किया जाता है। इससे रसनेन्द्रिय पर विजय प्राप्त करने के साथ मन एवं आत्मा को भी कषाय विजय में समर्थ बनाया जाता है। प्रणीतरसपरित्याग तप के अन्तर्गत घी, दूध, चीनी आदि से गरिष्ठ भोजन का परित्याग किया जाता है। इनकी बहुलता विकार उत्पन्न करती है। इसलिए विकारों पर विजय प्राप्त करने के लिए तप का विशेष महत्त्व है। आयंबिल तप में नमक, मिर्च एवं पाँचों विगयों का त्याग किया जाता है। यह अपने आप में रस विजय का बहुत बड़ा साधन है। जो स्वाद पर विजय प्राप्त करता है वह अपने विकारों पर भी विजय प्राप्त करने में सक्षम होता है। इसी प्रकार अन्न कण मात्र का आहार करना, समस्त रस रहित आहार करना, विरस आहार करना, रुक्ष आहार करना आदि भी रस परित्याग के अन्तर्गत विविध तप कहे गए हैं।

5. कायक्लेशः- काया को साधना के योग्य बनाये रखना कायक्लेश तप है। इस तप के अनेक प्रकार निरूपित है। यथा- 1. स्थानस्थितिक- एक ही स्थान पर खड़े रहना। 2. उत्कुटुकासनिक- उकडू आसन से बैठना। 3. प्रतिमास्थायी- मासिक आदि 12 प्रतिमाएँ स्वीकार करना। 4. वीरासनिक- वीरासन में स्थित रहना। 5. नैषधिक- पालथी लगाकर बैठना, 6. आतापक- सूर्य की आतापना लेना। 7. अप्रावृतक- शरीर को कपड़े आदि से नहीं ढकना। 8. अकण्डूयक- खुजली चलने पर भी शरीर को नहीं खुजलाना, 9. अनिष्ठीवक- थूक आने पर भी नहीं थूकना। 10. सर्वगात्र-परिकर्म-विभूषा-विप्रमुक्त- शरीर के सभी संस्कार, विभूषा आदि से मुक्त रहना। सभी प्रकार के कायक्लेश तप से शरीर, मन एवं आत्मा को साधा जाता है। यह तप साधक को अप्रमत्त बनाता है। सुकुमारता के त्यागपूर्वक मन को एवं शरीर को इस तप के द्वारा कसा जाता है। यह तप भी आत्मविजय की साधना में सहायक होता है। शरीर के प्रति ममत्व को इस तप के द्वारा जीता जाता है। उससे प्राप्त होने वाले सुख के प्रति लोभ को नियंत्रित किया जाता है। शरीर की क्षमता का पूर्ण उपयोग करते हुए माया को जीता जाता है। विपरीत परिस्थितियों में भी शरीर को साध कर क्रोध पर नियंत्रण किया जाता है।

6. प्रतिसंलीनता- प्रतिसंलीनता का तात्पर्य है इन्द्रिय, मन आदि को बाह्य विषयों एवं पाप से विमुख कर आत्मविशुद्धि में लगाना। इन्द्रिय एवं मन का विषयों में लीन होने पर दुःखद परिणाम भोगने को मिलता है। अतः इस परिणाम से बचने के लिए इन्हें आत्म-साधना में लगाना अपेक्षित है। औपपातिक सूत्र में प्रतिसंलीनता के चार प्रकार प्रतिपादित है- 1. इन्द्रिय प्रतिसंलीनता, 2. कषाय प्रतिसंलीनता, 3. योग प्रतिसंलीनता, 4. विविक्त शय्यासन सेवनता। इन चार प्रकारों में कषाय प्रतिसंलीनता का सीधा सम्बन्ध कषाय विजय से है। कषाय प्रतिसंलीनता के चार प्रकार कहे गए हैं- 1. क्रोध का उदय होने पर उसका निरोध करना अथवा उदय प्राप्त क्रोध को विफल करना। 2. मान का उदय होने पर उसका निरोध करना अथवा उदय प्राप्त मान को विफल करना। 3. माया का उदय होने पर उसका निरोध करना अथवा उदय प्राप्त माया को विफल करना। 4. लोभ का उदय होने पर उसका निरोध करना अथवा उदय प्राप्त लोभ को विफल करना। इन प्रकारों से स्पष्ट होता है कि क्रोध आदि कषायों का उदय होने पर साधक उसको प्रभाव हीन बनाने का प्रयत्न करता है। क्रोध के क्षण में वह क्रोध में नहीं बहता, अपितु सावधान होकर उसको निष्प्रभावी बनाता है। इसी प्रकार मान कषाय का उदय होने पर सावधान साधक मान कषाय में नहीं बहता एवं उसको निष्प्रभावी बनाने का प्रयत्न करता है। यहीं बात माया कषाय का उदय होने पर तथा लोभ कषाय का उदय होने

पर की जाती है। यही प्रतिसंलीनता तप है, जो क्रोध, मान, माया एवं लोभ को जीतने में सहायक होता है।

इन्द्रिय प्रतिसंलीनता, योग प्रतिसंलीनता एवं विविक्त शय्यासन सेवनता के द्वारा भी कर्म निर्जरा करते हुए कषायों को नियंत्रित किया जाता है।

आभ्यन्तर तप द्वारा कषाय विजय

आभ्यन्तर तप सीधा-सीधा कर्म निर्जरा एवं कषाय विजय में सहायक होता है। आभ्यन्तर तप के भी छह प्रकार निरूपित हैं- 1. प्रायश्चित्त, 2. विनय, 3. वैयावृत्त्य, 4. स्वाध्याय, 5. ध्यान एवं 6. व्युत्सर्ग।

1. प्रायश्चित्त- किए गए पाप की विशुद्धि में प्रायश्चित्त तप की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रायश्चित्त शब्द की व्याख्या में कहा गया है- ''प्रायस्य पापस्य चित्तं विशोधनं यस्मात्।'' अर्थात् जिससे पाप की शुद्धि होती है वह प्रायश्चित्त है। यहाँ प्रायः का अर्थ पाप एवं चित्त का अर्थ विशुद्धि किया गया है। उत्तराध्ययन सूत्र में प्रायश्चित्त का लाभ बताते हुए कहा गया है कि प्रायश्चित्त करने से पाप कर्म की शुद्धि होती है। जीव अतिचार रहित अर्थात् दोष रहित होता है। प्रायश्चित्त को सम्यक् प्रकार से करता हुआ साधक मार्ग एवं मार्गफल को शुद्ध बनाता है, आचार एवं आचारफल की आराधना करता है। इस प्रकार पापों की शुद्धि करने का विशिष्ट मार्ग है प्रायश्चित्त। क्रोध, मान, माया एवं लोभ कषाय की गणना 18 पापों में होती है। अतः प्रायश्चित्त के द्वारा इन क्रोधादि पापों की भी शुद्धि अंगीकार की गई है। प्रायश्चित्त के नौ प्रकार प्रतिपादित हैं- 1. आलोचन, 2. प्रतिक्रमण, 3. तदुभय, 4. विवेक, 5. व्युत्सर्ग, 6. तप, 7. छेद, 8. परिहार, 9. उपस्थापन। औपपातिक सूत्र में पाराञ्चिकार्ह नामक भेद के साथ दस प्रकार प्रतिपादित है। आलोचन में साधक स्वयं अपने दोषों को देखता है, उनको दोष समझकर गुरु के समक्ष प्रकट कर हल्का होता है तथा वह दोष कथन एवं स्वीकारोक्ति मात्र से दोष को दूर कर लेता है। इस आलोचना नामक प्रायश्चित्त से माया, मिथ्यादर्शन एवं निदान शल्य निकल जाते हैं तथा ऋजु भाव प्रकट होता है। ऋजु भाव प्रकट होने से स्त्रीवेद एवं पुरुषवेद का बंध नहीं होता है तथा पूर्वबद्ध कर्म निर्जरित होते हैं। प्रतिक्रमण भी शुद्धि में उपयोगी है। इसके द्वारा पूर्व स्वीकृत व्रतों में लगे दोष निराकृत हो जाते हैं। कुछ दोष ऐसे भी हैं जिनकी शुद्धि के लिए आलोचना एवं प्रतिक्रमण दोनों किए जाते हैं। इसे तदुभय प्रायश्चित्त कहा गया है। अज्ञान या असावधानी के कारण लगे दोष की शुद्धि विवेकपूर्वक की जाती है। गृहीत वस्तु आदि के त्याग स्वरूप व्युत्सर्ग अथवा काया से ममत्व हटाने रूप कायोत्सर्ग द्वारा भी कुछ दोषों का शोधन किया जाता है। कायोत्सर्ग से देह की जड़ता का नाश होता है, बुद्धि प्रखर होती है, सुख-दुःख को सहन करने की शक्ति का विकास होता है। अनित्य आदि भावनाओं को भावित करने का अवसर प्राप्त होता है तथा चित्त की एकाग्रता बढ़ती है। कुछ दोष, अनशन आदि तपरूप प्रायश्चित्त के द्वारा दूर किए जाते हैं। लघु मासिक (27 दिन) अथवा गुरु मासिक (30 दिन), लघु चातुर्मासिक (108 दिन) अथवा गुरु चातुर्मासिक (120 दिन) तप की आराधना करके प्रायश्चित्त किया जाता है। छह माह से अधिक प्रायश्चित्त देना हो तो दीक्षा छेद किया जाता है। इसके अन्तर्गत दोषी साधु-साध्वी की दीक्षा अवधि में कटौती की जाती है। दीक्षित साधु-साध्वी के महाव्रत आदि में दोष लगने पर उन्हें साधु संघ से मास-दो मास के लिए अलग कर दिया जाता है। इसे परिहार अथवा अनावस्थाप्यार्ह कहा गया है। जब किसी साधु-साध्वी के महाव्रतों की शुद्धि के लिए उन्हें पुनः आरूढ़ किया जाता है तो यह उपस्थापना या मूलार्ह प्रायश्चित्त कहा गया है। कषायदुष्ट, विषयदुष्ट, महाप्रमादी साधु-साध्वी को जघन्य एक वर्ष, उत्कृष्ट 12 वर्ष गृहस्थ वेश पहनाकर संयम पालन करवाते हुए पुनः व्रतों में स्थापित करना पाराञ्चिकार्ह प्रायश्चित्त है। शरीर में चुभे हुए काटे को निकाल देने पर जिस प्रकार शान्ति प्राप्त होती है उसी प्रकार कृत दोष को प्रायश्चित्तों से दूर कर लेने पर आत्मिक शान्ति एवं आनन्द का अनुभव होता है।

2. विनय– विनय शब्द का अर्थ ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि के प्रति आदर भाव अथवा उनका आचरण है। विनय शब्द नम्रता का भी सूचक है। जो मान कषाय का नाशक होता है। विनय के सात प्रकार हैं– 1. ज्ञान विनय, 2. दर्शन विनय, 3. चारित्र विनय, 4. मनोविनय, 5. वचन विनय, 6. काय विनय, 7. लोकोपचार विनय। ज्ञान के प्रति आदर होना ज्ञान विनय है। ज्ञान के प्रति आदर होने पर आचरण सम्भव है और ज्ञान में यह स्पष्ट रहता है कि क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष आदि कषाय त्याज्य हैं। अतः ज्ञान के प्रति विनय करने वाला व्यक्ति क्रोधादि कषायों पर विजय प्राप्त कर सकता है। दर्शन विनय में ज्ञानियों एवं गुरुजनों के प्रति श्रद्धाभाव होता है। उनके साथ व्यवहार करते हुए उनके वचनों को ध्यान से विनम्रतापूर्वक सुना जाता है एवं उनकी सेवा सुश्रूषा की जाती है। उनकी आतापना न हो इसका ध्यान रखा जाता है। इस प्रकार दर्शन विनय की आराधना करते हुए कषायों को नियंत्रित करने की साधना स्वतः सम्पन्न होती है। आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, साधु-साध्वी आदि के प्रति विनय रखने के साथ सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीयचारित्र, परिहारविशुद्धिचारित्र, सूक्ष्मसंपरायचारित्र एवं यथा-ख्यातचारित्र के प्रति विनय होना चारित्र विनय कहा गया है। यह चारित्र विनय दोषरहित आचरण की प्रेरणा देता है। क्रोधादि कषायों को जीतने का सम्बल प्रदान करता है। अतः चारित्र विनय भी कषाय विजय में सहायक है। मनोविनय के अन्तर्गत सावद्य, सक्रिय, कर्कश, निष्ठुर, कठोर आदि अप्रशस्त मन के स्वरूप का त्याग करते हुए असावद्य एवं प्रशस्त मन के प्रति विनय भाव रखा जाता है। प्रशस्त मन रखकर ही कषायों पर विजय पायी जा सकती है। इसी प्रकार अप्रशस्त वचन एवं अप्रशस्त काय का त्याग करते हुए प्रशस्त वचन एवं प्रशस्त काय के प्रति आदर भाव रख कर कषायों पर नियत्रंण किया जा सकता है। लोकोपचार विनय के अन्तर्गत गुरुजनों, पूज्यजनों के प्रति आदरभाव रखा जाता है। रुग्ण, उपकारी जनों के प्रति आदर भाव रखते हुए देशकाल के अनुसार आचरण किया जाता है। इस लोकोपचार विनय में भी साधक का लक्ष्य कषाय विजय ही रहता है।

वैयावृत्त्य– वैयावृत्त्य का तात्पर्य सेवा है। सेव्य की दृष्टि से इसके दस प्रकार कहे गए हैं–1. आचार्य की वैयावृत्त्य 2. उपाध्याय की वैयावृत्त्य 3. शैक्ष अर्थात् नवदीक्षित शिक्षाशील की वैयावृत्त्य 4. ग्लान अर्थात् रोगी की वैयावृत्त्य 5. तपस्वी की वैयावृत्त्य 6. स्थविर, वय, दीक्षा एवं श्रुत में ज्येष्ठ की वैयावृत्त्य 7. साधर्मिक की वैयावृत्त्य 8. कुल, एक आचार्य के शिष्य समुदाय, की वैयावृत्त्य 9. गण, शिक्षा की दृष्टि से एकाधिक आचार्य समुदाय, की वैयावृत्त्य 10. संघ की वैयावृत्त्य। वैयावृत्त्य स्वरूप सेवा तभी सम्भव है जब क्षमाशीलता, सहिष्णुता, विनयशीलता, ऋजुता एवं सन्तोषशीलता हो। इन सबके होने पर कषायविजय की प्रक्रिया स्वतः चलती रहती है। वैयावृत्त्य करते समय क्रोध, मान, माया एवं लोभ जीता जाता है। वैयावृत्त्य से तीर्थंकर नामगोत्र का उपार्जन होता है– वेयावच्चेणं तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबंधइ। –उत्तरा. 29.43

स्वाध्याय– स्व के द्वारा स्व का अध्ययन स्वाध्याय है। इसमें शास्त्रों का अध्ययन भी सहायक होने से उसे भी स्वाध्याय कहा गया है। स्वाध्याय से ज्ञानावरण कर्म का क्षय होता है– **सज्झाएण णाणावरणिज्जं कम्मं खवइ** (उत्तरा.29.18) स्वाध्याय के वाचना, प्रतिपृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा एवं धर्मकथा के रूप में जो पांच प्रकार कहे गए हैं वे भी कर्म-निर्जरा में सहायक हैं। वाचना से महानिर्जरा होती है, प्रतिपृच्छना से कांक्षा मोहनीय कर्म का छेदन होता है, अनुप्रेक्षा से आयुकर्म को छोडकर शेष सात कर्मप्रकृतियों का बंधन शिथिल होता है। कर्म की दीर्घकाल की स्थिति ह्रस्वकाल की हो जाती है। तीव्र अनुभाग मन्द हो जाता है तथा बहुप्रदेश कर्म भी अल्पप्रदेश हो जाते हैं। आयुष्य को भी कदाचित् बांधता है एवं कदाचित् नहीं बांधता है। असातावेदनीय कर्म का बार-बार उपचय नहीं करता। धर्मकथा से भी कर्मों की निर्जरा कही गई है।–

उत्तरा.29.19-23 स्वाध्याय के द्वारा मोहकर्म के दर्शनमोहनीय एवं चारित्रमोहनीय दोनों प्रकारों पर विजय प्राप्त की जाती है। स्वाध्याय से मिथ्यात्व टूटता है एवं कषायों पर भी नियन्त्रण को बल मिलता है। अतः स्वाध्याय तप कषाय-विजय में उपयोगी है।

ध्यान- कर्मक्षय में धर्मध्यान एवं शुक्ल ध्यान की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। ध्यान से अन्तर्मुहूर्त में असंख्यातगुणी एवं अनन्तगुणी कर्मनिर्जरा हो सकती है। कषाय का तीव्रता से क्षय करने में ध्यान सहायक होता है। कषायविजय के लिए आर्त्त एवं रौद्र ध्यान त्याज्य हैं तथा धर्मध्यान उपादेय हैं। मनुष्य अनिष्ट वस्तु, व्यक्ति आदि के संयोग में दुःख का तथा इष्ट वस्तु व्यक्ति आदि के संयोग में सुख का अनुभव करता है- इससे वह आर्त्तध्यान के द्वारा राग-द्वेष की वृद्धि करता है। दूसरे शब्दों में कहें तो वह कषायों की वृद्धि करता है। आर्त्तध्यानी सदैव अनुकूल के संयोग एवं प्रतिकूल के वियोग का चिन्तन करता है। रौद्रध्यान और भी अधिक भयानक है। इसमें हिंसा, क्रोधादि का रौद्र रूप देखने को मिलता है। अतः रौद्रध्यान त्याज्य है। आर्त्तध्यान वाला व्यक्ति क्रन्दन करता है, शोक करता है, आँसू लाता है एवं विलाप करता है। वह अवसाद में भी जा सकता है। रौद्रध्यान में व्यक्ति हिंसा, मृषा, स्तैन्य एवं धनादि भोग-साधनों के संरक्षण के भावों में ग्रस्त रहता है। अतः यह भी कषायवृद्धि का हेतु है। धर्मध्यान एवं शुक्ल ध्यान ये दो ही ध्यान हैं, जो क्रोधादि कषायों का शमन करने में सहायक हैं। धर्मध्यान में जिनेश्वर के वचनों का चिन्तन किया जाता है। अपने दोषों को जानकर उनके निराकरण का उपाय किया जाता है। कर्मफल पर दृष्टिपात कर अपने आचरण को सुधारा जाता है। लोक एवं शरीर के स्वरूप पर विचार कर रागादि से मुक्त हुआ जाता है। धर्मध्यान में वाचना, पृच्छना, परिवर्तना एवं धर्मकथा स्वरूप स्वाध्याय आलम्बन बनता है। धर्मध्यान की चार अनुप्रेक्षाएँ हैं- अनित्यानुप्रेक्षा, अशरणानुप्रेक्षा, एकत्वानुप्रेक्षा एवं संसारानुप्रेक्षा। जो राग-द्वेष एवं क्रोधादि कषायों का शमन करने तथा उनकी धारा को तोड़ने एवं उन पर पूर्ण विजय प्राप्त करने में सहायक है।

शुक्लध्यान के पृथक्त्ववितर्कसविचार एवं एकत्ववितर्क-अविचार भेद आत्मविशुद्धि में अत्यन्त सहयोगी हैं। इनके होने पर ही केवलज्ञान होता है। शुक्लध्यान के अन्तिम दो प्रकार हैं- सूक्ष्मक्रिय अप्रतिपाती तथा समुच्छिन्नक्रिय अनिवृत्ति। ये केवलज्ञान प्राप्त होने के अनन्तर योग-निरोध हेतु एवं शेष अघातिकर्मों के क्षय में सहायक हैं। शुक्लध्यान के चार लक्षण हैं- 1.विवेक 2. व्युत्सर्ग 3. अव्यथा 4. असम्मोह। शुक्लध्यान में आत्मा एवं शरीर में भेदज्ञान स्वरूप विवेक रहता है। शरीर, उपकरण आदि का व्युत्सर्ग होता है अर्थात् उनके प्रति निःसंगता का अनुभव होता है। देव, पिशाच आदि के उपसर्गों में भी किसी प्रकार की व्यथा का अनुभव नहीं होता। सांसारिक मायाजाल में भटकाव नहीं होता। क्षमा, निर्लोभता, आर्जव एवं मार्दव- ये चारों शुक्लध्यान के आलम्बन हैं, जिनके द्वारा क्रमशः क्रोध, लोभ, माया एवं मान पर विजय प्राप्त की जाती है।

व्युत्सर्ग- आभ्यन्तर तप का यह महत्त्वपूर्ण प्रकार है, जिसमें शरीर, गण, उपधि, भक्तपान आदि के प्रति तो आसक्ति एवं ममत्व का त्याग होता ही है, साथ ही भाव व्युत्सर्ग के अन्तर्गत कषाय, संसार एवं कर्म का भी किनारा हो जाता है। व्युत्सर्ग का सामान्य अर्थ है- त्याग। यह व्युत्सर्ग द्रव्य एवं भाव के भेद से दो प्रकार का है। द्रव्य व्युत्सर्ग के चार प्रकार हैं- 1. शरीर व्युत्सर्ग, 2. गण व्युत्सर्ग, 3. उपधि व्युत्सर्ग, 4. भक्तपान व्युत्सर्ग। प्रायः शरीर को मनुष्य मैं अथवा मेरा मानता है। व्युत्सर्ग तप में इन दोनों मान्यताओं का त्याग होता है। वह जिस संघ-समूह में रहता है, जिन उपकरणों या साधनों का प्रयोग करता है, जो आहार-जल ग्रहण करता है उसके प्रति भी ममत्व एवं आसक्ति का त्याग कर असंगता का अनुभव करता है। इस तरह द्रव्य व्युत्सर्ग भी कषाय-विजय में सहायक है। भाव-व्युत्सर्ग के तीन प्रकार हैं- 1. कषाय व्युत्सर्ग, 2. संसार व्युत्सर्ग, 3. कर्म व्युत्सर्ग। कषाय व्युत्सर्ग क्रोध, मान,

माया एवं लोभ के भेद से चार प्रकार का है अर्थात् कषाय व्युत्सर्ग में इन चारों कषायों से अपने को पृथक् अनुभव कर उनका त्याग किया जाता है। संसार-व्युत्सर्ग में वह नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य एवं देव गति के बंध कारणों से विरहित हो मुक्ति की साधना करता है। कर्म-व्युत्सर्ग में ज्ञानावरणादि आठ प्रकार के कर्मों से मुक्ति की उत्कृष्ट साधना होती है।

इस प्रकार तप-साधना के द्वारा समस्त कर्मों को क्षय करने की प्रक्रिया में कषाय समन्वित मोहकर्म का भी क्षय, क्षयोपशम या उपशम किया जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि वह तप-साधना सम्यक् प्रकार से ज्ञानपूर्वक की गई हो। अज्ञान तप कषाय विजय में सहायक नहीं हो पाता है।

-3 के 24-25, कुड़ी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.)

जुआरी सपूतों की दिवाली

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

मेरे पति जुआरी ने सब लुटा दिया जुआ में
एक-एक सामान बेच, घर किया रीता-रीता
बचे चार हड्डियों के ढ़ाचे, उस पर मढ़ी चर्म-चादर
कृश काय देख पड़ी चिन्ता में
क्या खिलाऊँ? क्या पिलाऊँ??
हाथ मल रो पड़ी सोच में
आटा नमक के अतिरिक्त, कुछ न रखा घर में
एक रुपये की मिर्च मंगाई, लाल चटनी उसकी बनाई
रूखी-रूखी रोटी बनाई, खाकर सन्तुष्टि मनाई।
पथ पर पड़े कुछ दीपक
लाकर सजा दी अपनी खोली (कोठरी)
कचरा स्थल पर रस-सने डिब्बे
उठाकर ले आए कोठरी में बच्चे
चाट-चाट कर लिए चटकारे
खुश हो रहे थे मन ही मन में
सड़क पर पटाखे छूट रहे थे
पहुँच गये वहाँ बालक मेरे
देख-देख कर कूद रहे थे
लोट-पोट हो रहे थे बेचारे
बारुद-पटाखों के जले टुकड़े
ढूँढ-ढूँढ कर लाए घर में
जला-जला कर नाच रहे थे
दीपावली मना रहे थे उल्लास से
पर मेरे मन में निर्धनता की होली
दहक-दहक जल रही थी
अन्तरस्थ-लपटें उठ रही थीं
ऐसी होती है, जुआरी सपूतों की दिवाली

-ई-123, नेहरूपार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

शुद्ध संयम विरति के वृन्दावन में प्रवेश के मार्ग

(व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. के प्रवचन से संकलित)

करोड़ों जन्म लेते हैं धरा का भार बनने को।
जन्मते कितने यहाँ शरीरी संत बनने को।।

1. संयमियों की विचरण भूमि- समता
2. संयमियों की वेशभूषा- वैराग्य
3. संयमियों का आंतरिक सम्बन्ध - पाँच समिति तीन गुप्ति
4. बार-बार मिलन- 12 भावनाएँ
5. संयमियों का सर्वस्व- रत्नत्रय
6. संयमियों का प्रिय परिवार- यतिधर्म
7. संयमियों का आहार- शुभ संकल्प, शुद्ध अध्यवसाय
8. संयमियों की सहनशक्ति- परीषह, उपसर्ग सहना अंतिम दम तक
9. संयमियों की दिनचर्या- पंचाचार
10. संयमियों की दिनचर्या- निरतिचार शुद्ध संयम
11. संयमियों की कोशिश- आत्मध्यान की तन्मयता
12. संयमियों की श्वास- पाँच महाव्रत
13. संयमियों को चिंता- आत्मगुण रक्षण की क्षण-क्षण
14. संयमी का व्यायाम- सेवा
15. संयमी का आभूषण- तप एवं स्वाध्याय।

-संकलन : श्रीमती सुनीता मेहता
467-ए, 7 वीं 'ए' रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)

क्या आधुनिक युग में कषायों की आत्यन्तिक निवृत्ति संभव है?

डॉ. राजकुमार छाबड़ा

इस शीर्षक के उत्तर में मुझे जिनवाणी के पाठकों को कुछ कहने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक आगमाभ्यासी यह जानता है कि– "इस काल में यह असंभव है।" इस स्थापना के हेतुओं को यहाँ दोहराना प्रासंगिक होगा–

1. कषायों की आत्यन्तिक निवृत्ति अर्थात् पूर्णक्षय, क्षपक श्रेणी में घटित होती है। जिसका इस पंचम काल में भरत क्षेत्र में अभाव है। जो आधुनिक युग से भी पूर्व प्रारम्भ हो चुका है।
2. पंचमकाल में उत्पन्न मानव के प्रथम उत्कृष्ट संहनन का अभाव होता है, वह केवल अन्तिम तीन हीन संहननों में से किसी एक से युक्त होता है, अतः वह उत्कृष्ट ध्यान या क्षपक श्रेणी के अयोग्य होता है। अतः इस काल का कोई जीव पूर्ण विशुद्धि अर्थात् केवलज्ञान को भी प्राप्त नहीं हो सकता।
3. पूर्ण कषायक्षय के लिए क्षायिक सम्यग्दर्शन का होना अनिवार्य है क्योंकि क्षायिक सम्यग्दृष्टि ही क्षपक श्रेणी चढ़ सकता है, अन्य नहीं, परन्तु क्षायिक सम्यग्दर्शन का इस काल में किसी के सद्भाव संभव नहीं है, क्योंकि न तो कोई क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव इस काल में यहाँ उत्पन्न होता है और न कोई इस काल का सम्यग्दृष्टि मानव क्षायिक सम्यग्दर्शन प्रगट करने की योग्यता रखता है। इस प्रकार की पर्यायगत योग्यता के अभाव का अनुमान इस तथ्य से हो जाता है कि क्षायिक सम्यग्दर्शन की प्रतिष्ठापना केवली या श्रुत केवली के पादमूल में ही होती है, और उनका इस काल में यहाँ अभाव है। अतः यह सिद्ध हो जाता है कि इस पंचमकाल में क्षायिक सम्यग्दर्शन, क्षपक (एवं उपशम) श्रेणी और केवलज्ञान असंभव है। अब, यहाँ पाठक आगमाभ्यासी होने के साथ दार्शनिक भी हो तो उसे जैन दर्शन का वैशिष्ट्य समझने में देर नहीं लगेगी।

मैंने प्रदत्त प्रश्नात्मक शीर्षक को जैन दर्शन के सन्दर्भ में उठाया है और इस सन्दर्भ में से कुछ आगे भी विचार करना चाहूँगा। फिलहाल 'आधुनिक युग' को केन्द्र में रखकर विचार करने की आवश्यकता है। यद्यपि इस पृथ्वी पर मानवजाति के विभिन्न समूह विभिन्न युगों में जीते हैं, लेकिन हम कह सकते हैं कि हमारा समाज और हमारे सदृश अन्य समाज औसत रूप से 'आधुनिक' युग में जीते हैं। 'आधुनिक' से अर्थ है कि हम आधुनिक पाश्चात्त्य शिक्षा, विज्ञान और तकनीक को सहज रूप से स्वीकार करते चले जा रहे हैं। साथ ही, इन तत्त्वों के साथ हम अपने प्राचीन तत्त्वज्ञान को भी जोड़ लेते हैं, बिना यह विचार किये कि कहीं इस गठजोड़ में कोई असंगति तो नहीं है।

आधुनिक पश्चिम की उदारवाद, प्रजातंत्र, मौलिक अधिकार, मानव जाति की एकता, बुद्धिवादिता आदि जो देन हैं वे ग्राह्य हैं, परन्तु उनकी पुद्गलवादी ऐकान्तिक संस्कृति के जो दुष्परिणाम हैं उनसे कोई राष्ट्र नहीं बच सकता।

आज मानव का जो भौतिक पर्यावरण है वह इतना दूषित, कलुषित, संघर्षमय कठोर हो गया है कि उससे कोई व्यक्ति, समाज और राष्ट्र प्रभावित हुए बिना

*आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 1-2 अक्टूबर 2016 को निमाज, जिला-पाली में आयोजित 'जैन आगम साहित्य में कषाय विषयक चिन्तन' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत एवं तदनन्तर संशोधित आलेख।

नहीं रह सकता। उदाहरणार्थ, एक शोध के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग के कारण मानव का स्वभाव उग्र होता जा रहा है। ऐसी अवस्था में मानव सहिष्णु, दयालु और प्रशम परिणामी कैसे हो सकता है। बहुआयामी पर्यावरण प्रदूषण मानव को उत्तरोत्तर हिंसक बनाता जा रहा है।

आधुनिक पाश्चात्त्य वैज्ञानिक संस्कृति में धर्म और अध्यात्म, योग और निर्वाण के लिए कोई स्थान नहीं है। यहाँ एकान्त पुद्गलवाद है, सब कुछ **$E=MC^2$** में गर्भित है। भारत के वेदान्ती इस निष्कर्ष से प्रसन्न हैं, क्योंकि वे **E**(ऊर्जा) को चेतना से समीकृत करने की भ्रान्ति से ग्रस्त हैं।

आधुनिक पश्चिम सृष्टि रचना की कल्पना **(Myth of Creation)** से मुक्त हैं। यद्यपि वह निर्माता ईश्वर **(Creater God)** को अपास्त कर चुका है, लेकिन उसके स्थान पर उसने **"God Particle"** की परिकल्पना **(Myth)** खड़ी कर दी है। यह एकवाद **(Monism)** है जिसका अनेकान्तवाद खण्डन करता है।

सत्ता सप्पडिवक्खा। सत्ता अपने प्रतिपक्ष सहित होती है। अतः यदि कोई **"God Particle"** है तो अवश्य कोई **"Non-God Particles"**भी होने चाहिए, इस पर शायद अभी तक वैज्ञानिकों ने विचार नहीं किया है।

यह सत्य है कि आधुनिक वैज्ञानिकों की उपलब्धियाँ चमत्कारिक हैं। लेकिन इससे पुद्गल की अनन्त धर्मात्मकता की ही पुष्टि होती है, इसे लोक-अलोक की पूर्ण व्याख्या नहीं कहा जा सकता। यही नहीं, वैज्ञानिक सिद्धान्तों का चरित्र अन्तिम रूप से तो परिकल्पनात्मक **(Hypothetical)** ही होता है, यह हमें नहीं भूलना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि 'आधुनिक युग' हमें केवल आधा-अधूरा मानव ही देता है। यदि हमें पूर्ण और यथार्थ मानव चाहिए, तो हमें विज्ञान के साथ धर्म और अध्यात्म को भी स्वीकार करना होगा। यह सन्देश हमें अनेक चिन्तकों ने दिया है, जिनमें से मैं यहाँ अल्बर्ट आइन्स्टीन और सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का उल्लेख कर सकता हूँ। आधुनिक संस्कृति के प्रतिपक्ष के रूप में प्राचीन संस्कृति विशेषकर भारतीय संस्कृति का मानव जाति के लिए क्या महत्त्व है, इसमें जिज्ञासा रखने वालों को मैं प्रो. गोविन्दचन्द्र पाण्डे की कृति ''भारतीय परम्परा के मूल स्वर'' के स्वाध्याय का सुझाव दूँगा।

इस प्रकार यह कुछ स्पष्ट मान सकते हैं कि हमें वैज्ञानिक ज्ञान के अतिरिक्त अन्य पराम्परागत ज्ञान अर्थात् किसी आगम परम्परा की आवश्यकता है। यहाँ आगम परम्परा के चुनाव का प्रश्न उठता है। इस सन्दर्भ में मैं केवल यही कहूँगा कि यदि हम दीर्घकालीन भारतीय दार्शनिक वाद-विवाद पर दृष्टिपात करें, उन खण्डन-मण्डनों पर दृष्टिपात करें, जिनमें दार्शनिकों ने सतत रुचि दिखाई है और जिन्हें मैं निरर्थक नहीं मानता, तो स्पष्ट है कि भारतीयता और दार्शनिकता प्रत्येक व्यक्ति को स्वविवेक से अपने लिए किसी भी आगम परम्परा को स्वीकार करने का अनुमोदन करती है, यही नहीं, वह चाहे तो एक नवीन परम्परा को भी जन्म दे सकता है। मेरा विवेक मुझे अनेकानेक 'ज्ञानों' में से 'जैन तत्त्वज्ञान' को चुनने की प्रेरणा देता है।

जैन दर्शन धर्मशास्त्र में भी दर्शन शास्त्र के समान (1) उद्देश, (2) लक्षण और (3) परीक्षा की पद्धति को स्वीकार करता है। (द्रष्टव्य, आचार्य वट्टकेर विरचित मूलाचार अध्ययन 1, गाथा 4 पर आचार्य वसुनन्दिकृत वृत्ति : त्रिविधा चास्य शास्त्रस्या-चाराख्यस्य प्रवृत्तिः, उद्देशो, लक्षणं परीक्षा इति।) जैन दर्शन और धर्म प्रारम्भ से ही परीक्षा प्रधानी रहा है। इन्द्रभूति गौतम ने महावीर से अनेकानेक प्रश्न किये थे और महावीर ने उनका बोधगम्य विभज्यवादी वाणी द्वारा समाधान किया था और, इन्द्रभूति ने तर्क संगत होने से उन समाधानों को अंगीकार किया था। परीक्षा प्रधानता का निर्वाह आचार्य कुन्दकुन्द, समन्तभद्र, सिद्धसेन, हरिभद्र, अमितगति, पण्डित टोडरमल, श्रीमद् राजचन्द्र प्रभृति सभी जैन दार्शनिक करते आये हैं।

जिनागम में परीक्षा के साथ आज्ञा को भी स्थान प्राप्त है। इसका कारण यह है कि महावीर सर्वज्ञ

और पूर्ण वीतराग हैं, आप्त पुरुष हैं, अतः वे अन्यथावादी नहीं हो सकते। इस प्रकार महावीर के वचनों में श्रद्धा उत्पन्न होती है। लेकिन, जिस प्रकार हम किसी भी वैज्ञानिक प्रतिपादन की परीक्षा करते हैं, उसी प्रकार प्रभु महावीर द्वारा प्रतिपादित किसी भी सिद्धान्त की परीक्षा संभव है। उदाहरणार्थ, मोक्ष तत्त्व का निरूपण तत्त्वार्थ सूत्र और उसकी टीकाओं द्वारा उद्देश, लक्षण और परीक्षा विधि से किया गया है।

संक्षेप में भारतीय धर्म या धर्मों का सार यह है-

1. जीव अविनश्वर है। वह एक देह में आयु पर्यन्त रहता है तदनन्तर देहान्तर को प्राप्त होता रहता है। जब तक कि वह कर्मबन्धनों से पूर्णतया मुक्त नहीं हो जाता।
2. जीवन में कहीं हरियाली होती है तो कहीं रेगिस्तान। लेकिन, यदि व्यक्ति किन्हीं भी परिस्थतियों में घोर कर्म करता है तो वह अपने लिए अत्यधिक विषम और अशुभ संसार की रचना करता है, जिसकी काल मर्यादा अत्यन्त दीर्घ हो सकती है।
3. व्यक्ति के चारों ओर कैसा ही घोर रेगिस्तान हो, उसमें सदैव उस घोरातिघोर शैतान को स्वयं के अहिंसक पराक्रम से जीतने की शक्ति होती है।
4. व्यक्ति का शत्रु व्यक्ति के बाहर नहीं है। आत्मा ही आत्मा का मित्र है और आत्मा ही आत्मा का शत्रु है। अतः प्रत्येक आत्मा को भेदविज्ञानपूर्वक अपना उद्धार करना चाहिए।

धर्म का मूल सम्यग्ज्ञान या वीतराग विज्ञान है, तो वह समस्त आवेशों-कषायों को निर्मूल करने में समर्थ है। ज्ञान के इस अचिन्त्य मूल्य को रेखांकित करते हुए पंडित दौलतरामजी छहढाला में कहते हैं-

ज्ञान समान न आन, जगत में सुख को कारण।
इह परमामृत जन्म-जरा-मृतु रोग निवारण।।
कोटि जन्म तप तपैं, ज्ञान बिन कर्म झरैं जे।
ज्ञानी के छिन माहिं, त्रिगुप्ति तै सहज टरैं ते।।
मुनिव्रत धार अनन्त बार, ग्रीवक उपजायौ।
पै निज आतमज्ञान बिना, सुख लेश न पायौ।।
तातैं जिनवर कथित, तत्त्व अभ्यास करीजै।
संशय विभ्रम मोह त्याग, आपौ लख लीजे।।
यह मानुष पर्याय, सुकुल सुनिवौ जिनवाणी।
इहविधि गयें न मिलैं, सुमणि ज्यों उदधि समानी।।
धन समाज गज वाज, राज तो काज न आवै।
ज्ञान आपको रूप भये, फिर अचल रहावै।।
तास ज्ञान को कारण, स्व-पर विवेक बखानो।
कोटि उपाय बनाय, भव्य ताको उर आनो।।
जे पूरब शिव गये, जाहिं अरु आगे जे हैं।
सो सब महिमा ज्ञानतनी, मुनिनाथ कहै हैं।।
विषय चाह दव दाह, जगत जन अरनि दझावै।
तास उपाय न आन, ज्ञान घनघान बुझावैं।।
पुण्य-पाप फल मांहि, हरख बिलखौ मत भाई।
यह पुद्गल परजाय, उपजि विनसै फिर थाई।।
लाख बात की बात, यहै निश्चय उर लाओ।
तोरि सकल जगदन्दफन्द, निज आतम ध्याओ।।

-चौथी ढाल, 4-9

जैन धर्म-दर्शन में आत्मविद्या-पराविद्या-ज्ञान योग को जो स्थान प्राप्त है उसे पण्डित दौलतरामजी उपर्युक्त छन्दों द्वारा स्पष्ट कर रहे हैं। यह ज्ञान कैसा है? यह आत्मज्ञान है, भेदविज्ञान है, समत्व योग है जो संसार-शरीर-भोगों से विरक्त है। अतीन्द्रिय ज्ञान अतीन्द्रिय सुख जिसे उपादेय है, जिनकी उसे सतत ललक है, वह आत्मतुष्ट, निष्काम ज्ञानी सम्यग्दृष्टि है। वह निःशंकितादि अंगों से सहित है, भय, मद और अबौद्धिकता से रहित है, प्रशम, संवेग, अनुकम्पा और आस्तिक्य से युक्त है।

आचार्य कुन्दकुन्द दर्शन अर्थात् सम्यग्दर्शन (आत्मदर्शन) को धर्म का मूल कहते हैं और जो दर्शन से भ्रष्ट है उसे ही वास्तविकरूप से भ्रष्ट मानते हैं चाहे लेश्या की दृष्टि से वह कितना ही शीलवान हो। एक मिथ्यादृष्टि जीव उत्कृष्ट शुक्ल लेश्यावाला हो सकता है और इसलिए वह व्यावहारिक दृष्टि से चरित्रवान और

उत्तम पुरुष भी गिना जाता है, परन्तु उसके अंशमात्र भी कषाय का अभाव नहीं होने के कारण वह संसारचक्र को भेदने में असमर्थ है और इसका मूल कारण है कि वह कषाय परम्परा के स्रोत मिथ्यात्व से ग्रस्त है।

यहाँ जैन मनोविज्ञान पर दृष्टिपात करना चाहिए। इसके अनुसार जो ज्ञानी है, वह नियम से प्रशमभावी है, उसके क्रमशः कषायों का अभाव हो जाता है और वह मुख्यरूप से शुभ लेश्याओं में वर्तन करता है। लेकिन, जो अज्ञानी मिथ्यादृष्टि है वह नियम से कषायी जीव है, लेकिन कषायभाव के व्यक्ताव्यक्त या तीव्र-मंद उदय भेद के कारण वह अशुभ या शुभ लेश्याओं में वर्तन करता है। अतः शुभ लेश्यावाला बहिरात्मा प्रशमभावी प्रकटरूप से दिखता है, परन्तु वैसा वह परमार्थतः नहीं है।

जैन अध्यात्म द्रव्यानुयोग का विषय है। यह अनुयोग आत्मतत्त्व का प्रतिपादन मुख्य रूप से द्रव्यार्थिकनय से करता है। यहाँ पर्यायार्थिक नय विषयक गुणस्थान चर्चा गौण है। अतः इस अनुयोग की दृष्टि में ज्ञानी या आत्मज्ञानी को, करणानुयोग की दृष्टि में असंयमी होने पर भी, संयमी, निरास्रव और अबन्धक स्वीकार किया गया है। (समयसार, गाथा 166,177-178, 315)

अतः द्रव्यानुयोग की दृष्टि से हम कह सकते हैं कि आत्मानुभवी पुरुष कषायों से पूर्णतया मुक्त है। यह आत्मज्ञान-आत्मदर्शन-तत्त्वार्थश्रद्धान-पक्षातिक्रान्ता -सम्यग्दर्शन आज भी संभव है, अतः जो इस आधुनिक युग में आत्मज्ञानी-तत्त्वज्ञानी-भेदविज्ञानी पुरुष है वह कषायों से पूर्णतया मुक्त है- आत्यन्तिकरूप से मुक्त है- ऐसा जैन द्रव्यानुयोग घोषणा करता है। यह घोषणा सयुक्तिक है। ज्ञानी जीव के दर्शन मोह और अनन्तानुबंधी कषाय का अभाव है तथा शेष चारित्र मोह में अन्तःकोटाकोटि सागर से अधिक कर्मों की स्थितिबंध की योग्यता नहीं है। यही नहीं, ज्ञानी के अन्तःकोटाकोटि सागर से अधिक स्थिति के कर्म सत्ता में भी नहीं पाये जाते हैं। यहाँ ज्ञानधारा में सतत वृद्धि हो रही है और कर्मधारा की सतत हानि। ऐसा जीव अधिक-से अधिक कुछ संख्यात सागरों में नियम से रत्नत्रय की पूर्णता को प्राप्त करके निर्वाण को प्राप्त हो जाता है। इन सब, अंकों को जोड़ने पर जैन द्रव्यानुयोग-अध्यात्म अविरत सम्यग्दृष्टि को जीवन्मुक्त कहने से भी नहीं हिचकिचाता।

इस लेख का जो विषय है उस पर प्रारम्भ में हमने करणानुयोग या कर्म सिद्धान्त की दृष्टि से विचार किया है। अभी हमने द्रव्यानुयोग की दृष्टि से विचार किया। अब हमें यह भी देख लेना चाहिए कि इस सम्बन्ध में आचार्य समन्तभद्र, विद्यानन्दि आदि जैन नैयायिकों का क्या मत है। आचार्य समन्तभद्र युक्त्यनुशासन में कहते हैं-

एकान्त-धर्माऽभिनिवेश-मूला,
रागादयोऽहंकृतिजा जनानाम्।
एकान्त-हानाच्च स यत्तदेव,
स्वाभाविकत्वाच्च समं मनस्ते।।5।।

यह कारिका और इस पर आचार्य विद्यानन्दि की 'अलंकार' टीका विशेष मननीय है। आचार्य के अनुसार एकान्तवाद मिथ्यादर्शन है और यह मिथ्यादर्शन अहंकार-ममकार स्वरूप सचिवों का योग पाकर रागादि दोषों का कारण होता है। यद्यपि उदासीन मिथ्यादृष्टि के रागादि नहीं होते, लेकिन अनन्त संसार का बंध कराने वाले रागादि तो वहाँ भी अव्यक्तरूप से विद्यमान होते ही हैं। एकान्तवाद की हानि से प्रकट होने वाला सम्यग्दर्शन आत्मा का स्वभाव भाव है अतः वहाँ नियम से मन का साम्य, समता भाव, संयम पाया जाता है। अर्थात् अविरत सम्यग्दृष्टि सर्वथा असंयत नहीं है वह भी मिथ्यात्व और अनन्तानुबंधी कषाय के अभाव से कथंचित् संयत है। (देखें, मुनिश्री प्रणम्यसागरजी कृत युक्त्यनुशासनालंकार का हिन्दी अनुवाद (अप्रकाशित))

जब जिनशासन के प्रभावक आचार्यों की बात चलती है तो मन मयूर नाच उठता है। आचार्य विद्यानन्दि आप्त परीक्षा, पृष्ठ 4 पर कहते हैं कि बंध दो प्रकार का है- भाव बंध और द्रव्य बंध। भाव बंध क्रोधादि स्वरूप

है और इसका हेतु मिथ्यादर्शन है। (तत्र भावबन्धः क्रोधाद्यात्मकः, तस्य हेतुर्मिथ्यादर्शनम्) यहाँ आचार्य ने बंध के अविरति आदि हेतुओं का भी उल्लेख किया है, उनका निषेध नहीं किया है।

आचार्य का अभिमत है कि कषाय भाव, विभाव भाव या संसार का मूल हेतु मिथ्यात्व भाव है, जिसका अभाव होने पर अनन्त संसार समाप्त हो जाता है। अब, परिमित संसारी के जो शेष बंध के हेतु पाये जाते हैं उनकी क्रमशः हानि हो जाती है और फलस्वरूप बंध या संसार की हानि होती है और अन्ततः अन्तरात्मा परमात्मा हो जाता है।

मिथ्यात्व के सद्भाव में बंध के सभी हेतुओं का सद्भाव है। इसके रहते हुए अन्य हेतुओं का चित्तभूमि से लोप संभव नहीं है। मिथ्यादृष्टि के व्रत, तप, संयम, प्रशम भाव सभी आभासमात्र हैं, यथार्थ नहीं। (इसका अर्थ यह नहीं लेना चाहिए कि व्रत, तप आदि का यहाँ निषेध किया जा रहा है।) दूसरी ओर, जिसके मिथ्यात्व का अभाव है अर्थात् जो सम्यग्दृष्टि है उसके नियम से क्रमशः शेष बंध के हेतुओं का अभाव घटित होता ही है।

सम्यग्दृष्टि के परमाणुमात्र भी राग नहीं होता। (समयसार, गाथा 201-202) वह सदैव अपने को एकत्व विभक्त टंकोत्कीर्णज्ञायकभावस्वरूप ग्रहण करता है, अंशमात्र भी रागभाव, विभावभाव, परभाव, पर पदार्थ को स्वभाव के रूप में ग्रहण नहीं करता। यदि किसी जीव को रागभाव, जो कि अनात्म भाव है, उसमें उपादेय बुद्धि है, तो वह आत्म-अनात्म के, जीव-अजीव के भेदज्ञान से शून्य होता हुआ मिथ्यादृष्टि सिद्ध होता है।

समयसार के बिना सम्यग्दर्शन की चर्चा अधूरी है। इस परमागम के रहस्य का विवेचन शब्दों में संभव नहीं है, न यहाँ विस्तार के लिए अवकाश है। जो भेद विज्ञानी है, जिनेश्वर का लघु नन्दन है वह अबन्धक, निरास्रव, ज्ञायक और अज्ञानमय मोह-राग-द्वेष से मुक्त है। ज्ञानी के सब भाव ज्ञानमय होते हैं और अज्ञानी के सब भाव अज्ञानमय होते हैं। (समयसार, 128-129) ऐसा होने पर भी ज्ञानी के अस्थिरता के कारण कर्म बन्ध होता रहता है, जिसकी चिन्ता आचार्य कुन्दकुन्द को भी होती है। (समयसार, गाथा 171-172)

समयसार और उस पर आत्मख्याति टीका नयचक्र सिद्धान्त का अध्यात्म में अनूठा प्रयोग है। वहाँ गाथा 171-172 और इनकी टीका में स्वीकार किया गया है कि जब तक यथाख्यातचारित्र की प्राप्ति नहीं होती तब तक ज्ञानी के भी राग का सद्भाव है और तद्जन्य बन्ध भी नियम से है, तथापि ज्ञानी के बुद्धिपूर्वक अज्ञानमय मोह-राग-द्वेष भावों का अभाव होने से उसे निरास्रव और अबन्धक कहा गया है। आचारांग में भी कहा गया है- 'समत्तदंसी न करेति पावं।'(3.2.28) अर्थात् समत्वदर्शी पाप नहीं करता। इस सूत्र का विवेचन करते हुए मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ) समत्तदंसी पाठ के स्थान पर सम्मत्तदंसी पाठान्तर की संभावना स्वीकार करते हैं। इस पाठान्तर पर उनका विवेचन यहाँ उद्धृत करने योग्य हैः- "सम्यक्त्वदर्शी पाप नहीं करता" यह बहुत ही रहस्यपूर्ण सूत्र है। जो पाप के पर्याय स्वरूप को देखता है, वह पाप नहीं कर सकता। पाप वही करता है, जो उसके यथार्थ स्वरूप को नहीं जानता, नहीं देखता। "जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः, जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।" मैं धर्म को जानता हूँ, फिर भी उसका आचरण नहीं करता। मैं अधर्म को जानता हूँ, फिर भी उसका वर्जन नहीं करता, यह स्थूलचित्त की अनुभूति है। सूक्ष्मचित्त में होने वाला सम्यक्त्वदर्शन असम्यक् आचरण में नहीं ले जाता। (आयारो, सं. मुनि नथमल, जैन विश्व भारती, 1974, पृष्ठ 129)। अंत में-

प्रश्नः-क्या इस आधुनिक युग में कषायों की आत्यन्तिक निवृत्ति संभव है?

उत्तरः- विभज्यवाद द्वारा- 1. स्यात् असंभव है, 2. स्यात् संभव है।

-सहआचार्य, दर्शन शास्त्र विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

माया महाठगिनी

श्री पारसमल चण्डालिया

मानव स्वभाव को स्थानांग सूत्र स्थान 4 में मधुकुंभ से इस प्रकार उपमित किया गया है-

1. मधु कुंभ और मधु का ढक्कन।
2. मधु कुंभ और विष का ढक्कन।
3. विष कुम्भ और मधु का ढक्कन।
4. विष कुम्भ और विष का ढक्कन।

मधु कुम्भ की तरह ही चार प्रकार के पुरुष होते हैं- 1. एक कुम्भ मधु से भरा है और मधु का ही ढक्कन है। किसी पुरुष का हृदय पाप और कालुष्य रहित होता है और वह मधुरभाषी भी होता है वह पुरुष मधुकुम्भ और मधु के ढक्कन जैसा होता है। 2. किसी पुरुष का हृदय पाप रहित, कालुष्य रहित होता है, किन्तु कटुभाषी होता है। वह मधुकुम्भ और विष के ढक्कन जैसा है। 3. किसी पुरुष का हृदय तो कलुषित होता है, परन्तु जिह्वा से मधुर वचन बोलता है वह पुरुष विषकुंभ और मधु के ढक्कन जैसा होता है। 4. किसी का हृदय भी पाप एवं कालुष्य पूर्ण होता है और कटुभाषी भी होता है वह पुरुष विषकुंभ और विष के ढक्कन जैसा होता है। इन चार प्रकार के पुरुषों में से प्रथम कोटि के उत्तम पुरुष होते हैं जिनकी कथनी और करनी समान होती है। विचार और आचार में कोई भेद रेखा नहीं होती है। ऐसे पुरुष अपना भी कल्याण करते हैं और इनसे दूसरों का भी हित होता है। दूसरी श्रेणी के जो पुरुष होते हैं वे भीतर से सरल होते हुए भी कटुभाषी होते हैं, उनसे सहज बचाव किया जा सकता है। तृतीय श्रेणी में वे लोग आते हैं जो अन्दर से कलुषित हृदय वाले होते हुए भी ऊपर से अपने आप को अच्छा सिद्ध करने की कोशिश करते हैं इन लोगों से बच पाना अत्यन्त मुश्किल है। ऐसे लोग तन से उजले और मन के मैले होते हैं। इनके माया जाल में कोई भी उलझ जाता है। हृदय कलुषित होते हुए भी ऊपर से सरलता का दिखावा करने वाले तीसरी श्रेणी वाले मायावी पुरुष 'मुख में राम बगल में छुरी' की कहावत को चरितार्थ करते हैं।

वर्तमान युग में चारों ओर माया का ही बोल-बाला है। आधुनिकता की ओट में असलियत खो गई है और असलियत का स्थान कृत्रिमता ने ले लिया है। लोग चेहरे की मुस्कान को, रुदन को, व्यवहार को सबको आर्टिफिशियल बना रहे हैं, कृत्रिम बना रहे हैं। सरलता और सहजता विरले ही लोगों में देखने को मिलती है। होठों पर लिपिस्टिक, चेहरे पर पाउडर, बालों पर डाई, नाखून पर नेलपॉलिश सब कुछ दिखावा है। असलियत पर आवरण डाला जा रहा है। मुस्करा रहा है तो वह भी दिखावटी है, रो रहे हैं तो वह भी दिखावटी है। रिश्ते हैं तो उनको निभाना भी मजबूरी है और इन सबका कारण है भीतर और बाहर की भिन्नता। माया में वास्तविकता नहीं मात्र औपचारिकता होती है। कथनी और करणी का अंतर आदमी के विश्वास को समाप्त कर देता है।

माया एकः रूप अनेक

माया को समझने के लिये मा+या के आशय पर ध्यान देना चाहिए। 'मा' अर्थात् मार्ग 'या' अर्थात् यातना, जिस मार्ग पर चलने से यातना मिले उसका नाम है 'माया'। 'मा' अर्थात् मत 'या' अर्थात् चलो। माया की टेढ़ी डगर पर मत चलो। वह स्वयं कहती है मेरी डगर पर चलना खतरनाक है, अतः मत चलो। माया असत्य की जननी है और शालीनता की विरोधी है।

माया का कार्य है, जीव को झूठे आकर्षणों के जाल में उलझाए रखना। माया बांस की जड़, भैंस के सींग, गोमूत्र की धारा और बांस के छिलके के समान अत्यन्त कुटिल होती है।

चार कषायों में क्रोध, मान को नाग कहा है किन्तु माया के लिए नागिन शब्द का प्रयोग किया है। जिसे नागिन काट ले उसका बच पाना कठिन है। दंभ, कपट, छद्म, बहाना, कुटिलता, विश्वासघात, धोखा

आदि माया के ही पर्याय हैं। भगवती सूत्र (श. 12 उ.5) के अनुसार माया के पन्द्रह नाम हैं- 1. **माया**- कपटाचार, 2. **उपाधि**- ठगने के उद्देश्य से व्यक्ति के पास जाना, 3. **निकृति**- ठगने के अभिप्राय से अधिक सम्मान देना, 4. **वलय**- वक्रतापूर्ण वचन, 5. **गहन**- ठगने के विचार से अत्यन्त गूढ भाषण करना, 6. **नूम**- ठगने के हेतु निकृष्ट कार्य करना, 7. **कल्क**- दूसरों को हिंसा के लिए उभारना, 8. **कुरूप**- निन्दित व्यवहार करना, 9. **विघ्नता**- ठगाई के लिए कार्य मंद गति से करना, 10. **किल्विधिक**- भांडों के समान कुचेष्टा करना, 11. **आहरणता**- अनिच्छित कार्य भी अपनाना, 12. **गूहनता**- अपनी करतूत को छिपाने का प्रयत्न करना, 13. **वंचकता**- ठगी, 14. **प्रति-कुंचनता**- किसी के सरल रूप से कहे गये वचनों का खण्डन करना। 15. **सातियोग**- उत्तम वस्तु से हीन वस्तु की मिलावट करना। ये सब माया की ही विभिन्न अवस्थाएँ हैं।

माया की भयंकरता

माया को शल्य कहा है। शल्य यानी कांटा। कांटा चाहे पैर में चुभे या जूते में, पीड़ा देता ही है। आँख में गिरा फूस या दांत में फंसा तिनका जिस तरह हर क्षण खटकता है, बेचैन बनाता है वैसे ही माया शल्य भी आत्मा को परेशान करने वाला है। कांटा निकलते ही राहत मिलती है। वैसे ही शल्य से आहत आत्मा को शल्य रहित होने पर ही राहत मिल सकती है। तीन कषायों को शल्य नहीं कहा है, किन्तु माया को शल्य कहा गया है। क्योंकि जैसे कांटा बाहर दिखाई न दे फिर भी दर्द देता है वैसे ही क्रोध, मान की तरह माया भले ही बाहर दिखाई न दे किन्तु वह भीतर ही भीतर दूसरों के लिए अहित करती है। ज्ञानियों ने **'माई मिच्छादिट्ठी अमाई सम्मदिट्ठी'** मायावी को मिथ्यादृष्टि और अमायावी को सम्यग्दृष्टि कहा है। जहाँ हृदय में वक्रता और व्यवहार में वंचना हो वहाँ वीतराग धर्म का निवास नहीं हो सकता है। माया पूर्वक की गई उत्कृष्ट साधना भी साधक को विराधक बना देती है जो संसार वृद्धि का कारण बनती है।

व्यावहारिक कार्य में भी विश्वास के अभाव में सफलता संदिग्ध रहती है तो साधना में क्षेत्र में मायावी की सफलता असंभव है। माया साधना की नौका में छिद्र का काम करती है। छिद्रवाली नौका कभी भी लक्ष्य तक नहीं पहुँचा सकती है। आगमकार फरमाते हैं- **'माया मित्ताणि नासेइ'** (दशवै. अ.8, गाथा 38) माया से मित्रता का नाश होता है। रावण ने राम के साथ और दुर्योधन ने पाँच पांडवों के साथ माया (कपट) की तो न केवल मित्रता का नाश हुआ अपितु रावण और कौरव कुल का ही विनाश हो गया। मायावी दूसरों को ठग कर अपने आपको होशियार और बुद्धिमान समझता है। पर ऐसा न समझे कि मैं दूसरों को ठग सकता हूँ, किन्तु कभी तो सेर को सवासेर मिलता ही है। हम दूसरों को नहीं ठग रहे हैं, किन्तु हम ऐसा करके अपने आपको ठग रहे हैं- स्वयं के साथ धोखा कर रहे हैं। दीवार पर फैंकी गई गेंद लौटकर स्वयं पर ही आती है और दूसरों की आँखों में मिर्ची डालने पर स्वयं की भी आँखों में जलन होती है। ऐसे ही दूसरों के साथ छल एवं प्रवंचना का व्यवहार करने वाला स्वयं को ही ठग रहा है। माया से क्षणिक लाभ भले ही मिलता हो किन्तु परिणाम तो भयंकर होता है, दुःखदायी होता है। माया स्लोपॉइजन (धीमा विष) है, जो धीरे-धीरे असर करता है।

माया की भयंकरता समझाते हुए प्रभु सूयगडांग सूत्र अध्ययन 2, उद्देशक 1 में इस प्रकार फरमाते हैं-

जइ वि य णिगणे किसे चरे,
जइ वि य भुंजिय मासमन्तसो।
जे इह मायाइ मिज्जई,
आगन्ता गब्भा य एन्तसो।।

अर्थात् जो पुरुष मायादि कषायों से युक्त है वह चाहे नग्न रहे, शरीर को कृश कर डाले और महीने-महीने की तपस्या करे फिर भी उसे अनन्तकाल तक संसार में परिभ्रमण करना पड़ेगा।

जे यावि बहुस्सुए सिया, धम्मिय माहण भिक्खुए सिया।
अभिणूम कडेहि मुच्छिए, तिव्वंते कम्मेहिं किच्चई।।

जो लोग मायाप्रधान अनुष्ठानों में आसक्त हैं वे चाहे बहुश्रुत हों, धार्मिक हों, ब्राह्मण हों या भिक्षुक हों,

कर्मों द्वारा अत्यन्त पीड़ित किये जाते हैं।

माया, असत्य की माता है। शील (सदाचार) रूपी कल्पवृक्ष को काटने वाली कुल्हाड़ी है और अविद्या की आधार-भूमि है। यह दुर्गति में ले जाने वाली है। आगमकार फरमाते हैं- **'माया गइ पडिग्घाओ'** (उत्तरा. अ. 9, गाथा 54) माया से सद्गति का नाश होता है।

यह माया, तिर्यंच जाति में उत्पन्न होने का बीज, मोक्षपुरी के द्वार को दृढ़ता से बन्द करने वाली अर्गला और विश्वास रूपी वृक्ष के लिए दावानल के समान है। विद्वानों के लिए यह त्याग करने योग्य है।

कैसा होता है मायावी?

बोलना कुछ और करना कुछ, यह मायावी का मुख्य लक्षण है। मायावी के लिए नीतिकारों ने स्पष्ट कहा है-

मुखं पद्मदलाकारं वाचा चन्दनशीतला।
हृदयं कर्तरी तुल्यंत्रयं धूर्तस्य लक्षणम्।।

धूर्त व्यक्ति का मुख कमल की तरह खिला हुआ रहता है, उसकी वाणी चन्दन की तरह शीतलता का अहसास कराती है किन्तु **'हृदयं कर्तरितुल्यं'** अर्थात् उसका हृदय कैंची की तरह काटने का काम करता है। वह घर, परिवार, समाज आदि संगठनों में भेद डालने का ही चिंतन किया करता है। मायावी का हृदय अत्यन्त गूढ़ होता है। वह दांव पेच करने में कुशल होता है। मायावी ने सारे संसार को ठगा है। काँच और कांटा भले ही शरीर में दिखाई न दे फिर भी पीड़ा तो पहुँचाते ही हैं। वैसे ही माया भले ही बाहर दिखाई न दे, किन्तु मायावी व्यक्ति अपने स्वभाव से बाज नहीं आता। फलस्वरूप 'माया तैर्यग्योनस्यं' अर्थात् माया करने से तिर्यंच गति का बंध होता है। तिर्यंच गति में जाने के जो चार कारण बताये हैं उनमें दो कारण तो माया के ही हैं- 1. माया-कपट करना और, 2. गूढ़ माया करना।

जो मायावी होता है, उसकी कथनी और करणी में अंतर होता है। यानी उसकी मनोवृत्ति अन्दर और बाहर से भिन्न होती है। मन की वृत्ति जब अन्दर और बाहर एक सी नहीं होगी तो परिणाम क्या होगा? जैसे नेगेटिव और पोजेटिव तार अलग होते ही लाइट का फ्यूज उड़ जाता है। लाइट बंद हो जाती है, वैसे ही आचार और विचार की विषमता व्यक्ति को धर्म और साधना से, सुख और शान्ति से दूर कर देती है।

मायावी पुरुष की वाणी और व्यवहार में तालमेल नहीं होता है। माल जापान का और उसे अमेरिका का कहकर बेचते हैं। घी वेजिटेबल होगा और उसे शुद्ध देशी घी बताएंगे। व्यापार में हर वस्तु में मिलावट है। अर्थ लाभ के लिए खाद्य पदार्थों में स्वास्थ्य विघातक वस्तुएँ मिलाई जा रही है। मिलावट, कम-ज्यादा माप-तौल, असली दिखा कर नकली वस्तुओं का विक्रय आदि माया के ही रूप हैं और ऐसा करने वाले तिर्यंच गति में जाने का लाइसेंस खरीद रहे हैं, यह ज्ञानियों का फरमान है।

मायाचारी जीव, मायाचार से अपनी आत्मा को ही ठग कर स्वधर्म और सद्गति का नाश करते हैं।

मायावी की बगुला भक्ति

बगुला हंस जैसा ही सफेद होता है। किन्तु अन्दर से काला होता है। एक पैर ऊँचा करके जल में इस तरह से खड़ा रहता है मानो विशिष्ट प्रकार की तप साधना कर रहा हो। जैसे ही मछली दिखाई देती है वह अपनी चोंच से उसे पकड़ लेता है। इसी तरह से कपटी पुरुष ऊपर से सरलता का व्यवहार करते हुए अपने माया जाल में भोले लोगों को उलझा देते हैं। ऐसे लोग हृदय हीन होते हैं। कुटिलता में चतुर और कापट्ययुक्त बकवृत्ति वाले पापी मनुष्य जगत् को ठगने के लिए माया का सेवन करते हैं, किन्तु वे स्वयं अपनी आत्मा को ही ठगते हैं।

रामायण का प्रसंग है। एक बार राम, लक्ष्मण और सीता वनवास के दौरान सरोवर के किनारे टहल रहे थे। राम ने देखा बगुला पानी में टांग पर खड़ा है। अर्ध निमीलित नेत्रों से मानो किसी विशिष्ट ध्यान साधना में तल्लीन है। उसकी कायिक स्थिरता को देखकर राम ने लक्ष्मण को सम्बोधित करते हुए कहा-

पश्य लक्ष्मण पंपायां बकः परमधार्मिक।
शनैः शनैः पदं धत्ते जीवानां वधशंकया।।

हे लक्ष्मण! इस बगुले को जरा देखो तो सही।

इसकी वृत्तियों को देखने से ऐसा लग रहा है मानो यह कोई उच्च कोटि का ध्यान साधक है। चलते समय भी यह शनैः शनैः कदम उठाकर रख रहा है ताकि किसी जीव की हिंसा न हो जाए। अभी राम की बात पूरी भी नहीं हो पाई थी, तभी सरोवर से आवाज आई-

किं पुनर्वर्ण्यते राम! येनाऽहं निष्कुली कृतः।
सहवासिनो हि जानन्ति चरित्रं सहवासिनां।।

मर्यादा पुरुषोत्तम की उत्कृष्ट विचारधारा को सुनकर जल में निवास करने प्राणियों की एक अस्पष्ट ध्वनि सुनाई दी कि- हे राम! तुम किसकी प्रशंसा कर रहे हो। जिस बगुले ने हमारे पूरे परिवार को काल के गाल में पहुँचा दिया है। प्रति समय जल जन्तुओं को पकड़ने की चेष्टा करने वाले बगुले को हम बहुत अच्छी तरह पहचानते हैं क्योंकि जो जिसके साथ रहता है वही उसके चरित्र को जानता है। आप इसे नहीं जानते हैं। जलचर की इस बात से राम का भ्रम निवारण हो गया। सत्य कहा है-

तन उजला मन सांवला, बगुला कपटी भेख।
इण सूं तो कागा भला, जो भीतर बाहर एक।।

बगुले का जीवन जीने वाले कभी भी ताप और पाप से नहीं बच सकते। साधना के क्षेत्र में कदम बढ़ाने वाले को चाहिये कि मन से पावन एवं व्यवहार से सरल बनें। मन में कालुष्य है तो तन को धोने से कुछ नहीं मिलेगा।

माया को कैसे जीतें?

माया विजय का उपाय बताते हुए प्रभु दशवैकालिक सूत्र, अध्ययन 8, गाथा 37 में फरमाते हैं- '**मायं चज्ज्वभावेणं**'। सरलता से माया को वश में करें। जो माया (कपट) का त्याग कर सरल बनते हैं उनकी ही नैया भवसागर से पार होती है। जहाँ सरलता नहीं, वहाँ नाव किनारे तो क्या लगे, चलती तक नहीं। कवि के शब्दों में-

कपट गांठ हिरदे नहीं, सबते सरल स्वभाव।
नारायण ता भगत की लगी किनारे नाव।।

माया के कारण संसार परिभ्रमण बढ़ता है। माया भगवान की विरोधी है। जहाँ माया होगी वहाँ भगवान नहीं होंगे। या तो हृदय में माया रहेगी या राम। रात और दिन, दूध और दही, विष और अमृत, अमावस और पूनम एक साथ नहीं रह सकते। वैसे ही माया और मुक्ति एक साथ नहीं रह सकते। अतः मुमुक्षु आत्माओं का यह दायित्व बनता है कि माया का परित्याग करके सरल बनें। सरलता ही सिद्धि का सोपान है। कहा भी है-

सरल जनों की सरल गति, वक्रजनों की वक्र।
सीधा जाता तीर ज्यों, चक्कर खाता चक्र।।

इस अवसर्पिणी के 19 वें तीर्थंकर मल्लिनाथ, पूर्वभव की सूक्ष्म माया के शल्य के कारण स्त्री-भाव को प्राप्त हुए (ज्ञाताधर्म कथा, अ.8) इसलिए जगत् का द्रोह करने वाली माया रूपी नागिन को सरलता रूपी औषधि से जीत लेना चाहिए। इससे आनन्द की प्राप्ति होती है।

उपसंहार

उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 29 में माया-विजय का लाभ बताते हुए प्रभु महावीर ने गौतम स्वामी से कहा-"**माया-विजएणं अज्जवं जणयइ, माया-वेयणिज्जं कम्मं ण बंधइ, पुव्वबद्धं च णिज्जरेइ।**" माया-विजय को जीतने से आर्जव (सरलता) गुण की प्राप्ति होती है और सरलता को प्राप्त हुआ जीव माया वेदनीय-माया के द्वारा भोगने योग्य कर्मों का बंध नहीं करता और पहले बंधे हुए कर्मों की निर्जरा करता है।

जो सरलतापूर्वक अपने दोषों की आलोचना करते हैं, वे सभी प्रकार के दुष्कर्मों का क्षय कर देते हैं और जो कुटिलतापूर्वक आलोचना करते हैं, वे अपने छोटे दुष्कर्म को भी मायाचार के कारण बढ़ाकर बड़ा कर देते हैं। जो मन से भी कुटिल है और वचन से भी कुटिल है, उस जीव की मुक्ति नहीं हो सकती। मुक्त वे ही होते हैं, जो मन-वचन और काया से सरल हों।

इस प्रकार मायाचारी कुटिल मनुष्यों को प्राप्त होने वाली उग्र कर्मों की कुटिलता का विचार कर के जो बुद्धिमान् हैं, वे तो मुक्ति प्राप्त करने के लिए माया का त्याग कर सरलता का ही आश्रय लेते हैं।

-7/14, उत्तरी नेहरु नगर, बिट्ठल बस्ती,
पो. ब्यावर-305901, जिला-अजमेर (राज.)

संघ-सेवा से जुड़ें- समर्पण, स्नेह एवं सूझ का परिचय दें

प्रस्तोता: श्री नौरतनमल मेहता

संघ की वार्षिक साधारण सभा एवं सम्मान-समारोह के दिन प्रवचन-सभा में संघ नायक सहित संत-सतीवृंद के हृदयोद्गार-

क्रियोद्धार-भूमि भोपालगढ़ में संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण-सभा के साथ गुणी अभिनन्दन एवं सम्मान-समारोह का आयोजन रविवार, 17 सितम्बर 2017 को रखा गया। वार्षिक साधारण सभा के पूर्व अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के आयोजन क्रमश: 15 व 16 सितम्बर, 2017 को उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुए। संघ एवं संघीय संस्थाओं की संयुक्त वार्षिक आम सभा के पूर्व प्रवचन का कार्यक्रम श्री जैन रत्न विद्यालय परिसर में रखा गया। समीपवर्ती एवं सूदूरवर्ती क्षेत्रों के श्री संघ व श्रद्धालुजन प्रवचन-स्थल पर समय से पूर्व ही सामायिक वेश में आकर बैठ गए। देखते-ही-देखते सैकड़ों भाई-बहिनों से विशाल प्रांगण भरता गया।

प्रात: करीब 9 बजे **श्रद्धेय श्री योगेश मुनि जी म.सा.** ने प्रार्थना के अनन्तर प्रवचन का शुभारंभ किया। उन्होंने संघ के संगठन का स्वरूप, संघ सदस्यों का संघ के प्रति दायित्व और गौरवशाली रत्नसंघ में श्रेष्ठ कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता विषयक प्रतिबोध दिया।

मुनिश्री ने कहा कि जीवन में उलझने आती हैं, आएंगी भी, किन्तु संघ-सेवी समस्या का सम्यक् समाधान तो निकालता ही है, वह सेवा-धर्म की साधना में न झुकता है और न ही थकता है। मुनि श्री ने विषय को स्पष्ट करते कहा कि जिन्दे लोगों के सामने रुकावटें आती हैं, मुर्दे के रास्ते में रुकावटें नहीं आती, उसे तो स्वत: रास्ता मिलता है। आप सब जीवन-जीने वाले सुझजन हैं इसलिए पग-पग पर आई रुकावटों को दूर करने में सजगतापूर्वक लग जायं तो संघ-समाज में निखार आएगा ही। आप आने वाली विघ्न-बाधाओं से निराश-हताश न होकर आशा व साहस से प्रयास करेंगे तो आपको तो संतोषानुभूति होगी ही, संघ भी प्रगति-पथ पर स्वत: अग्रसर होता जाएगा। इसके लिए हर संघ सदस्य को अपना निरीक्षण करना होगा, यही समय का तकाजा है।

उन्होंने सुई, कंघा और दर्पण के उद्धरणों के माध्यम से संघ सेवा करने हेतु प्रेरित करते हुए कहा कि सुई जोड़ने का काम करती है, आप संघ-सेवा में जुड़कर अन्यान्यों को संघ-सेवा से जोड़ें। कंघा बालों की उलझन मिटाता है, संघ में जो भी विघ्न-बाधाएं हैं, समस्याएं हैं या उलझनें हैं उन्हें दूर करें। दर्पण चेहरे व शरीर की बनावट-सजावट देखने का माध्यम है, आप दर्पण की तरह समय-समय पर संघ की सौम्यता निहारें।

मुनिश्री ने कहा कि संघ में छोटे-बड़ों का आदर करें, बड़े छोटों को कर्त्तव्य पथ-पर आगे बढ़ाएं। बड़ों की शालीनता और छोटों के विनय-व्यवहार से संघ में स्वस्थ वातावरण बनता है। आप-हम-सब संघ के अंग हैं। हम-सब संघ के कार्यकर्त्ता हैं। आप श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता तभी बन सकेंगे जबकि आप प्राण-प्रण से संघ के लिए अपने-आपको न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहेंगे। मुनिश्री ने हर कार्यकर्त्ता को प्रेरित करते कहा कि आप इतना संकल्प कर लें कि हमें श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता बनना है। संघ-दीप्ति में आप-सबकी भूमिका व भागीदारी हो, आप-सबकी भावना उत्तरोत्तर संघ-सेवा में आगे बढ़े और संघ को सक्रिय-सक्षम व स्वावलम्बी बनाने में आप अपनी शक्ति प्रदर्शित करें इसी शुभ-भावना के साथ...।

महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. ने अपने मनोभाव रखते कहा कि आप-सब प्रवचन श्रवण की

शुभ भावना से यहां उपस्थित हैं इसलिए आपको ध्यान रहे कि प्रवचन में प्रकृष्ट वचन होते हैं जो जीवन की दशा और दिशा सुधारने का माध्यम बनते हैं। वैशाख शुक्ला एकादशी को प्रभु महावीर ने चतुर्विध संघ की स्थापना की। चतुर्विध संघ में हम साधु-साध्वी हैं तो आप श्रावक-श्राविकाएं भी हैं। प्रभु ने संघ का निर्माण किया, जैन समाज का नहीं। समाज और संघ के अन्तर को रेखांकित करते हुए महासती जी ने कहा-समाज नैतिकता को लेकर चलता है जबकि धर्म-संघ आध्यात्मिकता को लेकर चलता है। गुरु-दर्शन और गुरु के मुखारविंद से प्रवचन-श्रवण संघ के आयाम हैं, समाज के नहीं।

आप ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप में तो सजग रहें ही, संघ-सेवा में भी सक्रिय बनें। एक नर्स जो मरीजों की सेवा करती है वह भी पहले ट्रेनिंग लेती है। आप धर्म संघ की सेवा में प्रवेश करें तो खन्ति-मुति आदि गुणों के साथ संघ के प्लेटफार्म पर चलें तो कोई दुविधा-द्वन्द्व आयेगा ही नहीं। हम-सबको संघ नायक पर गर्व है पर संघ नायक भी हम पर गर्व कर सकते हैं क्या ? आप गुरु को श्रद्धा से देखें तो गुरु में आपको साक्षात् भगवान के दर्शन होंगे। आप-हम-सब संघ-सेवा में सक्रिय बनें, यही मंगल मनीषा है।

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. ने कहा कि अज्ञ से विज्ञ, विज्ञ से विशेषज्ञ, विशेषज्ञ से सर्वज्ञ और सर्वज्ञ से वीतराग बनाने वाली आगमवाणी का उद्घोष है कि जिस जीव को तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा तीर्थ में प्रवेश मिल जाता है, वह स्वयं तो तिरता ही है, औरों को भी तारता है। तीर्थ में जो भी सम्मिलित है वह सिद्धालय में जाने की योग्यता-क्षमता-पात्रता प्राप्त कर लेता है।

मुनिश्री ने कहा-धर्म तीर्थ तारने वाला है। तीर्थ भी दो प्रकार के हैं। एक है-द्रव्य तीर्थ और दूसरा है-धर्म तीर्थ। द्रव्य तीर्थ में जाने से तन का ताप शान्त हो सकता है, प्यास से व्याकुल बना अपनी प्यास बुझाकर शांत हो सकता है और द्रव्य तीर्थ में जाकर शरीर का मैल भी हटा सकता है। आप अभी द्रव्य तीर्थ में नहीं, धर्म तीर्थ में बैठे हैं।

धर्म-तीर्थ में प्रवेश पाने का लाभ बताते हुए मुनिश्री ने कहा कि हम साधु-साध्वी तीर्थ में हैं तो आप श्रावक-श्राविका भी तीर्थं में शुमार हैं। इस तीर्थं में आने पर कषायों की ताप शान्त हो सकती है तो तृष्णा की प्यास भी बुझ सकती है। आप हम धर्म तीर्थं के सदस्य हैं इसका हमें गर्व है। धर्म तीर्थ में सम्मिलित होना हमारी अनन्त-अनन्त पुण्यवाणी का प्रतीक है। आप धर्म तीर्थ के केवल मात्र सदस्य ही नहीं, संगठित सदस्य हैं। वैसे व्यापारियों के संघ बनते हैं, मजदूरों के संघ होते हैं तो रोगियों-भोगियों और रागियों के संघ मिलते हैं। आप धर्म-संघ के सदस्य हैं। धर्म-संघ में जिसने भी प्रवेश लिया, वह वंदनीय-अभिवंदनीय होता है। भगवान स्वयं धर्म-तीर्थं में सम्मिलित होने वालों को वंदनीय कहते हैं, महिमा-गान करते हैं। धर्म-संघ में भी हमें वह संघ मिला है जिसमें मर्यादाओं का रक्षण होता है। आपके संघ में रत्न हितैषी शब्द है, यह गौरव की बात है तो आपको प्रयुक्त शब्दों को सार्थक बनाना है।

आज धर्म-संघ का अधिवेशन है। आप विचार करें, सोचें, चिंतन करें कि इस संघ का विकास कैसे हो? आप धर्म-संघ के गौरव को बढ़ाने के लिए यहां उपस्थित हुए हैं। इसी क्रियोद्धार भूमि में पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज ने मर्यादा की पाल बांधी इसलिए आप-हम-सभी धर्म संघ के सदस्यों का कर्त्तव्य है कि समय के बहाव में नहीं बहकर हमें मर्यादाओं का पूरी निष्ठा से पालन करना है। जमाना बदला है, बदलता रहेगा, किन्तु धर्म-संघ की मर्यादाएं वैसी की वैसी हैं। मर्यादाएं बदलने वाली नहीं हैं इसलिए हम-सब मर्यादा में रहें, मर्यादाओं का पालन करें।

अधिवेशन के प्रसंग से हर संघ सदस्य से निवेदन है कि आपका कोई व्यवहार-कोई प्रवृत्ति संघ-विकास में आड़े नहीं आनी चाहिए। संघ में संघ के छोटे-से-छोटे सदस्य में कभी कोई बात चुभनी नहीं चाहिए। क्यों ? तो संघ का हर सदस्य संघ का अंग है। आप-हम-सब संघ के अंग हैं, इसलिए हमको सेवा और संघ

नायक के प्रति पूर्ण समर्पित होकर रहना चाहिए।

मुनिश्री ने कहा-व्यक्ति आज है, कल नहीं रहेगा, किन्तु संघ सदा रहने वाला है। आप-हम कहते भी हैं-संघ जयवन्त है, जयवन्त रहेगा। समर्पण तीन तरह का होता है। एक अधूरा समर्पण, दूसरा समर्पण और तीसरा पूर्ण समर्पण। अधूरा समर्पण समस्याएं पैदा करता है। समर्पण समस्याओं का समाधान निकालता है और पूर्ण समर्पण में समस्याएं आती ही नहीं। आप यहां विशाल संख्या में बैठे हैं, आप-सबका पूर्ण समर्पण हो जाए इससे अच्छी और कोई बात हो ही नहीं सकती।

जरूरत है बड़ों का छोटों के प्रति स्नेहभाव हो। जो भी बड़े हैं वे सोचें कि बड़े कैसे बनें ? आप चाहे संघ के अध्यक्ष हैं, मंत्री या महामंत्री हैं अथवा किसी पद के अधिकारी हैं, आप बड़े इसलिए हैं कि क्योंकि हजारों लोगों ने आपको स्वीकार किया है। आप जो भी बड़े हैं, पदाधिकारी है, प्रमुख हैं आपका छोटों पर स्नेह रहे और जो भी संघ के सदस्य है वे बड़ों के प्रति शुभभावना बनाए रखें।

जयकारों के बीच आचार्यप्रवर का आगमन हुआ। **आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव** ने भक्तों की भावनानुसार उपस्थित विशाल जनमेदनी को फरमाया कि हर परिवार में, हर समाज में, हर प्रदेश व देश में यहां तक कि पूरे विश्व की सम्पूर्ण गतिविधियां नियम से चलती हैं, पूरी होती हैं। बुजुर्गों ने अनुभवजन्य दोहे में बड़ी मार्मिक बात कही है-

सबसे बढ़कर नेम है, नेम से बढ़कर प्रेम।
जां घर नेम न प्रेम है, वहां न कुशल न क्षेम।।

आचार्यप्रवर ने दोहे का हार्द समझाते फरमाया कि हर सदस्य चाहे वह किसी परिवार का है, किसी गांव-नगर या महानगर का है, किसी संघ या समाज का है वह यदि नियम के अनुसार चलता है तो चलते-चलते वह आगे बढ़ता है, विकास करने लगता है। उपस्थित जन समुदाय का आह्वान करते आचार्यप्रवर ने फरमाया कि आपने जो भी दायित्व लिया है, आत्म-साक्षी से स्वीकृत-दायित्व का भावनापूर्वक निर्वहन करने का ध्यान रखें। आप-सब चेतन हैं। कहना भी चेतन को ही पड़ता है, जड़ को कुछ कहा नहीं जा सकता। घड़ी के कल-पुर्जे सही स्थान पर हैं, अपनी गति से चलते हैं, तो सही समय बताते हैं। आप सुख-शांति से चलें तो आपकी गतिविधि सुचारु बनी रहती है, संघ में शांति और व्यवस्था रहती है। आपको चलना है। आप चलते भी हैं। कई मोटर गाड़ी से चलते हैं, कई रेलगाड़ी से चलते हैं कुछ वायुयान से चलते हैं, चलें सुख-शांति से चलें, लक्ष्य प्राप्ति के उद्देश्य से चलें।

आप-सब गौरवशाली धर्म-संघ के सदस्य हैं मैं अपील करूँगा कि तिरने और तारने का दायित्व जैसे हम साधु-साध्वियों पर है वैसे आप श्रावक-श्राविकाओं पर भी है। आप नियम में-मर्यादा में रहें और संत-सतियों की मर्यादा-रखने में सहयोगी बनें। जब तक आप मर्यादाओं का पालन करते रहेंगे, हमारी मर्यादाओं के रक्षा-संवर्धन में सहकारी बनें रहेंगे, धर्म-संघ दीप्तिमान रहेगा। जीवन में नियम का बहुत महत्त्व है। जीवन में नेम चाहिए तो नेम से बढ़कर प्रेम की भी उतनी ही जरुरत है। अनुभवियों ने तो यहां तक कह दिया 'नेम से बढ़कर प्रेम है।' जहां प्रेम होता है वहां किसी काम में गड़बड़ नहीं होती।

एक पुराने दृष्टान्त को उद्धृत करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि किसी गांव के एक भक्त ने किसी आचार्य के चरणों में अपने क्षेत्र की विनति रख दी। विनति के बाद वह अपने गांव पहुंचा। उसने गांव वालों के समक्ष कहा कि मैंने आचार्य देव के समक्ष गांव की विनति रख दी है। कोई मीटिंग नहीं, अध्यक्ष-मंत्री को जानकारी नहीं फिर भी गांव वालों ने एक स्वर से कहा कि हम सब विनति में साथ हैं। गांव वालों ने विनति करने वाले भाई का स्वागत-अभिनन्दन किया। यह होता है गांव का आदर्श। गांव का ही नहीं कई घरों में ऐसे आदर्श होते हैं, जो आज भी प्रेरणादायी कहे जा सकते हैं। एक घर में माता जी नहीं, बच्ची छोटी है, पर घर आए मेहमान को वह खिला-पिलाकर विदा करती है, तो वह उस घर का मेहमान के लिए कितना ऊंचा आदर्श है। वह जहां भी

जाएगा, घर के संस्कारों को कहेगा जरुर। आप- सब संघ के सदस्य हैं, संघ भी साधारण संघ नहीं, धर्म-संघ के सदस्य है और वह भी रत्न हितैषी संघ के। अत: हर सदस्य का कर्त्तव्य होना चाहिए कि वह संघ-सेवा में जितना बन सके समर्पित भाव से काम करे। संघ-सेवा में यदि कहीं-कोई कमजोरी है तो मानना होगा उसका न नेम है और न ही प्रेम है। जहां नेम और प्रेम नहीं, वह चाहे व्यक्ति है या परिवार, संघ है या समाज वहां शांति और आनन्द कैसे आयेगा?

आप-सब सुज्ञ हैं, अत: कर्त्तव्य-निर्वहन में चाहे आप श्रावक संघ के सदस्य हैं या श्राविका मंडल के अथवा युवक परिषद के सदस्य हैं, आप संघ-सेवा में समर्पित हों तो संघ उत्तरोत्तर प्रगति करेगा। आप-सब कर्त्तव्य को पूरी निष्ठा से निभाएं। मैं आप सबसे यह भी आग्रह करूँगा कि आप संघ के सदस्य बनकर संघ-सेवा में जुट जायं तो संघ की जाहोजलाली बढ़ती जायेगी।

आचार्य श्री ने संघ की सदस्यता की आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में उदाहरण रखते फरमाया कि एक चंचल प्रकृति के बालक को उसके पिता ने स्कूल में भर्ती करवाया। पिता ने स्कूल के अध्यापक से कह दिया कि इसे पांच-चार दिन कक्षा में बैठा कर देखें, यदि इसकी चंचलवृत्ति कम होती है तो फिर नाम लिख दें।

स्कूल का अध्यापक हाजरी लेता है तो एक-एक कर सबके नाम बोलता है। उस बच्चे ने एक-दो दिन तो देखा फिर पिताजी से कहा-मैं भी स्कूल जाता हूँ मास्टर साहब सबके नाम बोलकर हाजरी लेते हैं, मेरा नाम तो बोलते ही नहीं। आप भी संघ सदस्य हैं, बच्चे की तरह क्या आपके मन में यह बात आती भी है या नहीं कि मैं संघ में हूँ क्यों नहीं मुझे कोई काम दिया जाता ? आपका नाम तिरने और तारने वाले धर्म-संघ में आना चाहिए। आप संघ के अधिवेशन में आए हैं तो आपके मन में उस बच्चे की तरह दर्द होना चाहिए कि मैं भी संघ का सदस्य हूँ मुझे क्यों सेवा का काम नहीं मिल रहा है ? आप संघ से जुड़ें अपने परिजनों व इष्ट मित्रों को संघ से जोड़ें अपनी शक्ति व सामर्थ्यानुसार ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की साधना और संघ-सेवा में सक्रिय होकर तिरने-तारने वाले संघ के अंग बनें, यही अपेक्षा है।

आचार्यप्रवर के आशीर्वाद-स्वरूप संक्षिप्त उद्बोधन के अनन्तर कार्यक्रम संचालक श्री नेमीचंद जी कर्नावट ने आवश्यक सूचनाएं उद्घोषित कीं। प्रवचन सभा में मासक्षपण के प्रत्याख्यानों में चैन्नई महानगर से उपस्थित हुई सुश्राविका एवं गोटन के जैनेतर बंधु को आचार्य प्रवर ने 31 दिवसीय तपाराधना के प्रत्याख्यान करवाए। दोनों तपस्वियों का माल्यार्पण से स्वागत शॉल ओढ़ाकर बहुमान एवं धार्मिक साहित्य भेंट कर सत्कार किया गया। तपस्वी भाई-बहिनों का भोपालगढ़ संघ की ओर से अभिनन्दन किया गया। प्रतिदिन की भांति उपवास-आयंबिल एवं अन्य त्याग-तप के प्रत्याख्यान के अनन्तर आचार्यप्रवर के मंगल-पाठ पश्चात् प्रवचन-सभा विसर्जित हुई।

यह भूल जाता है

प्रार्थना करते समय यह समझता है
कि भगवान सब सुन रहा है,
पर **निंदा** करते हुए यह भूल जाता है।
पुण्य करते समय यह समझता है
कि भगवान सब देख रहा है,
पर **पाप** करते समय यह भूल जाता है।
दान करते हुए यह समझता है
कि भगवान सबमें बसता है,
पर **चोरी** करते हुए यह भूल जाता है।
प्रेम करते हुए यह समझता है कि
पूरी दुनिया भगवान ने बनाई है,
पर **नफरत** करते हुए यह भूल जाता है।
और फिर भी
मनुष्य अपने आपको **बुद्धिमान** समझता है।

-संकलन : श्री राजीव माथुर (नेपालिया)
मुशियों की हवेली, क्षेत्रपाली चबूतरा, जुनी धान मण्डी, जोधपुर-342001 (राज.)

जिज्ञासा-समाधान

संकलित

(उत्तराध्ययनसूत्र पर सन्त-सतियों द्वारा प्रदत्त उत्तरों के आधार पर संकलित)

प्रश्नः- राग-द्वेष और मोह को नष्ट करने के कौन-कौन से उपाय हैं? (उत्तराध्ययन 32.9)

उत्तरः-

1. **प्रकाम रस सेवन एवं अतिभोजन निषेध-** आत्मसाधक को रसों (विगयों) का अधिक सेवन नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह उन्माद कारक है। साधक को अतिमात्रा में भी भोजन नहीं करना चाहिये, क्योंकि इससे इन्द्रिय अग्नि शान्त नहीं होती। साधक को संतुलित आहार करना चाहिये।
2. **अब्रह्मचर्य पोषक बातों का त्याग-** विविक्त शय्यासन सेवी, अल्पभोजी एवं जितेन्द्रिय साधक के चित्त को राग-द्वेष रूपी शत्रु परास्त नहीं करते। साधक अपना आवास स्थान, आसन स्त्रियों से दूर रखे। स्त्रियों से सम्पर्क व संसर्ग नहीं रखे। विविक्त स्थान पर भी स्त्रियों के आ जाने पर इनके रूप, लावण्य, हास्य, मधुर आलाप, चेष्टा एवं कटाक्ष आदि को चित्त में बिल्कुल स्थान न दे। कामराग से उनकी ओर न देखे, न चाहे, स्त्री सम्बन्धी चर्चा न करे तब वह मोह को जीत लेता है।
3. मनोज्ञ-अमनोज्ञ रूप, शब्द, गंध, रस, स्पर्श और भावों में आत्मसाधक विरक्त रहे। अनासक्त रहे, उनमें राग-द्वेष के परिणाम नहीं करे। इस तरह प्रभु आज्ञा के अनुसार जीवन जीने वाला राग-द्वेष व मोह को नष्ट कर देता है।

प्रश्नः- निर्ममता व निरहंकारी भाव कैसे प्राप्त हो? (उत्तराध्ययन 35.21)

उत्तरः- पैंतीसवें अध्ययन का नाम अनगार मार्ग गति है। इस अध्ययन में मोक्षमार्गी मुनि को ममता और अहंकार को जीतने के अनेक प्रायोगिक उपाय बताये गए हैं, जिसका परिणाम केवली होकर मुक्ति पाना बताया गया है। इस अध्ययन में हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्म-सेवन, इच्छा-काम, लोभ, संसक्त स्थान, गृहनिर्माण, अन्नपाठ, धनार्जन की वृत्ति, प्रतिबद्ध शिक्षा, स्वादवृत्ति और पूजा की अभिलाषा, ये तेरह प्रकार बताये हैं। इन वृत्तियों से जो विरत है, वही श्रमण है, वही ममकार, अहंकार को जीत पाता है। सबसे महत्त्वपूर्ण है संग (आसक्ति) का त्याग करना।

1. **संगों को जानकर त्यागे-** आसक्ति के निमित्त संगों को जानकर त्याग दे।
2. **हिंसादि आस्रवों का परित्याग-** हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्म सेवन, इच्छा, काम और लोभ का सर्वथा त्याग करे।
3. **अणगार का निवास और गृहकर्म समारम्भ-** मनोहर चित्रों से युक्त, माल्य व धूप सुवासित किंवाड वाले, श्वेत चंदोवा से युक्त स्थान की इच्छा न करे। भिक्षु, श्मशान, शून्यगृह, वृक्षतल तथा परकृत स्थान में रहे। भिक्षु न घर बनाये, न दूसरों से बनवाये, यह आरम्भयुक्त कार्य है।
4. **भोजन पकाने एवं पकवाने का निषेध-** भक्त-पान पकाने और पकवाने में हिंसा होती है। साधु छहकाय के जीवों की रक्षार्थ ऐसा

कार्य न करे।

5. **क्रय-विक्रय का निषेध-** सोने और मिट्टी के ढेले को समान समझने वाला भिक्षु सोने व चाँदी की मन से भी इच्छा न करे। वह सभी प्रकार के क्रय-विक्रय से विरत रहें।

6. **भोजन विधि-** मुनि आगमानुसार और सामुदायिक गवेषणा करे। लाभ-अलाभ में सन्तुष्ट रहे। रसना पर विजय करे, अलोलुप एवं अमूर्च्छित होकर आहार करे। जीवन निर्वाह के लिए खाए, स्वाद के लिए नहीं।

7. **पूजा सत्कार आदि से दूर रहे-** मुनि अर्चना, रचना, पूजा तथा ऋद्धि, सत्कार और सम्मान की मन से भी अभिलाषा न करे।

8. **मुनि शुक्लध्यानलीन, अनिदान, अकिंचन हो-** मुनि धर्मध्यान या शुक्लध्यान में लीन रहे, निदान रहित और अकिंचन रहे। जीवन पर्यन्त कायासक्ति छोड़कर रहे।

9. **अन्तिम आराधना-** काल धर्म उपस्थित होने पर मुनि आहार का त्याग करके संलेखना कर ले। ऐसा मुनि दुःखों से मुक्त हो जाता है। यही निर्ममता और निरहंकारी भावों को प्राप्त करने का उपाय वीतराग भगवन्तों ने बताया है। इस उपाय को अपनाने वाला स्वयं वीतराग, सर्वज्ञ बन जाता है।

दीक्षा तिथि पर

सुमिरण करो हीरा गुरुवर का

श्री शान्तिलाल कुचेरिया

श्रद्धा से दिल में धर लो, सुख सागर लहरायेगा।
सुमिरण करो हीरा गुरुवर का, वो मन-वांछित फल पायेगा।।
पीपाड़ नगर की पुण्यधरा,कुल गाँधी बड़ भागी।
मोतींलाल पिता माता मोहिनी की किस्मत जागी।
कुण जाणै कुल उजियारो, दुनियाँ में छा जायेगा।।
सुमिरण करो.....।।1।।

इण कुलियुग में हम सबको, व्यसन-मुक्ति का त्याग कराते हैं।
हस्ती गुरु से पीपाड़ शहर में, दीक्षा ली सौभागी।
राग से वैराग का पथ, जग को दिखलायेगा।।
सुमिरण करो.....।।2।।

कर्म मैल का शोषण करने, तप का तेज बढ़ाया।
कठोर निष्कलंक संयम से, शासन खूब दिपाया।
अहो भाव से करले वंदन, पावन हो जायेगा।।
सुमिरण करो.....।।3।।

शून्य ग्रहों में ध्यान लगाते, देव चरण में झुकते।
राजादिक श्रद्धालुजन अंगुलि दाँतों तले दबाते।
लब्धिवंत गुरुवर महिमा का, पार नहीं पायेगा।।
सुमिरण करो.....।।4।।

हीरा गुरुवर प्यारा है, सबका नयन सितारा है।
जो भी वन्दे हीरा गुरु को, उसका वारा-न्यारा है।
मोतीलालजी पिता आपके, माँ मोहिनी के लाल जी।।
भर यौवन में संयम लेके अद्भुत किया कमाल जी।
विनय भाव को धारा है वो हम सबका प्यारा है।
शिवसुख 'शान्ति' पाने को, गुरु शरण स्वीकारे।
हीरा गुरु की नेक नज़र से, हो जाते पो बारे।
तन-मन जीवन आनन्दित, खुशियों से भर जायेगा।।
सुमिरण करो.....।।5।।

-2/471, जवाहर नगर, जयपुर-302004 (राज.)

सामायिक उपकरण संघ कार्यालय में उपलब्ध

आपको सूचित करते हुए हर्ष है कि सामायिक उपकरण का सेट जिसमें दुपट्टी, चोलपट्टा, आसन, पूँजणी, मुँहपत्ती, माला तथा प्रतिक्रमण की पुस्तक सम्मिलित है, संघ कार्यालय में लागत मूल्य से भी कम रियायती दर पर 200/- रुपये में उपलब्ध है। जोधपुर से बाहर मंगवाने पर पार्सल खर्च अतिरिक्त देय होगा।

-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.), फोन नं. 0291-2636763

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

समय की शिला पर उभरते भाव चित्र- प्रो. भागचन्द्र जैन 'भास्कर', ***प्रकाशक***- सन्मति प्राच्य शोध संस्थान, नागपुर (महा.), ***प्राप्ति स्थान***- (1) कला प्रकाशन, बी 33/33, ए-1, न्यू साकेत कॉलोनी, बी.एच.यू., वाराणसी-5, (2) वेस्टर्न बुक डिपो, सदर, नागपुर-440001 (महा.) ***पृष्ठ***- 256+16, ***मूल्य***- 300 रुपये मात्र, सन् 2015

काल से जुड़ी मन की गति बदलते समय के साथ अनेक भावों को उकेरती है। उन भावों को संजोकर और लिपिबद्ध कर कवि ने प्रस्तुत पुस्तक को सार्थक शीर्षक दिया है। यह पुस्तक पाँच खण्डों में विभाजित है- 1. अथ पाथेय, 2. चरैवेति-चरैवेति, 3. अन्तर का गुञ्जन, 4. सहज पथ, 5. श्रेयस। प्रथम खण्ड में 33 कविताएँ, द्वितीय खण्ड में 70 कविताएँ, तृतीय खण्ड में 65 कविताएँ, चतुर्थ खण्ड में 64 कविताएँ तथा पंचम खण्ड में धर्म और नीतिगत दोहे गुम्फित हैं।

द्वितीय खण्ड में विभिन्न स्तोत्र हिन्दी पद्य में उपलब्ध हैं- भक्तामर स्तोत्र, कल्याण मन्दिर स्तोत्र, एकीभाव स्तोत्र, विषापहार स्तोत्र, जिनचतुर्विंशतिका स्तोत्र, अकलंक स्तोत्र, महावीराष्टक स्तोत्र, सरस्वती स्तोत्र।

वैराग्य शतक- अज्ञातकर्तृक, विवेचनकारः आचार्य श्रीमद् विजयरत्नसेनसूरीश्वर जी म.सा., ***प्रकाशक***- दिव्य संदेश प्रकाशन, द्वारा- सुरेन्द्र जैन, 205, सोना चेम्बर्स, 507-509, जे. एस.एस. रोड, चीरा बाजार, सोनापुर गली के सामने, मरीन लाईंस (पूर्व), मुम्बई-400002 (महा.), फोनः 022-22034529, मो. 98920-69330, ***पृष्ठ***-136+16, ***मूल्य***- 80 रुपये, सन् 2017

अज्ञात लेखक की यह कृति वैराग्य भाव से ओत-प्रोत प्राकृत भाषा में 104 गाथाओं में निबद्ध है। आचार्य श्री ने प्रत्येक गाथा का हिन्दी में विवेचन कर कथा और उद्धरणों के साथ गाथा के मर्म को स्पष्ट किया है। इस ग्रंथ की कतिपय सूक्तियाँ इस प्रकार हैं-

1. 'जं कल्ले कायव्वं, तं अज्जं चिय करेह तुरमाणा' जो धर्मकार्य कल करने योग्य है, उसे आज ही शीघ्र कर लो।
2. 'एगो बंधइ कम्मं, एगो वहबंधमरणवसणाइं।' यह जीव अकेला ही कर्मबन्ध करता है। अकेला ही वध, बंधन और मरण के कष्ट सहन करता है।
3. 'जह गेहंमि पलित्ते, कूवं खणिउं न सक्कए कोई। तह संपत्ते मरणे, धम्मो कह कीरए जीव।' हे जीव! घर में आग लगी हो तब कोई कुँआ खोदने के लिए समर्थ नहीं होता है, उसी प्रकार मृत्यु के नजदीक आने पर तू धर्म कैसे कर सकेगा?

इस तरह अनेक वैराग्योत्पादक विचारों के अन्तर्गत जीवन की नश्वरता, धर्म मार्ग में बढ़ने हेतु अविलम्ब प्रयास, आसक्ति से विरति की ओर कदम बढ़ाने की प्रेरणा की गई है। स्वाध्यायियों के लिए यह पुस्तक पठनीय है।

चौबीस जिन चालीसा- आचार्य श्री विजयराजजी म.सा., ***प्राप्ति स्थान***- 1. श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी शांत क्रान्ति जैन श्रावक संघ, 279-एच, हिरणमगरी, सेक्टर-3, उदयपुर-313002 (राज.), मो. 93525-97007, 2. श्री शान्तिकुमार कोठारी, बी-1, विजय टावर, कांकरिया लेक गेट नं. 3 के सामने, अहमदाबाद-380022 (गुज.) मो. 98259-28880, ***पृष्ठ***-152, ***मूल्य***- स्वाध्याय, सन् 2017

प्रत्येक तीर्थंकर के सम्बन्ध में जन्म भूमि, माता-पिता का नाम, जन्मदिवस आदि अन्य परिचय के

साथ 40 पद्यों की अवलिका रची गई है। 40 पद्यों से पूर्व और अन्त में एक-एक दोहा उस तीर्थंकर जिनेश्वर को भक्तिपूर्वक अर्पित किया गया, जिसमें लेखक का नाम भी अंकित है। इसके साथ ही प्रत्येक जिनवर से सम्बद्ध पृथक्-पृथक् प्रार्थना भी एक ही लय (खड़ी नीम के नीचे) में प्रस्तुत है। सबसे अन्त में तीर्थंकर चालीसा भी अलग से प्रकाशित है। यह पुस्तक आर्ट पेपर पर लेखक के विचारों की आर्ट से द्विगुणित हो रही है। 24 तीर्थंकरों के जीवन परिचय को इन चालीसाओं के माध्यम से स्मरण रखना आसान हो गया है। छोटे-छोटे बच्चे भी इनको आसानी से याद कर सकते हैं। अतः धार्मिक पाठशालाओं में इसका गायन किया जा सकता है, 24 ही तीर्थंकरों की चालीसा पृथक्-पृथक् दिन गायी जा सकती है। स्वाध्यायियों, श्रावक-श्राविकाओं, अध्येताओं के लिए यह संग्रहणीय है।

कषाय के रावण अभी जिन्दा हैं

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

दोपहर के बाद से ही शहरवासी रामलीला मैदान की ओर उमड़ रहे हैं। बुराई के प्रतीक 'मायावी' रावण के पुतले को जलाने के लिए लोभी ठेकेदार ने आयोजन की खूब तैयारी की है और इसीलिए लागत तो दस लाख की ही है, पर पूरे चालीस लाख का बिल भेजा है सरकार को। यह सब 'उद्घाटनकर्ता मंत्रीजी' की कृपा से हुआ है, इसलिए दस लाख मंत्रीजी को भेजने के बाद भी बीस लाख तो बच ही जायेंगे। बची हुई जिंदगी आराम से गुजारने के लिए काफी है।

हमेशा की तरह नियत समय से एक घण्टा लेट, चमचमाती लम्बी विदेशी गाड़ी से मंत्रीजी उतरे। सफेद विदेशी कपड़े से बनी देशी पोशाक (कुर्त्ता-पायजामा) में लिपटे मंत्रीजी विदेशी इत्र से महक रहे हैं। लाखों की विदेशी घड़ी मंत्रीजी की 'कलाई' ओर 'अहंकार' दोनों में आठ चाँद लगा रही है। मंत्रीजी ने दम्भी, पर मुस्कुराती नज़र कैमरों पर डाली, क्योंकि टेलीविजन पर पूरे कार्यक्रम का सीधा प्रसारण जो हो रहा है। भले ही 'भले लोग' मंत्रीजी को मान न दे पर मंत्रीजी के 'मान' को तो कल अखबारों में छपने वाली फोटुओं से खूब सम्मान मिलेगा।

मंत्रीजी के साथ आये उनके पी.ए. वर्माजी भी मंत्रीजी की खूब चमचागिरी कर रहे हैं। पिछले पाँच वर्षों से वर्माजी ने खूब जुगाड़ लगाये हैं, खूब साजिशें रची हैं मंत्रीजी की कुर्सी हथियाने की, पर मंत्रीजी पर तो भाग्य दुगुना मेहरबान है। वर्माजी बाहर से तो मंत्रीजी की शान में कशिदे गढ़ रहे हैं, पर अन्दर में माया का मंथन चल रहा है कि आज तो मंत्रीजी की आखिरी रात है। सवेरे ही तो नामी गुण्डों को मंत्रीजी की हत्या के लिए अग्रिम राशि देकर आये हैं।

पीछे खड़ा पुलिस इंस्पेक्टर टीम के साथ मंत्रीजी की सुरक्षा की 'अनचाही' जिम्मेदारी निभा रहा है। चेहरे पर बनावटी मुस्कान, पर मन में क्रोध की ज्वाला सुलग रही है, जो बस चले तो रावण के बजाय मंत्रीजी को जला दें। राज्य के सबसे ईमानदार और उच्च शिक्षित इंसपेक्टर को 'आठवीं फेल और भ्रष्ट मंत्री' की चाकरी जो करनी पड़ रही है। बेईमान नेता को देखकर ईमानदारी खून के आँसू पी रही है।

आखिर जनता के द्वारा चुने गए नायक 'सरल' मंत्रीजी ने, खलनायक के प्रतीक 'मायावी रावण' के पुतले को चिंगारी लगा ही दी। रावण का पुतला तो जल गया पर असली रावण अभी जिन्दा हैं। इंस्पेक्टर में **क्रोध** रूपी रावण, मंत्रीजी में **मान** रूपी रावण, वर्माजी में **माया** रूपी रावण और ठेकेदार में **लोभ** रूपी रावण। कषाय रूपी ये चारों रावण अट्टाहास कर रहे हैं, हँस रहे हैं, हँसते ही जा रहे हैं अपनी जीत पर।

-राष्ट्रीय मंत्री,
श्री अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
504, रिद्धी विनायक अपार्टमेन्ट, दिग्विजयनगर,
खेमे का कुआ, पालरोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 350 स्वाध्यायियों द्वारा 137 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विगत 72 वर्षों से, जैन संत-सतियों के चातुर्मास से वंचित ग्राम/नगरों में विद्वान्, क्रियावान, योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायियों को भेजकर अष्ट दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना एवं आराधना का महान् रचनात्मक कार्य किया जा रहा है। इस संघ के लगभग 1200 स्वाध्यायी सदस्य हैं, जिनमें से अधिकांश स्वाध्यायी पर्युषण के लिए संघ द्वारा निर्देशित क्षेत्रों में जाकर अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी ऐसे भी हैं, जो व्यावहारिक जगत् में न्यायाधिपति, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, इंजीनियर, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी, एडवोकेट, उद्योगपति, व्यापारी, शिक्षक आदि प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत होते हुए भी अपनी बहुमूल्य सेवाएं संघ को प्रदान कर रहे हैं। अनेक स्वाध्यायी, स्नातक, बी.एड़, एल.एल.बी, पी.एच.डी. एवं एल.एल.एम जैसी वरिष्ठ उपाधियों से अलंकृत हैं।

इस वर्ष पर्युषण पर्व दिनांक 19 अगस्त से 26 अगस्त 2017 तक मनाया गया। पर्वाराधना में उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान में मेवाड़, मारवाड़, पोरवाल-पल्लीवाल आदि क्षेत्रों में विभिन्न छोटे-बड़े दूर एवं निकट के 137 क्षेत्रों में लगभग 350 स्वाध्यायियों द्वारा अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की गईं। सभी स्थानों पर सामायिक, दया, संवर, उपवास, पौषध तथा छोटी-बड़ी अनेक तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। स्वाध्यायियों द्वारा सभी स्थानों पर ज्ञान वृद्धि हेतु शिविर तथा अन्य कार्यक्रमों के साथ ही विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं। *-गोपालराज अबानी, सचिव*

महाराष्ट्र

1. वरणगांव- श्री हीरालालजी मण्डलेचा, जलगांव
सुश्री सोनमजी पोरवाल, जामनेर
सुश्री रुचिताजी समदड़िया, जलगांव
2. उम्बरखेड़- सौ. विमला जी चौरड़िया, जलगांव
सौ. ललिता जी बोथरा, जलगांव
सौ. सुरेखा जी कांकरिया, जलगांव
3. वाकड़ी- सौ चन्द्रकला जी बाफना, शिरपुर
सौ. रतनमाला जी डोसी, जलगांव
4. वाकोद- श्रीमती ताराबाई जी डाकलिया, जलगांव
सौ. सुरेखा जी नवलखा, जलगांव
5. मुकटी- श्रीमती ललिता जी कटारिया, जलगांव
श्रीमती तारा जी जैन, जलगांव
श्रीमती विनीता जी सावड़ा, जलगांव
6. तोंडापुर- श्रीमती उषा जी कोठारी, जलगांव
सौ. संतरा जी जैन, जलगांव
सौ. शकुन्तला जी संचेती, जलगांव
7. भराड़ी- श्री ललित जी चौरड़िया, शिरपुर
श्री तुषार जी संकलेचा, पूना
श्री चुन्नीलाल जी कोठारी, महाड़
8. शिरुड़- श्री मुकेश जी चौरड़िया, पारोला
श्री निलेश जी चौरड़िया, पारोला
श्री कल्याणमल जी धाडिवाल, कजगांव
9. धरणगांव- सौ. सरला जी बंब, भड़गांव
सौ. अनिता जी लुंकड़, जलगांव
सुश्री हर्षा जी लुणावत, भडगांव
10. मांगलादेवी- सौ. मीना जी सिंघवी, जलगांव
सौ. चंदनबाला जी अलिझाड़, शिरुड़
11. कासमपुरा- श्रीमती सायरबाई जी सुराणा, शिरपुर
सुश्री दीपाली जी खिंवसरा, मुकटी
सुश्री सोनाली जी मूथा, धरणगांव
12. चिंचाला- श्रीमती निर्मला जी दुधेड़िया, जलगांव
सुश्री विशाखा जी भण्डारी, जलगांव
सुश्री अमृता जी गादिया, जलगांव
13. हीरापुर- श्री संजय जी देशलहरा, इंदौर
श्री वीतराग जी नाहर, इंदौर

14. पलासखेड़ा- सौ. बसंता जी संकलेचा,नरढाणा
श्रीमती ताराबाई जी चौरड़िया,नाशिक
15. शेलवड़- सौ. देवबालाजी जैन, ठाणे
सौ. सुशीला जी धाड़िवाल, जलगांव
16. वरखेड़ी- श्रीमती सरला जी मेहर, जलगांव
सौ. मोहिनी जी मुणोत, जलगांव
17. सतारा- सौ. छाया जी भण्डारी, जलगांव
सौ. सीमा जी पारख, जलगांव
सौ. शिल्पा जी श्रीश्रीमाल,जलगांव
18. सिल्लोड़- श्री प्रकाश जी सालेचा, जोधपुर
विरक्त बंधु श्री जिनेन्द्र जी जैन,
श्री अमृत जी मूथा, अमरावती
19. रालेगांव- सौ. सरला जी कांकरिया,जलगांव
सौ. मेघा जी सिंघवी, जलगांव
श्रीमती विमला जी सुराणा,जलगांव
20. डोम्बीवली- श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जयपुर
श्री अजय जी राखेचा, जलगांव
सौ. कांता जी जैन, जयपुर
सुश्री प्रेरणा जी, ललवाणी, सिल्लोड़
21. बडनेरा- श्री मनोज जी संचेती, जलगांव
श्री राजेन्द्र जी कावड़िया,जलगांव
श्री सुरेश जी विनायकिया,जलगांव
सुश्री भावना जी जैन, जलगांव
सुश्री प्रीति जी बांठिया, जलगांव
22. मांडल- श्रीमती विजया जी मल्हारा,जलगांव
सौ. किरण जी बोरा, जलगांव
श्रीमती लीना जी दर्डा, जलगांव
23. कासारे- श्रीमती उषा जी चौरड़िया,भडगांव
श्रीमती बेबीबाई जी कोचर,वडजी
सौ. मंगला जी पारख, कासारे
24. विटनेर- श्रीमती कांता जी लुकड़,जलगांव
सौ. प्रेमलता जी डाकलिया,जलगांव
सौ. चन्द्रकला जी सुराणा,जलगांव
25. कलवाड़ी- सौ. रसीला जी बरड़िया, जलगांव
सौ. सुनीता जी बरड़िया,जलगांव
सुश्री टीना जी कोचर, चौपडा
26. भूम- मधुबालाजी मनन, जलगांव
श्री विवेक जी पोखरणा, भूम
27. जायखेड़ा- श्रीमती कमला जी पगारिया,धरणगांव
सुश्री राखी जी कर्नावट, सौंदाणा
28. चिखली- श्रीमती उषा जी धोखा, धरणगांव
सौ. कमला जी जांगड़ा, धरणगांव
29. इच्छापुर- सौ. शोभाजी लुणावत, भड़गांव
सौ. मंजू जी जैन, भड़गांव
सुश्री साक्षी जी खिंवसरा, मुकटी
30. वालुज- श्री राजमल जी संचेती, अमलनेर
श्री रोशनलाल जी चौपड़ा,जलगांव
31. पिलखोड- सौ. लता जी बनवट, जलगांव
सुश्री तनवी जी खिंवसरा, मुकटी
32. लोहारा- सौ. चन्द्रा जी कांकलिया,जलगांव
सौ. सुनंदा जी रांका, जलगांव
सौ. शोभा जी संखलेचा,जलगांव
33. नसीराबाद- श्रीमती लीलाबाई जी आंचलिया,जलगांव
सौ. लता जी मूथा, नासिक
34. दूसरबीड़- श्री रितेश जी सुराणा, जलगांव
श्री नरेश जी कांकरिया, जलगांव
35. बेटावद- सौ. सुरेखा जी चोरडिया, पाचौरा
सौ. मंगला जी राखेचा, जलगांव
36. कामठी- सौ. मंगला जी ललवाणी,जलगांव
सौ. मनीषा जी भण्डारी, जलगांव
श्री राजेन्द्र जी सुराणा, जलगांव
37. होलनांथा- सौ. तिलोत्तमा जी ओस्तवाल,भडगांव
सौ. माया जी श्रीश्रीमाल, भडगांव
38. वाघली- सौ. मंगला जी बागरेचा, शिरपुर
सौ. सुनन्दा जी सांखला,जलगांव
39. भोकरदन- श्री नन्दलाल जी जैन, उनियारा
श्री यश राजेश जी जैन, जलगांव
40. देऊर बुद्रक- श्री जितेश जी जैन, जयपुर
श्री शुभम जी जैन, जयपुर
41. होसुर- श्री जवाहरलाल जी कर्णावट, चेन्नई
श्री सुनील जी संकलेचा, चेन्नई
श्री महावीर जी लोढ़ा, चेन्नई
श्री संदीप जी ओस्तवाल, चेन्नई
42. कालाडीपेट- श्रीमती मधु जी बोहरा, चेन्नई
श्रीमती मंजू जी बाघमार, चेन्नई
श्रीमती जयंति जी बाघमार, चेन्नई
43. स्वाध्याय भवन-श्री हस्तीमल जी गुलेच्छा, ब्यावर

श्री राजेश जी ललवाणी, चेन्नई

44. अंकुरवानी- श्री विकास जी बम्ब, चेन्नई

45. मिरसाहिबपेट-श्री सुभाष जी कोठारी, वासिम
श्री विमलचंद जी मुथा, पल्लीपट्ट

46. आरकाट- श्री रमेशचंद जी जांगड़ा, चेन्नई
श्रीमती सज्जनबाई जी बोहरा,चेन्नई
सुश्री आरती जी जांगड़ा, चेन्नई
सुश्री प्रियंका जी सुराणा, चेन्नई

47. शिवकासी- श्री मनीष जी जैन, चेन्नई
श्री हरीश जी सिंघवी, चेन्नई

48. कडम्बातुर- श्री दीपेश जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
श्री अनुज जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला

49. कलाकुरची- सुश्री मीनल जी रायसोनी,जलगांव
श्रीमती तारा जी बाघमार, चेन्नई

50. अन्नानगर- श्री सुनील जी ललवाणी, चेन्नई
श्री बुधमल जी बोहरा, चेन्नई

51. पल्लीपेट- श्री नवरतनमल जी चोरडिया, चेन्नई
श्री महावीर जी तातेड़, चेन्नई

52. नंगनल्लुर- श्री लूणकरण जी सेठिया, चेन्नई
श्री अशोक जी बाफना, चेन्नई

53. नुन्गम्बाक्कम- श्री तरूण जी बोहरा, जोधपुर
श्री अनोपचंद जी बाघमार, चेन्नई
वि.बंधु श्री मानमल जी सुराणा, चेन्नई

54. अयनावरम - रेलवे श्रीमती सुशीला जी गुलेच्छा, जोधपुर
श्रीमती उषा जी गुगलिया, चेन्नई
सुश्री मोनिका जी टपरावत, चेन्नई

55. गुडवांचरी- श्रीमती किरण जी कोठारी, बोदवड़
श्रीमती आशा जी कोठारी, चेन्नई
श्रीमती निर्मला जी कोठारी, चेन्नई

56. पाड़ी- श्री महावीर जी बाघमार, चेन्नई
श्री लीलम जी बाघमार, चेन्नई
श्री निखिल जी बाघमार, चेन्नई

57. कुनराथुर- श्री अखिलेश जी नाहर, इन्दौर
श्रीमती सपना जी नाहर, इन्दौर
श्रीमती सपना जी बावेल, इन्दौर

58. रायपुरम- श्रीमती मोहनकौरजी जैन,जोधपुर
श्रीमती प्रियदर्शना जी जैन, चेन्नई
श्रीमती संगीता जी बोहरा, चेन्नई

59. उलन्दुरपेट- श्री पवन जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
श्री अनिकेत जी जैन,जयपुर सिद्धान्तशाला

60. वलाजाबाद- श्री सुरेश जी बाघमार, चेन्नई
श्री ज्ञानचंद जी बाघमार, चेन्नई
श्री गौतमचंद जी मुथा, चेन्नई

61. श्रीकालाहस्ती-श्री शांतिलाल जी गांधी, सिंगोली
श्री संतोष जी गांधी, सिंगोली

62. बिन्नीमिल्स- श्री विक्रम जी बाघमार, चेन्नई

63. विरूधाचल्लम- श्री सुरेश जी हिंगड़, चेन्नई
श्री नवरतन जी बाघमार, चेन्नई

64. चेकपेट - वनवासी श्री अक्षत जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
श्री रिखबचन्द जी बाघमार, चेन्नई

65. चिदम्बरम- श्रीमती पुष्पा जी मेहता, पीपाड़
सुश्री रेखा जी कोठारी, चेन्नई
सुश्री वर्षा जी कोठारी, चेन्नई

66. नल्लीकुप्पम- श्रीमती विमला जी चोरडिया, चेन्नई
श्रीमती पुष्पा जी चतुर, चेन्नई

67. कावेरीपाक्कम-श्री अखिलेशजी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
श्री कमल जी ओस्तवाल, चेन्नई

68. वेलाचेरी- श्री मुकेश जी बुरड़, शिरपुर
श्री विरेन्द्र जी कांकरिया, चेन्नई
श्री राकेश जी जैन, शिरपुर
श्री हर्ष जी जैन, शिरपुर

69. कोल्लीडम- श्रीमती शकुंतला जी कांकरिया,जलगांव
श्रीमती कांता जी भंसाली,जलगांव

70. पोल्लुर- श्री दीपक जी श्रीश्रीमाल, चेन्नई
श्री निखिल जी कांकरिया, चेन्नई

71. शेनॉय नगर- श्री राजेन्द्र जी बाघमार, चेन्नई

72. एम.एम.डी. - कॉलोनी श्री वर्द्धमान जी लोढ़ा,मालेगांव
श्रीमती उषा जी लोढ़ा, मालेगांव
श्रीमती कंचन जी रांका, जोधपुर

73. वलसारावाक्कम-श्रीमती उषा जी बोहरा, जोधपुर
सुश्री अंजू जी जैन, जोधपुर
सुश्री प्रिया जी जैन, जोधपुर

74. थाउजेन्ड - लाईट्स श्रीमती लीला जी सालेचा, जलगांव
श्रीमती इन्द्रा जी बोहरा, चेन्नई

75. सुलुरपेट- श्री दिनेश जी नाहटा, नगरी
श्री अनिल जी ढेलडिया, नगरी

76. ताम्बरम- श्री शिखरचंद जी छाजेड़, करही
श्री विमलचंद जी तातेड़ करही
श्री मनोज जी सेठिया, चेन्नई
77. कालूखेड़ा- श्री पदमचंदजी जैन 'गोटेवाला', सवाईमाधोपुर
श्री कनिष्कजी जैन, सवाईमाधोपुर
78. बेरछा मण्डी- श्री जम्बूकुमार जी जैन, जयपुर
श्री अशोक जी जैन 'हरसाना वाले', जयपुर
79. सिवनी माल्वा-श्री महावीर जी जैन 'बैंक वाले', बजरिया
श्री श्यामसुन्दर जी जैन, सवाईमाधोपुर
80. हातोद- श्री लल्लुलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर
श्री ताराचन्द जी जैन, देई
श्री रितिक जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
81. नीमच सिटी- श्री कंवरलालजी सिंघवी, जलगांव
श्री अनिल जी कोठारी, जलगांव
सौ. विजया जी सिंघवी, जलगांव
82. सिद्धिकगंज मगरदा- श्री मुकुल जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
श्री सौरभ जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
श्री निखिलजी मेहता, जयपुर सिद्धान्तशाला
83. बागली- श्री विनयचंद जी जैन, आलनपुर
श्री नीरज जी जैन, चौथ का बरवाड़ा
84. आकोदिया - मण्डी श्रीमती सुजाता जी जैन, चौथ का बरवाड़ा
सुश्री रानूजी जैन, चौथ का बरवाड़ा
सुश्री सोनिया जी जैन, चौथ का बरवाड़ा
85. गरोठ- श्री पवन जी जैन, अलीगढ़
श्री देशराज जी जैन, उखलाणा
सुश्री किरण जी जैन, अलीगढ़
86. बैतुल- श्रीमती शकुन्तला जी जैन, बैतुल
श्रीमती कमला जी गोठी, बैतुल
87. अरनोदा- श्री आशीष जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
श्री सिद्धार्थ जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
श्री राकेश जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
88. दरीबा माईन्स-श्री रामपाल जी जैन, देई
श्री पारसचंद जी जैन, नैनवा
89. सांवरिया मण्डपिया-श्री अभिषेक जी नाहर, इन्दौर
श्री विमलचंद जी पोरवाल, इन्दौर
श्री गोयम जी नाहर, इन्दौर
90. आसोप- श्री शांतिलालजी सिंघवी, आसोप
श्री कानराजजी सुराणा, आसोप
91. आगोलाई- श्री मूलचन्दजी बाफना, जोधपुर
श्री मूलचन्दजी लुणावत, जोधपुर
92. मजल- श्री नेमीचन्दजी कर्णावट, भोपालगढ़
श्री नवतरन जी डागा, जोधपुर
श्री कांतिलाल जी पारख, जोधपुर
93. पचाला- श्री मुन्नालालजी भण्डारी, जोधपुर
श्री जगदीशमलजी कुम्भट, जोधपुर
श्री जेठमल जी मुणोत, जोधपुर
94. इन्द्रगढ़- श्रीमती लाडदेवीजी हीरावत, जयपुर
श्रीमती मंजू जी मूसल, जयपुर
श्री सक्षम जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
95. कुश्तला- श्री मानसिंहजी खारीवाल, भीलवाड़ा
श्री इन्द्रसिंहजी कोठारी, भीलवाड़ा
96. श्योरपुर कलां-श्री मोहिनीदेवीजी जैन, आलनपुर
श्रीमती रूपादेवीजी जैन, बजरिया
97. अलीगढ़- श्री सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर
श्री कैलाशचंद जी जैन, जयपुर
श्री गोपालराजजी अबानी, जोधपुर
98. सुमेरगंज मण्डी-श्री प्रकाशचंदजी बांठिया, पाचोरा
श्री सचिन जी जैन, पाचोरा
श्री शुभमजी जैन, सुमेरगंज मण्डी
99. दूनी- श्री रतनलाल जी लोहिया, सवाईमाधोपुर
श्री प्रेमबाबू जी जैन, बजरिया
सुश्री रिंकी जी जैन, अलीगढ़
सुश्री पूजा जी जैन, अलीगढ़
100. देई- श्री जगदीश जी जैन, कोटा
सुश्री प्रेरणा जी जैन कोटा
सुश्री अंतिमबाला जी जैन, कोटा
101. देवली- श्री राकेशजी जैन, सुमेरगंजमण्डी
श्री अंकित जी जैन, बजरिया
श्री अरिहन्त जी गोखरू, दूनी
102. उनियारा- श्रीमती विमलाजी चौपड़ा, जोधपुर
श्रीमती मोहिनी जी कच्छवाह, जोधपुर
103. कुण्डेरा- श्री महावीरप्रसादजी जैन, गंगापुर सिटी
श्रीमती सुशीला जी जैन, नदबई
104. बाबई- श्रीमती प्रियदर्शनाजी जैन, सवाईमाधोपुर
श्रीमती शशिकांताजी जैन, भरतपुर
सुश्री किरण जी जैन, बाबई
105. फलौदी क्वारी-श्री प्रमोदजी जैन, चौथ का बरवाड़ा
106. जरखोदा- श्री उम्मेदमल जी जैन, जरखोदा

107. खौह- श्री अनिल जी जैन, कोटा
श्री रवि जी मुथा, जोधपुर
श्री राजकुमार जी नवलखा, कोटा
108. रसीदपुर- श्री कृष्णमोहनजी जैन, हिण्डौन सिटी
श्री अजय जी जैन, हिण्डौन सिटी
109. गोपालगढ़ भरतपुर- श्री त्रिलोक जी जैन, जयपुर
श्री निर्मल जी मुथा, पीपाड़
वि. बंधु श्री गौतमचंदजी संकलेचा
110. नदबई- श्री कन्हैयालाल जी जैन, भीलवाड़ा
श्री कानसिंह जी चौधरी, भीलवाड़ा
श्री पारसमल जी पारलेचा, चित्तौड़
111. पहरसर- श्री संजय जी जैन, जयपुर
श्री शीतल प्रसाद जी जैन, गंगापुरसिटी
112. सहाड़ी- श्री महेन्द्र जी जैन, सहाडी
113. खेरली- श्रीमती राजकुमारीजी मेहता, जयपुर
श्री अरिहन्त जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
श्री सुधांशु जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
114. मण्डावर- श्रीमती अकलकंवर जी मोदी, जोधपुर
श्रीमती सायरबाईजी मेहता, जोधपुर
श्रीमती शकुंतलाजी हींगड़, पाली
115. हरसाना- श्री विनोद जी जैन, उनियारा
श्री आयुषजी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
116. बरगमा- श्री धर्मचंद जी जैन, कुश्तला
श्री रतनलाल जी जैन, कुश्तला
117. भरतपुर- श्री विरेन्द्र जी झामड़, जयपुर
श्री पुखराज जी कुचेरिया, जयपुर
श्री त्रिलोक जी डागा, जयपुर
118. बौंण- श्री मगनचंदजी जैन, फाजिलाबाद
श्री कस्तूरचंद जी जैन, खेरली
119. करौली- श्री बाबूलालजी जैन 'मो.वाले', सवाईमाधोपुर
सुश्री निकिताजी जैन, सवाईमाधोपुर
सुश्री अनिताजी जैन, सवाईमाधोपुर
120. बीचगांवा- श्री प्रसुन्न जी जैन, खौह
श्री महेन्द्र जी जैन, सवाईमाधोपुर
121. गंगापुर सिटी- श्री रविन्द्र जी जैन, जयपुर
श्री सुधीर जी जैन, जयपुर
श्री प्रदीप जी जैन, जयपुर
122. नसिया गंगापुर- श्रीमती विमला जी जैन, बजरिया
श्रीमती राजेशदेवीजी जैन, सवाईमाधोपुर

123. मलपुरा- श्री सुरेश जी जैन, खेरली
श्री महेन्द्र जी जैन, खेरली
124. वैर- श्री सुरेशचन्द्र जी जैन, वैर
125. कठूमर- श्री दिलरूपचंदजी भण्डारी, जोधपुर
श्री अशाककुमारजी पितलिया, सिंगोली
126. सेंथली- श्री पदमचंद जी जैन, नदबई
श्रीमती गोमती जी जैन, नदबई
127. बडौदा मेव- श्री राजेन्द्र जी चोरडिया, इन्दौर
श्री लक्ष्मीचंदजी छाजेड़, समदड़ी
श्री अरिहन्त जी चोरडिया, इन्दौर
128. कोलकाता- श्री कुशलचंदजी 'गोटेवाला', सवाईमाधोपुर
श्री मुकेशजी जैन, सवाई माधोपुर
श्री पवन जी जैन 'करेला वाले', सवाईमाधोपुर
129. बुहारी- श्री पारसचंद जी जैन, इन्द्रगढ़
श्री कमलेश जी जैन, देई
श्री हिमांशुजी जैन, सुमेरगंजमण्डी
130. दूदू- श्री हस्तीमलजी डोसी, मेड़ता सिटी
श्री हंसराज जी चौपड़ा, गोटन
श्री दिलीप जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
131. चाकसू- श्री पदमचंद जी मुणोत, जयपुर
श्री धर्मचंद जी जैन, खेरली
श्री विमलचंद जी जैन, खौह
132. अतुल- श्रीमती इन्द्रा जी पारख, जयपुर
श्री महेन्द्र जी जैन, जयपुर
श्री रितेश जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
133. बलरामपुर- श्री राजेश जी भण्डारी, जोधपुर
श्रीमती सरलाजी भण्डारी, जोधपुर
सुश्री प्रियंका जी बालड़, जोधपुर
134. प्रताप नगर, जयपुर - श्री चंचलमलजी चोरडिया, जोधपुर
श्री सुनील जी चौपड़ा, जोधपुर
वि.बंधु श्री विवेकजी लूंकड़, जोधपुर
135. कानपुर- श्री केतनजी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
श्री सम्भव जी जैन, जयपुर सिद्धान्तशाला
136. विद्याधर नगर- जयपुर सौ. सुशीलाजी समदड़िया, जलगांव
श्री किशोर जी खिंवसरा, जलगांव
137. सिलवासा- श्री चन्द्रकान्त जी जैन, कजगांव
श्री जिनेन्द्र जी जैन, मुम्बई
श्री धर्मेन्द्र जी मुणोत, अमरावती

परिणाम

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा का परिणाम घोषित

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 16 जुलाई 2017 को आयोजित कक्षा 1 से 12 तक का परीक्षा परिणाम घोषित कर दिया गया है। परीक्षा परिणाम सम्बन्धी सूचना सभी परीक्षार्थियों को SMS द्वारा भिजवाई जा चुकी है। सभी केन्द्राधीक्षकों को अपने-अपने केन्द्र के परीक्षा परिणाम की सूची भी भिजवाई जा चुकी है। जिन परीक्षार्थियों ने वरीयता सूची में स्थान प्राप्त किया है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित हैं-

अस्थायी वरीयता सूची

(प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
99587	सुनीता सुरेशजी कटारिया	गुलेदगुड़ (कर्नाटक)	98.00	प्रथम
99662	दीपिका राजकुमारजी गोलेछा	हिंगनघाट (महा.)	97.50	द्वितीय
99584	रेखा मनोजजी गुन्देचा	गुलेदगुड़ (कर्नाटक)	97.25	तृतीय
100261	शीतल नन्दूजी पारख	चाँदवड़-नाशिक (महा.)	97.00	चतुर्थ
100837	संगीता पुर्वेशजी लोढ़ा	यवतमाल (महा.)	96.75	पंचम
73869	सरला विजयजी कोटेचा	यवतमाल (महा.)	96.00	षष्ठ
100838	सरीता हंसराजजी भंसाली	यवतमाल (महा.)	95.75	सप्तम
62967	ममता गणेशकुमारजी लोढ़ा	यवतमाल (महा.)	95.50	अष्टम
91145	भावना संजयजी चोरडिया	पाचोरा-जलगांव(महा.)	95.40	नवम
99577	पायल सुरेशजी कटारिया	गुलेदगुड़ (कर्नाटक)	95.25	दशम
		(द्वितीय कक्षा)		
98608	आराधना मनीषजी गुलेच्छा	पाली-मारवाड़ (राज.)	99.50	प्रथम
97274	शिप्रा रोहितजी मोदी	ब्यावर (राज.)	98.75	द्वितीय
97604	ज्योति राहुलजी जैन	बौण-पल्लीवाल(राज.)	98.50	तृतीय
98603	वंशिता पंकजजी गुलेच्छा	पाली-मारवाड़ (राज.)	98.35	चतुर्थ
98605	प्रियंका गौरव जी जैन	पाली-मारवाड़ (राज.)	98.25	पंचम
97746	कीर्ति राकेशजी जैन	देवनगर-जोधपुर (राज.)	98.00	षष्ठ
99846	संगीता विरेन्द्रजी डागा	बोरिवली, मुम्बई (महा.)	97.75	सप्तम
98606	अंजु दीपकजी जैन	पाली-मारवाड़ (राज.)	97.50	अष्ठम
97603	दर्शना प्रदीपकुमारजी जैन	बौण-पल्लीवाल(राज.)	97.25	नवम
98089	सोनल चन्दनजी सिंघवी	कोथरूड-पूना (महा.)	97.15	दशम
		(तृतीय कक्षा)		
96539	दिपाली रूपेशजी सुराणा	सिल्लौड़ (महा.)	98.75	प्रथम
88790	नीलम रमेशजी तरवेचा	नागदा जक्शंन (मध्यप्रदेश)	96.75	द्वितीय
96225	पूजा निखिलजी छोरबोले	विश्रान्तवाड़ी-पूना (महा.)	95.75	तृतीय
67628	भावना चम्पालालजी बागरेचा	पचपदरा (राज.)	93.75	चतुर्थ
91219	मधु महेन्द्रजी जैन	विजयवाड़ा (कर्नाटक)	93.50	पंचम
71879	रेखा मदनलालजी जैन	पावटा-जोधपुर (राज.)	92.50	षष्ठ

94843	स्मिता किशोरजी गाँधी	विश्रान्तवाड़ी-पूना (महा.)	92.00	सप्तम
90304	निधि कुलदीपजी जैन	पावटा-जोधपुर (राज.)	91.50	अष्टम
95471	शांतादेवी शांतिलालजी नाहर	नांदूरा (महा.)	91.00	नवम
95483	समीक्षा राजेशकुमारजी नाहर	नांदूरा (महा.)	88.25	दशम

(चतुर्थ कक्षा)

95264	आरती श्रेणिककुमारजी भटेवरा	पोलूर-चेन्नई (तमिलनाडु)	99.00	प्रथम
93664	मीना नरेन्द्रजी चौधरी	वैलूर-चेन्नई (तमिलनाडु)	98.50	द्वितीय
90975	बबीता विमलचन्दजी गादिया	रेडहिल्स-चेन्नई (तमिलनाडु)	97.50	तृतीय
93663	सोनम आशीषजी कर्नावट	वैलूर-चेन्नई (तमिलनाडु)	97.00	चतुर्थ
99071	नरेन्द्रमोहन राजूलालजी जैन	बजरिया-पोरवाल (राज.)	96.50	पंचम
77812	निर्मला शिखरचन्दजी खटोड़	चिदम्बरम-चेन्नई (तमिलनाडु)	96.25	षष्ठ
89534	रचना अर्पितजी कोठारी	ब्यावर (राज.)	96.00	सप्तम
72888	चन्द्रकला संजयजी मोहनोत	शक्तिनगर-जोधपुर (राज.)	95.25	अष्टम
92069	माधुरी राजीवजी जैन	विज्ञाननगर-कोटा (राज.)	95.00	नवम
88378	सपना सचिनजी कासवा	हिंगनघाट (महा.)	94.75	दशम

(पाँचवी कक्षा)

90310	वन्दना अजयजी कासवा	हिंगनघाट (महा.)	95.25	प्रथम
72911	जसराज रावलचन्दजी गोलेच्छा	बाड़मेर (राज.)	95.00	द्वितीय
60469	आशा संजयकुमारजी मेहता	अडयार-चेन्नई(तमिलनाडु)	94.75	तृतीय
88381	उज्जवला कमलेशजी कासवा	हिंगनघाट (महा.)	94.50	चतुर्थ
90791	रूपाली रोहितजी पगारिया	दादावाड़ी-जलगांव (महा.)	94.25	पंचम
89957	रंजना शान्तिप्रकाशजी ओसवाल	गंजवसोदा (मध्यप्रदेश)	93.50	षष्ठ
88379	ललिता धर्मेन्द्रजी नाहर	हिंगनघाट (महा.)	93.25	सप्तम

(छठी कक्षा)

86283	रक्षित प्रमोदकुमारजी छाजेड़	राजाजीनगर-बैंगलोर(कर्नाटक)	98.00	प्रथम
83275	सुभाष सागरमलजी जैन	केलिफोनिया (U.S.A.)	96.25	द्वितीय
72619	नीलम सुनीलचन्दजी कांकरिया	नागौर (राज.)	96.00	तृतीय
84217	साक्षी हरीशजी खण्डेलवाल	खेरली (राज.)	95.75	चतुर्थ
81012	लवली मनोजजी कटारिया	नेहरूपार्क-जोधपुर (राज.)	95.00	पंचम
82035	नीलम गौतमचन्दजी विनायकिया	सुबोध स्कूल-जयपुर (राज.)	94.50	षष्ठ
84251	नीमा रमेशजी परमार	विरार-मुम्बई (महा.)	94.00	सप्तम

(सातवीं कक्षा)

81552	कोमल सौरभजी चौपड़ा	शक्तिनगर-जोधपुर (राज.)	99.00	प्रथम
75338	वनमाला नेमीचन्दजी मुथा	के.जी.एफ. (कर्नाटक)	95.50	द्वितीय
69004	अरूणा प्रकाशचन्दजी बैद	अमरावती (महा.)	93.00	तृतीय
83674	श्रुतिका संदेशकुमारजी चोरडिया	मलकापुर (महा.)	92.50	चतुर्थ
57969	निशा निर्मलजी ओस्तवाल	विजयवाड़ा (कर्नाटक)	91.00	पंचम
86022	वीणा अनिलजी मेहता	इन्दौर (मध्यप्रदेश)	90.50	षष्ठ
96165	शशिरेखा प्रवीणजी आछा	आरकाट-चेन्नई (तमिलनाडु)	90.00	सप्तम

(अष्टमीं कक्षा)

68873	रूपल प्रशान्तजी शाह	नागपुर (महा.)	91.00	प्रथम
77530	गुंजन अनिलजी संकलेचा	पावटा-जोधपुर (राज.)	90.50	द्वितीय
78568	जिनल जयदीपजी शाह	नागपुर (महा.)	90.00	तृतीय
80540	सीमा राजेशजी मेहता	कारंजा (महा.)	87.50	चतुर्थ
80542	उज्जवला धर्मचन्दजी भूरट	कारंजा (महा.)	86.50	पंचम
94181	ममता पदमजी देशलहरा	पावटा-जोधपुर (राज.)	84.5	षष्ठ
93916	आरती आनन्दजी बेताला	बागलकोट (कर्नाटक)	83.00	सप्तम

(नवमीं कक्षा)

61837	सुधा अनिलजी कोठारी	वेलिचेरी-चेन्नई (तमिलनाडु)	93.50	प्रथम
63068	गीता रमेशकुमारजी जैन	होशियारपुर (पंजाब)	91.50	द्वितीय
65420	प्रकाशबाई राहुलजी कोठारी	वड़पलनी-चेन्नई (तमिलनाडु)	91.00	तृतीय

(दशमीं कक्षा)

65044	रेखा राजेन्द्रजी सुराणा	पावटा-जोधपुर (राज.)	97.00	प्रथम
64615	खुशी नेमीचन्दजी कटारिया	पीपाड़सिटी (राज.)	96.00	द्वितीय
52593	सुधा अजयकुमारजी मारू	बांरा (राज.)	95.00	तृतीय

(ग्यारवीं कक्षा)

52594	प्रभा प्रमोदकुमारजी मारू	बांरा (राज.)	97.00	प्रथम
57974	उषा अरविन्दजी कटारिया	विजयवाड़ा (कर्नाटक)	95.50	द्वितीय
58915	दीपिका हरीशकुमारजी जैन	अलीगढ़ (राज.)	94.00	तृतीय

(बारहवीं कक्षा)

58557	ज्योति प्रवीणकुमारजी तातेड़	लासलगांव-जलगांव (महा.)	99.00	प्रथम
58554	स्नेहा विनोदजी तातेड़	लासलगांव-जलगांव (महा.)	97.00	द्वितीय
57116	सोनाली संदीपजी बोथरा	सुबोध स्कूल-जयपुर (राज.)	96.00	तृतीय

इस परीक्षा की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है-

कुल आवेदक	परीक्षा में भाग लेने वाले	उत्तीर्ण परीक्षार्थी	उत्तीर्ण का प्रतिशत	कुल परीक्षा केन्द्र
6358	**4046**	**2639**	**65.23**	**259**

जिन-जिन केन्द्राधीक्षकों, निरीक्षकों, प्रश्न-पत्र निर्माताओं, उत्तरपुस्तिका जाँचकर्त्ताओं ने तथा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाएँ- स्वाध्याय संघ, युवक परिषद्, श्राविका मण्डल, संस्कार केन्द्र आदि के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने उक्त परीक्षा के आयोजन में जो महनीय सहयोग/सेवा/मार्गदर्शन आदि प्रदान किये, उनके लिए शिक्षण बोर्ड हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करता है।

शिक्षण बोर्ड की थोकड़ों की आगामी परीक्षा **07 जनवरी 2018** को दोपहर को 1 से 4 बजे तक आयोजित की जायेगी। परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- अशोक चोरडिया, संयोजक-94141-29162, नवरतन गिड़िया, सचिव-94141-00759, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-93515-89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर (राज.)- फोनः 0291-2630490, फैक्सः 2636763, Website : jainratnaboard. com, E-mail:shikshanboardjodhpur@gmail.com

-नवरतन गिड़िया, सचिव

समाचार विविधा

क्रियोद्धारक भूमि बडलू में, ज्ञान क्रिया के संगम का वर्षावास है।
सामायिक, संवर, धर्मध्यान की, चहुँ ओर फैल रही सुन्दर सुवास है।।

जन-जन के कल्याणकारी, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुणरत्नाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग- व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 9 तथा व्याख्यात्री **महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.**, महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 8 के पावन वर्षावास में धर्माराधन-तपाराधना-ज्ञानाराधना का सुन्दर प्रसंग बना हुआ है। पूज्य आचार्य भगवन्त सहित समस्त चारित्रात्माएँ ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि के साथ साधना-आराधना में रत हैं।

प्रातःकालीन प्रार्थना श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. कराते हैं। प्रवचन महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. अपनी ओजस्वी सरस भाषा शैली में फरमा रहे हैं। दोपहर समय ज्ञाता धर्मकथांग की वाचनी सुन्दर विवेचन व विश्लेषण के साथ महान् अध्यवसायी मुनि श्री फरमा रहे हैं। परम श्रद्धेय पूज्य आचार्य भगवन्त जप-तप-मौनसाधना में विशेष रत रहते हुए भी प्रवचन पश्चात् मांगलिक फरमाने की कृपा कर रहे हैं तथा समय-समय पर आगन्तुकों को प्रभावी प्रेरणा कर रहे हैं। सीखने-सिखाने का कार्यक्रम प्रवचन पश्चात् व वाचनी के बाद चल रहा है। जिज्ञासु भाई/बहिनें इसका लाभ ले रहे हैं। उभयकाल प्रतिक्रमण व संवर-साधना का क्रम एवं सायं प्रतिक्रमण पश्चात् ज्ञान चर्चा का क्रम प्रवाहमान है।

विगत मास में 29 अगस्त को इन्दौर से राज्य सभा के सदस्य श्री मेघराजजी लोढ़ा दर्शनार्थ पूज्य श्री की चरण सन्निधि में उपस्थित हुए तथा प्रतिदिन सामायिक करने के नियम लिये। पूज्यप्रवर ने अहिंसा के क्षेत्र में विशेष सहयोग करने के लिये संकेत किया। 30 अगस्त को श्रीमती मंजूजी धर्मपत्नी श्री मनोजजी बोथरा (युवक परिषद् के अध्यक्ष) ने गुरुदेव के मुखारविन्द से 31 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान लिये। श्रीमती मंजूजी बोथरा रत्नसंघ में धर्मप्रभावना कर रही महासती श्री अंजनाजी म.सा. की सांसारिक बहिन हैं। भोपालगढ़ मूल से यह प्रथम मासखमण तप का अर्घ्य रहा। संयोग से आज ही वीरमाता श्रीमती रेखाजी/निर्मलकुमार जी जैन हिण्डौनसिटी वालों ने 24 दिवसीय तपस्या में 7 की तपस्या मिलाकर कुल 31 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान लिये। श्रीमती रेखाजी की सांसारिक ननद व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. के रूप में एवं सांसारिक सुपुत्री महासती श्री गरिमाश्रीजी म.सा. के रूप में जिनशासन की महती प्रभावना में योगदान कर रही हैं। श्रीमती रेखाजी ने पूज्य गुरुदेव के हिण्डौन चातुर्मास में मासक्षपण का अर्घ्य पावन श्री चरणों में अर्पित किया था। अजमेर निवासी श्रीमती भंवरीदेवीजी/शांतिलालजी वेदमुथा ने भी 30 के तप में 5 दिवसीय तप को ओर मिलाते हुए श्रीमुख से 35 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान लिए। 31 को बजरिया संघ, सवाईमाधोपुर दर्शन की भावना से उपस्थित हुआ।

दर्शन-वन्दन एवं आगामी वर्षावास की भावना निवेदन करने के लिये श्रद्धालु गुरुभक्तों का संघ रूप में, समूहरूप में पावन चरण सन्निधि में पधारने का क्रम प्रायः बना रहा। 02 सितम्बर को नदबई, सिरपुर संघ, 03 सितम्बर को हिण्डौनसिटी, अरटिया, जलगांव संघ, 04 सितम्बर को खाण्डिया गाँव के मूल प्रवासी बन्धुओं का

संघ वृहद् संख्या में दक्षिण से दर्शन वंदन की भावना से पूज्य गुरु भगवन्त के पादयुग्मों में उपस्थित हुआ। 05 सितम्बर को सवाईमाधोपुर शहर से पधारे श्री मोहनलालजी जैन सुपुत्र स्वर्गीय श्री मोतीलालजी जैन (एण्डवा वालों) ने पूज्य आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से अनन्त चतुर्दशी के दिन आचार्य भगवन्त में निहित छत्तीस गुणों की संख्या में 36 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान लिये। आज गोटन संघ के अतिरिक्त समीपस्थ अनेक स्थानों से गुरुभक्तों ने प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। 07 सितम्बर को श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. के पचोले की तपस्या का पारणा स्वास्थ्य समाधि के साथ हुआ। सुमेरगंजमण्डी संघ ने भगवन्त की सन्निधि में उपस्थित होकर क्षेत्र फरसने की विनति निवेदन की। 08 को बीकानेर संघ दर्शनार्थ एवं सेंधवा संघ आगामी चातुर्मास की भावना से पावन श्री चरणों में आया। 09 सितम्बर को इन्दौर संघ चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुआ।

विद्वत् संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर श्री धर्मचन्दजी जैन के संयोजकत्व में विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सप्तम राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन पूज्य आचार्य भगवन्त की चरण सन्निधि में क्रियोद्धारक भूमि बडलू में 9 व 10 सितम्बर को हुआ। संगोष्ठी का विषय **'जैन परम्परा में ध्यान'** रखा गया। देश के उच्च कोटि के 22 विद्वानों की उपस्थिति संगोष्ठी में रही। दोनों दिन चले 6 सत्रों में विद्वानों ने ध्यान पर अपने विचारों की प्रखर अभिव्यक्ति से धर्म सभा को प्रभावित किया। पूज्य गुरुदेव ने प्रातःकालीन सत्र में दोनों ही दिवस प्रवचनामृत के द्वारा जो मंगल उद्बोधन फरमाया, वह संक्षिप्त में इस प्रकार है-

किसी विषय, वस्तु, पदार्थ का चिंतन अधोगामी/पतन का कारण हो सकता है पर आत्मा का चिन्तन तारक है, निर्जरा का कारण है। भेदविज्ञान के बिना आत्मा-परमात्मा पर श्रद्धा वाला ध्यान डुबाने वाला है। तीर्थंकर भगवान ने ध्यान को हेय भी कहा तो उपादेय भी कहा है। आर्त्त और रौद्र हेय हैं तो धर्मध्यान-शुक्लध्यान आत्मपरक ध्यान हैं, शुभ हैं, उपादेय हैं। पर-परक ध्यान अशुभ है। संकल्प-विकल्प वाला ध्यान अशुभ है। केवली भगवन्त अपने चिंतन में रहते हैं। स्थानांग सूत्र में तीन प्रकार की जागरिकाओं का उल्लेख आता है- 1. बुद्ध जागरिका, 2. अबुद्ध जागरिका, 3. सुदट्ठु जागरिका। आत्म स्वरूप में चिंतन का स्वभाव केवलियों का है। अन्य विविध समाधान करते हुए भी वे अपने स्वरूप में रहते हैं। यह बुद्ध जागरिका है। हर लब्धिधारी का चिंतन रहता है कि मैं केवली बनूँ। सुबाहुकुमार ने चिंतन किया कि यदि मैं अभी संयमी न बन सकूँ तो श्रावक तो बन सकता हूँ। उसने श्रावक के 12 व्रत अंगीकार कर समर्थ बनने का प्रयत्न चालू रखा। फिर चिंतन किया कि यदि भगवान पधारें तो संयम अंगीकार कर लूँ। भगवान् 15 वर्ष बाद पधारे, अतः वह श्रमण धर्म में आरूढ़ हो गया। यह अबुद्ध जागरिका है। वर्तमान में देखने में आ रहा है कि पीड़ित लोग भी ध्यान कर रहे हैं। ऐसे लोगों का ध्यान मूल भावना से हटकर है। तामली तापसी की आत्म जागरणा है। चिंतन कर रहा है मुझे सब कुछ सुलभ है। इसका मतलब मैंने पूर्व जन्म में कुछ किया है। इसी कारण सब कुछ है। यदि पुण्य खुट गया तो क्या होगा? जो कुछ खा रहा हूँ, वह बासी खा रहा हूँ। तामली कुटुम्ब जागरण का चिंतन कर संयम अंगीकार कर लेता है। भगवान ने आपको 3 खजाने दिये हैं- मन, वचन, काया का प्राणिधान। इनका चिंतन करें। मन प्रणिधान है- यह मोक्ष के दरवाजे खोल सकता है। देह की आसक्ति नरक में ले जाने वाली है। शरीर का चिंतन आर्त्त-रौद्र है। यह चिन्तन करें कि जो भी क्रिया करने जा रहे हैं, उसमें पाप तो नहीं हो रहा। पाप से बचना है, परार्थ से हटना है। ध्यान करने के लिये नहीं, ध्यान रखने की चीज है। ध्यान रखने वाला जिंदगी भर रख सकता है। धर्म जाये, चारित्र जाये तो क्यों जाये, इसका भी चिन्तन रहना चाहिये, ध्यान रखना चाहिये। श्रावक धर्म में संयम धर्म में आस्था के साथ आगे बढ़ने का विशेष ध्यान रखेंगे, ऐसी मंगल भावना है।

10 सितम्बर को मेड़ता संघ, गोटन संघ, विजयनगर संघ, जलगांव संघ, धुलिया संघ चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुए। 11 सितम्बर को धुलिया संघ से पधारे भाई/बहिनों ने पौषधोपवास की साधना की। 12

सितम्बर को बजरिया संघ-सवाईमाधोपुर, 13 सितम्बर को अमरावती संघ पावन चरणों में उपस्थित हुआ। पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में महासती श्री महिमाश्रीजी म.सा. द्वारा उग्र तपस्या का अर्घ्य अर्पित करने की भावना से 14 सितम्बर को 27 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान प्रबल भावना से लिये। लेकिन सुख शांति की अनुभूति नहीं होने के कारण महासतीजी म.सा. ने 15 सितम्बर को विवशता में 27 दिवसीय तपस्या का पारणा किया।

15 सितम्बर को संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत, शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजजी बाफना, राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा बडलू की धरा पर विराजित पूज्य गुरुदेव की सेवा सन्निधि में पधार आये। आज श्राविका मण्डल का राष्ट्रीय अधिवेशन था, जिसमें 500 के लगभग श्राविकाओं की सहभागिता रही। 16 सितम्बर को युवक परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन एवं 17 सितम्बर को गुणी अभिनन्दन समारोह का प्रसंग था। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व मुख्य न्यायाधिपति, सर्वोच्च न्यायालय माननीय श्री राजेन्द्रमल जी लोढ़ा थे। संघ का उत्कृष्ट सम्मान **'रत्नसंघ' श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर** को प्रदान किया गया। सायं 4.00 बजे से आमसभा हुई।

17 सितम्बर को प्रवचन का स्थल विद्यालय परिसर में रखा गया। हजारों की संख्या में सामायिक-साधना में विराजे भक्तजन प्रवचनामृत का पान कर ''संघ की गतिविधियों में हर सदस्य की सहभागिता हो'' पूज्य आचार्य भगवन्त के मंगल उद्बोधन से प्रभावित, प्रेरित हर सदस्य, कार्यकर्त्ता की मुखमुद्रा प्रसन्न थी। मासक्षपण की शृंखला में आज रणसी गाँव निवासी खींवसरा परिवार की कुलवधू श्रीमती संगीतादेवीजी धर्मसहायिका श्री रमेशचन्दजी खींवसरा ने 29 में 2 मिलाकर 31 दिवसीय तपस्या के एवं गोटन निवासी श्री मुकेशचन्दजी टेलर ने भी 29 दिवसीय तपस्या में 2 मिलाकर 31 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से लिये। भाई मुकेशजी गोटन ने प्रवास समय अठाई की तपस्या का अर्घ्य अर्पित किया था। कोसाणा संघ, गोटन संघ ने पूज्य आचार्य भगवन्त के चातुर्मास की विनति रखी। 19 सितम्बर को भीलवाड़ा संघ दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। 20 सितम्बर को अहमदाबाद से जोधपुर निवासी श्री अरूणकुमारजी दशरथमलजी भण्डारी ने पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से 72 दिवसीय तपस्या में 3 मिलाकर कुल 75 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान लिये। श्री अरुणजी भण्डारी, अहमदाबाद चातुर्मास से मासखमण तप की आराधना को प्रारम्भ कर उसे हर वर्ष वृद्धिंगत कर रहे हैं। विगत वर्ष निमाज में भगवन्त के चरणों में 72 दिवसीय तप की आराधना की थी। 21 को मुमुक्षु आत्मन् श्री वरुणजी जैन ने पूज्य गुरुदेव की सेवा में आकर दर्शन-वंदन-आशीर्वचन का कृपा प्रसाद लिया।

23 सितम्बर को श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. के 07 जून से चल रही नींवी की सुदीर्घ आराधना का सम्पूर्ति दिवस था। पाँच पदों में निहित गुणों की संख्या के समान 108 नींवी की साधना का अर्घ्य श्रद्धाभक्ति पूरित भावों से पूज्य भगवन्त के पावन चरण कमलों में वर्षावास पाने के उपलक्ष्य में हर्षित, उल्लसित, प्रमुदित अंतर हृदय से समर्पित किया। तप की अनुमोदना स्वरूप भाई/बहिनों द्वारा 108 नींवी की आराधना की गई। महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. ने सुदीर्घ तपाराधना के अनन्तर दृढ़ मनोबल से 1008 बार तिक्खुतो के पाठ से सविधि वंदन गुरुदेव के चरणों में सुबह समय से प्रारम्भ कर चार घण्टे में पूरी कर जो श्रद्धा समर्पणता के भाव प्रदर्शित किये, वह अनुमोदनीय है।

24 सितम्बर को मुम्बई उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति सम्माननीय श्री कमलकिशोरजी तातेड़ ने पूज्य गुरुदेव के दर्शन-वंदन कर पावन सेवा का लाभ लिया।

भोपालगढ़ संघ की ओर से विद्वत्संगोष्ठी व अधिवेशन के समय आवास-प्रवासीय एवं भोजन-व्यवस्था प्रमोदकारी रही। दर्शनार्थ आने वालों का क्रम अनवरत बना हुआ है। आगतों की उत्सुकता से सेवा सन्निधि में संघ

अहर्निश तत्पर है। यहाँ की आतिथेय सत्कार भावना श्लाघनीय है। *-जगदीश जैन*

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के चातुर्मास में धर्माराधन एवं दर्शनार्थियों की निरन्तरता

उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 के चातुर्मास में निरन्तर धर्म का झरना बह रहा है। यहाँ प्रवचन श्रवण हेतु पर्युषण के पश्चात् भी श्रावक-श्राविकाओं की संख्या उल्लेखनीय है। 08 सितम्बर, 2017 को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं स्थानीय संघ के तत्त्वावधान में सप्तम विद्वत्संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसका विषय था 'जैन परम्परा में ध्यान'। इस संगोष्ठी में डॉ. जितेन्द्रभाई शाह-अहमदाबाद, प्रो. श्रीयांश सिंघई-जयपुर, प्रो. जिनेन्द्रकुमार जैन-उदयपुर, डॉ. अशोककुमार सिंह-दिल्ली, डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन-मुम्बई आदि अनेक विद्वान् उपस्थित हुए तथा अपने विचारों से लाभान्वित किया। ध्यान एकाग्रता है साथ ही यह समत्व की साधना का महत्त्वपूर्ण साधन है। कर्मक्षय में ध्यान सहायक है। यद्यपि ध्यान के लिए उत्तम संहनन की आवश्यकता होती है, तथापि आर्त्तध्यान एवं रौद्रध्यान को छोड़कर धर्मध्यान अपनाने योग्य है। इस प्रकार के विचारों से प्रारम्भ हुई ये गोष्ठी दिन में भी दो सत्रों में चली। मण्डल कार्याध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत, महात्मा निर्वाण बोधिसत्त्व आदि ने भी अपने विचारों से लाभान्वित किया। तत्त्वचिन्तक मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में ध्यान करने एवं ध्यान रखने स्वरूप दो ध्यानों की विवेचना की। कार्यक्रम का संचालन प्रो. धर्मचन्द जैन ने किया। संगोष्ठी 9 एवं 10 सितम्बर को पूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य में भोपालगढ़ में सम्पन्न हुई। सम्प्रति दो ध्यान शिविर सम्पन्न हुए हैं।

यहाँ पर्युषण के पश्चात् भी अच्छी धर्माराधना हो रही है तथा अनेक ग्राम-नगरों से श्रावक-श्राविकाओं का दर्शनार्थ आवागमन बना हुआ है। *-कनकराज कुम्भट, संयोजक-97848-03000, 98292-92939*

भीलवाड़ा चातुर्मास बना ज्ञानाराधना का केन्द्र

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 का भीलवाड़ा के शान्ति भवन में चातुर्मास ज्ञान-आराधना के साथ निरन्तर चल रहा है। पर्युषण पर्व के पश्चात् भी प्रवचन में उपस्थिति यथावत् है। बाहर से गुरुभक्तों का आवागमन बना हुआ है। जोधपुर, चेन्नई, बैंगलोर, इन्दौर,जलगांव, सूरत, भोपाल, धूलिया, सवाईमाधोपुर, जयपुर, हिण्डौनसिटी, विजयनगर आदि कई नगरों से संघों का आगमन हुआ है। यहाँ कतिपय स्वाध्याय संगोष्ठियाँ आयोजित हुई हैं। 'हमारा आगम और उसका परिचय' विषय पर आयोजित स्वाध्याय संगोष्ठी में श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने आगम में व्रतों के स्वरूप को समझाया। श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ने आगमों का परिचय दिया। प्राचार्य विद्वान् श्रावक श्री प्रकाशजी जैन ने आगम की महत्ता को प्रकट कर आगम के प्रति श्रद्धाभाव जगाने का प्रयास किया तथा श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने 'आगम ज्ञान और हमारी जिम्मेदारी' विषय पर व्याख्या कर श्रावकों को स्वाध्याय से जुड़ने की प्रेरणा दी। इसी प्रकार मिथ्यादर्शन/ सम्यग्दर्शन विषय पर आयोजित स्वाध्याय संगोष्ठी में तीनों संतों ने अपना चिन्तन प्रस्तुत किया एवं स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं ने जिज्ञासु भाव से लाभ लिया। स्थानीय लोगों की जिज्ञासा को देखते हुए आगामी 22 अक्टूबर को एक स्वाध्याय संगोष्ठी 'कर्म सिद्धान्त : एक विश्लेषण' विषय पर आयोजित की जायेगी, जिसमें पूरे दिन बाहर से पधारे विद्वान् चिन्तकों का वक्तव्य भी होगा। अपने बीच क्रियावान, ज्ञानवान एवं प्रवचनकार संतों को पाकर स्थानीय संघ प्रसन्नता का अनुभव करता है। संघ अध्यक्ष श्री गुलाबचन्दजी लोढ़ा, मंत्री श्री नवरतनजी सूरिया एवं अनेक वरिष्ठ श्रावकों की सेवाएँ अनुकरणीय हैं। *-दीपक बोथरा-94614-34024*

पाली चातुर्मास में धर्माराधन का लगा ठाट

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में पाली चातुर्मास निरन्तर उत्साह के साथ आगे बढ़ रहा है। अनेक स्थानों से संघों एवं श्रावक-श्राविकाओं का आगमन हुआ है। श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा. के एकान्तर तप चल रहे हैं। पर्वाधिराज पर्युषण के पश्चात् भी धर्माराधन नियमित गतिमान हैं। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. अपनी मधुरवाणी में सामायिक, महावीराष्टक स्तोत्र, सात निन्हव आदि पर प्रवचन फरमा चुके हैं। कहानी सप्ताह के अन्तर्गत जीवन वृत्तान्तों पर प्रभावी विवेचन हुए। आप अपने प्रवचन में सामाजिक कुरीतियों को दूर करने हेतु प्रभावी प्रेरणा फरमाते हैं। दिन में 12 से 1 बजे तक श्रावकों द्वारा नवकार मंत्र का जाप निरन्तर चल रहा है। 2 से 3 बजे तक उपासकदशांग की वाचना चल रही है। ज्ञानशाला के अन्तर्गत उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन का 30 भाई-बहिनों ने अध्ययन किया है। 1008 वंदना का क्रम उत्साहपूर्वक चल रहा है। अब तक 161 भाई/बहिन ये वन्दना कर चुके हैं। आयंबिल, उपवास, एकासन और तेले की लड़ी चातुर्मास प्रारम्भ से ही चल रही है। वीरपुत्र एवं वीरभाई श्री अशोककुमारजी सिंघवी ने सिद्धितप की आराधना पूर्ण की। श्री ऋषभ सूर्या ने मात्र 17 वर्ष की आयु में 31 दिवसीय मासक्षपण तप पूर्ण किया है। मासक्षपण की पूर्णाहूति पर 31 के स्थान पर 62 एकाशन हुए। कई भाई/बहिनों ने दया, संवर एवं पाँच सामायिक कर अनुमोदना की। आजीवन शीलव्रत के 35 प्रत्याख्यान हुए हैं। 'बहू कभी सास बनेगी' विषय पर श्री तरूणजी बोहरा द्वारा, 'मेरी माँ जिद्दी है' विषय पर श्री राजेन्द्रजी दुधेड़िया द्वारा तथा श्री राजेन्द्रजी लूंकड़ द्वारा 'बालिकाएँ एवं अभिभावक' विषय पर उद्बोधन दिया गया। यहाँ 33 अठाई तप, 18 एकान्तर तप दो माह, एक वर्षीतप, नौ निरन्तर एकाशन तप सम्पन्न हुए हैं। **चातुर्मास स्थलः**- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन (सुराणा मार्केट), जूनी कचहरी, धान मण्डी, पुलिस चौकी के सामने, पाली-मारवाड़-306401 (राज.), फोन : 02932-250021, 94610-16028 *-चैनराज मेहता-मंत्री-94130-79693*

महासती-मण्डलों के चातुर्मासों में धर्माराधन एवं तपाराधन की निरन्तर बढ़ती छटा

कोटा- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में धर्माराधना निरन्तर प्रवाहमान है। पर्युषण पर्वाधिराज पर अखण्ड नवकार मंत्र का जाप चला। 21 नियमों का पालन हुआ तथा प्रतिदिन प्रातःकाल अंतगडदशासूत्र का वाचन व प्रवचन, दोपहर में उववाईसूत्र की 22 गाथाओं का विस्तार से अर्थ समझाया गया। यहाँ ग्यारह दिवसीय 3, नौ दिवसीय 8, तेले 72, बेले 15, पचोले 8 तथा अठाई आदि की तपस्याएँ सम्पन्न हुईं।

-जगदीशप्रसाद जैन, मंत्री

घोड़ों का चौक, जोधपुर- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में पर्युषण के पश्चात् भी धर्म-ध्यान का ठाट लगा हुआ है। प्रवचन में भी अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं जिनवाणी का श्रवण कर रहे हैं। बाहरी क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाओं का नियमित आगमन हो रहा है। महासतियाँ जी के सान्निध्य में 21 से 25 सितम्बर तक श्राविकाओं के शिविर का आयोजन 10.00 से 12.00 बजे तक किया गया जिसमें लगभग 35-40 श्राविकाओं ने भाग लिया। इसमें अध्यापक के रूप में श्री नरपतजी चौपड़ा, श्री धर्मचन्दजी जैन 'रजिस्ट्रार', श्री तरूणजी बोहरा, श्री प्रकाशजी सालेचा, श्रीमती मीता जी मुल्तानी की अध्यापन सेवाएं प्राप्त हुईं। शिविर के पाँचों दिन ही सभी श्राविकाओं ने एकाशन तप की आराधना की तथा पाँचों दिन ही भोजन में जैन ध्वज के पाँच रंगों के अनुरूप खाद्य सामग्री बनाई गई। *-राजीव मेहता, संयोजक, चातुर्मास समिति*

हिण्डौनसिटी- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में धर्मसाधना निरन्तर गतिशील है। पर्युषण पर्व तक ग्यारह की 2, नौ की 3, अठाई 25, पाँच की 2, एक चोला, 50 तेले, 5 बेले एवं 400 उपवास के साथ दो एकाशन के मासक्षपण, एक नींवी की अठाई, एकाशन की 21 अठाई, दया उपवास की पंचरंगी 2, तथा अनेक तपस्याएँ हो चुकी हैं। तेले, आयंबिल, एकाशन एवं नींवी की लड़ी चल रही है। वीरमाता श्रीमती रेखाजी जैन (महासती श्री गरिमाश्रीजी म.सा. की सांसारिक माता) के 36 उपवास सम्पन्न हुए हैं। श्री सुमतचन्दजी जैन ने सजोड़े शीलव्रत अंगीकार किए।

जबलपुर- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा., महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 6 के चातुर्मास में पर्युषण के पश्चात् भी धर्माराधना का निरन्तर क्रम बना हुआ है। तेले की लड़ी एवं अन्य तपस्याएँ चल रही हैं। 12 सितम्बर को शैला समदडिया ने 35 के उपवास के प्रत्याख्यान लिए। महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. के प्रवचनों का पारिवारिक सामंजस्य एवं कलह निवारण में सहयोग प्राप्त हो रहा है। पर्युषण के आठ दिनों में तपस्याओं का ठाट रहा। 15 अठाई, 13 तेले एवं मासक्षपण (इंदिरा बागमार) सहित अनेक तपस्याएँ हुईं। कई श्रावक-श्राविकाओं ने जमीकंद, रात्रिभोजन, बड़ी स्नान, टी.वी, सचित्त जल एवं चप्पल-जूतों का त्याग रखा। यहाँ जलगांव से श्री रतनलालजी बाफना, मुम्बई से श्री मोफतराजजी मुणोत, चेन्नई से संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना सहित अनेक श्रावक-श्राविकाओं का आगमन हुआ। वीरपिता श्री नेमीचन्दजी कुडी, बालोतरा से जागीरदार परिवार, चेन्नई से वीरपिता श्री रिखबचन्दजी बागमार आदि का आगमन हुआ। यहाँ निकट एवं दूरवर्ती अनेक ग्राम-नगरों से श्रावक-श्राविकाओं का आगमन हुआ है। 24 सितम्बर को तपस्वियों का अभिनन्दन किया गया। मंजूजी बागमार ने 11+10, भारतीजी गादिया ने 11+15, सीमाजी बागमार ने 12+8 इस प्रकार दो बार तपस्याएँ कीं। संध्या समदडिया ने 15 तथा संध्या विनायकिया ने 16 के उपवास किए।

-मदनलाल बागमार, अध्यक्ष

नेहरूपार्क, जोधपुर- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 5 के चातुर्मास में धर्म की विशेष प्रभावना अनवरत रूप से गतिमान है। महासती मण्डल के संयम में पुरुषार्थ से सभी श्रावक-श्राविकाएं विशेष प्रभावित हैं। महासती जी ने श्रावक के 21 गुणों का प्रभावशाली विवेचन-विश्लेषण कर सभी श्रावक-श्राविकाओं में इन गुणों को विकसित करने की प्रेरणा की। श्रावक के 21 गुणों का विवेचन पूर्ण करने के पश्चात् 18 पापस्थानों का विविध उदाहरणों के माध्यम से समझाकर सभी को इनसे बचने की प्रेरणा कर रहे हैं। अनेकविध तपस्याओं के साथ नवपद आराधना का कार्यक्रम चल रहा है। 25 अक्टूबर से 1 नवम्बर तक यहाँ आचार्य की अष्ट सम्पदा आराधना कार्यक्रम होगा, जिसमें देश-विदेश से सभी श्रावक-श्राविकाएँ भाग लेने के लिए आमन्त्रित है।

-अरुण मेहता, संयोजक

फरीदकोट- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में चातुर्मास बहुत अच्छा चल रहा है। तपाराधन में बियासन, एकाशन, आयंबिल एवं तेले की लड़ी निरन्तर चल रही है। पर्युषण में उपवास, बेला-तेला, चोला-पचोला, एकाशन की अठाई, आयंबिल की अठाई, उपवास की अठाई एवं 11 तक की तपस्याएँ पूर्ण हुईं। एकाशन के पाँच मासक्षपण सम्पन्न हुए हैं। ज्ञानाराधना में सामायिक-प्रतिक्रमण, 25 बोल एवं अनेक थोकड़े सीखे जा रहे हैं। पर्युषण के आठों दिन नवकार मंत्र का अखण्ड जाप हुआ। प्रत्येक रविवार को प्रतियोगिता आयोजित होती है। पर्युषण में आठों दिन प्रतियोगिताएँ हुई। एक पंचरंगी हुई। अनेक भाई/बहिनों ने संवर-पौषध की साधना की। *-प्रीति जैन*

काचीगुड़ा (हैदराबाद) - सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 7 का वर्षावास ज्ञानाराधना एवं

धर्माराधना के साथ निरन्तर चल रहा है। पर्वाधिराज पर्युषण पर नवकार मंत्र का अखण्ड जाप रखा गया। आयंबिल, एकाशन, तेले आदि की लड़ी दया, संवर के साथ चल रही है। प्रत्येक रविवार को प्रश्नमंच चलता है। तपस्याओं में 17,16,15,11 दिवसीय तप एवं अनगिनत अठाई तप हुए हैं। 1 सितम्बर को महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. के 10, श्री दिलीपजी पीतलिया के 26, अलकाजी बोहरा के 16, सुनीताजी गुंदेचा के 15 उपवास हो चुके थे। सामूहिक पौषध लगभग 300 हुए तथा संवत्सरी प्रतिक्रमण में लगभग 2200 की उपस्थिति रही। यहाँ ज्ञानी-ध्यानी एवं प्रवचनकार संयमनिष्ठ महासती मण्डल को पाकर संघ अत्यन्त हर्षित है। चातुर्मास प्रारम्भ से ही 21 गुणों पर आधारित साधना, एक कदम मोक्ष की ओर तथा प्रातःकालीन युवकों की कक्षा के साथ चातुर्मास गतिमान है। प्रवचन में अच्छी उपस्थिति रहती है। *-हस्तीमल गुंदेचा, कार्याध्यक्ष*

नागौर- व्याख्यात्री महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 के चातुर्मास में धर्माराधना का ठाट रहा। यहाँ पर्युषण पर्व के आठ दिनों में सिद्धपद आराधना में 80 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। प्रथम दिन अनेक भाई/बहिनों ने 32 आगम के स्वाध्याय का, किन्हीं ने 10 आगम का, तो कइयों ने एक साल में एक आगम पढ़ने का नियम ग्रहण किया। आठ दिन 12 घण्टे नवकार मंत्र का नियमित जाप चला। बेला, तेला, सात, आठ, नौ की तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। एकाशन, उपवास एवं आयंबिल के तेले भी हुए। संवत्सरी के दिन 70 भाई/बहिनों ने पौषध एवं 28 ने संवर-साधना की। तेला एवं आयंबिल की लड़ी चल रही है। 22 भाई/बहिनों के एकाशन का सिद्धि तप चल रहा है। श्री सुनीलजी कांकरिया एवं नीलमजी कांकरिया ने शीलव्रत ग्रहण किया। *-कमलचन्द सुराणा, कोषाध्यक्ष*

सवाईमाधोपुर- व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 के चातुर्मास में सभी संघों के श्रावक-श्राविका उल्लासपूर्वक प्रवचन-श्रवण एवं धर्माराधना का लाभ ले रहे हैं। यहाँ पर्युषण पर्व में छोटी-बड़ी अनेक तपस्याएँ हुईं। 200 से अधिक तेले एवं 22 से अधिक अठाई तपस्याएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। *-लल्लूलाल जैन*

भोपालगढ़ में गुणी-अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा गुणी-अभिनन्दन-सम्मान समारोह का आयोजन रविवार, 17 सितम्बर, 2017 को भोपालगढ़ में दोपहर 1.30 बजे प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधिपति माननीय श्री राजेन्द्रमल जी लोढ़ा पधारे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री पी. शिखरमलजी सुराणा-चेन्नई ने की। मंच पर माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना-जलगांव, संघ की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री आनंदजी चौपड़ा-जयपुर, संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पारसचन्दजी हीरावत-मुम्बई, श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीना जी मेहता-जोधपुर, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेच्छा-पाली, भोपालगढ़ संघ के अध्यक्ष श्री शिंभूलाल जी चोरडिया तथा मंत्री श्री पुनवानचन्द जी ओस्तवाल आसीन हुए।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमान सुमतिचन्द जी मेहता-पीपाड़ शहर के मंगलाचरण से हुआ। गुणी अभिनन्दन सम्मान समारोह में पधारे अतिथियों के स्वागत में श्री जैन रत्न बालिका मण्डल-भोपालगढ़ द्वारा ''मन की वीणा से गुंजित ध्वनि मंगलम्'' स्वागत-गीत की प्रस्तुति की गई। स्वागत गीत के पश्चात् मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री राजेन्द्रमल जी लोढ़ा का अखिल भारतीय संघ तथा स्थानीय भोपालगढ़ संघ द्वारा माल्यार्पण, शॉल तथा स्मृति चिह्न भेंट कर स्वागत-अभिनन्दन किया गया। मुख्य अतिथि महोदय के साथ पधारी उनकी

धर्मसहायिका श्रीमती सुधा जी लोढ़ा का भी माला तथा चून्दड़ी से स्वागत किया गया।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री पी. शिखरमलजी सुराणा**-चेन्नई ने गुरु भगवन्तों को नमन कर मुख्य अतिथि सहित समस्त अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि बड़े गौरव का विषय है कि आज हम-सब गुणी अभिनन्दन सम्मान-समारोह में एकत्रित हुए हैं। उन्होंने न्यायमूर्ति श्री राजेन्द्रमल जी लोढ़ा का आभार मान, उनके पूज्य पिताजी न्यायाधिपति श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा की सेवाओं का उल्लेख करते हुए मुख्य अतिथि महोदय की विशेषताओं से अवगत कराया तथा मुख्य अतिथि महोदय से निवेदन किया कि आप हमारे हैं, संघ भी आपका है अत: आप संघ में निरन्तर पधारते रहें। उन्होंने कहा कि आज गुणी अभिनन्दन समारोह हो रहा है, मेरे मन में प्रश्न है कि गुण यानी क्या? गुण अनेक प्रकार के हैं पर नैतिक उच्चता, निष्कलंकता, पवित्रता, योग्यता आदि विशेष गुण हैं। उन्होंने संघ के पूर्व राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. अशोक जी कवाड़ (वर्तमान में श्रद्धेय श्री अशोक मुनि जी) के गुणों को बताते हुए संघ के अन्य विशिष्ट जनों का उल्लेख किया। गुणी अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह के बारे में जानकारी देते हुए संघाध्यक्ष महोदय ने कहा कि धन्य है हमारा रत्नसंघ जिसमें गुणीजनों का चयन कर उनका अभिनन्दन किया जाता है। इन गुणीजनों का सम्मान कर हम अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। उन्होंने सम्मानार्थ विभिन्न श्रेणियों की जानकारी देते हुए सम्मानित महानुभावों की विशेषताओं का भी उल्लेख किया।

सम्मान-समारोह में सर्वप्रथम संघ का सर्वोच्च सम्मान 'संघरत्न सम्मान' **श्री सुमेरसिंह जी बोथरा-जयपुर** को प्रदान किया गया। संचालक महोदय ने उनके बारे में जानकारी देते हुए कहा कि संघ-संरक्षक आदरणीय बोथरा साहब से संघ का प्रत्येक कार्यकर्ता परिचित है। जन सम्पर्क में आपको महारथ हासिल है, गुरुभ्राताओं से अधिकाधिक सम्पर्क आपके जीवन का लक्ष्य रहा है। यही कारण है कि संघ के अधिकांश सदस्य आपसे परिचित हैं। संघ में संघाध्यक्ष जैसे प्रतिष्ठित पद पर आपने दो कार्यकाल में रत्नसंघ के प्रथम श्रावकरत्न के रूप में अपनी पहचान प्रदर्शित की, उसी का सुफल है कि आप अब वर्तमान में संघ संरक्षक का कर्त्तव्य पूरी निष्ठा से निभा रहे हैं। संघ-समाज के हर कार्य में आपका तन-मन-धन से सहयोग रहता है। शिक्षा के क्षेत्र में आपने अपने अद्वितीय कार्यो से उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। सुबोध शिक्षा समिति के उन्नयन में आपकी भूमिका व भागीदारी से पूरा समाज परिचित है। बोथरा साहब प्राय: सभी सदस्यों से चाहे वह छोटा हो या बड़ा मिलते हैं तो संघ-सेवा के लिए प्रेरित करते हैं। उनको प्रदान किए जाने वाले अभिनन्दन पत्र का वाचन श्री नौरतन जी मेहता-जोधपुर ने किया।

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक **श्री मोफतराज जी मुणोत** ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज का दिन मेरे जीवन में विशेष है। उन्होंने कहा कि मुझे अंगुली पकड़ कर संघ सेवा में जिन्होंने आगे बढ़ाया वे थे आदरणीय श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा। उन्हीं के सुपुत्र आज हमारे बीच में मुख्य अतिथि के रूप में विराजित हैं। इनकी जितनी विशेषताएं बताई जाएं उतनी कम हैं। उन्होंने मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्रमल जी लोढ़ा से निवेदन किया कि आप समय-समय पर पधारकर संघ को अवश्य मार्गदर्शन प्रदान करें। आज दूसरा विशेष प्रसंग है मुझे संघ सेवा में जोड़ने वाले सुमेरसिंह जी बोथरा को 'संघ रत्न सम्मान' प्रदान करने का। संघ में इनका योगदान प्रेरणादायी है। संघ में मोतियों की कमी नहीं थी पर वे सब बिखरे हुए थे। उन मोतियों को एक माला में पिरोने का कार्य बोथरा साहब ने किया। संघ के वित्तीय पक्ष को मजबूत करने में सबसे ज्यादा योगदान इनका ही है। गांव-गांव, शहर-शहर घूम कर संघ के लिए सहयोग राशि एकत्रित करने में आपकी समर्पित सेवाएं रहीं। आप इसी तरह संघ को अपनी सेवाएं प्रदान करते रहें, मार्गदर्शन देते रहें, यही भावना है।

संघ में उल्लेखनीय सेवा प्रदान करने के लिए आदरणीय बोथरा साहब का माल्यार्पण तथा शॉल ओढ़ाकर राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने बहुमान किया तथा मुख्य अतिथि महोदय द्वारा रजत पट्टिका तथा अभिनन्दन पत्र भेंट

किया गया। इस अवसर पर **बोथरा साहब** ने अपने वक्तव्य में कहा कि संघ का आभारी हूँ कि मुझे इस सम्मान के योग्य समझा। इस अवसर पर मेरे माता-पिता व धर्मपत्नी का उपकार मानना चाहूँगा, जिन्होंने मुझे संघ-सेवा में आगे बढाया। साथ ही स्व. श्री चन्द्रराज जी सिंघवी का भी उपकार है, जिन्होंने मुझे संघ से जोड़ा।

'आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान' **डॉ. सुषमा जी सिंघवी-जयपुर** को जैन धर्म दर्शन के प्रचार-प्रसार एवं साहित्य सृजन में उल्लेखनीय सेवा प्रदान करने हेतु दिया गया। उनका श्रीमती नयनतारा जी बाफना-जलगांव द्वारा माला एवं शॉल द्वारा बहुमान किया गया एवं मुख्य अतिथि द्वारा 51 हजार की राशि के साथ प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया। डॉ. सुषमा जी सिंघवी ने सम्मान ग्रहण करने के पश्चात् अपने वक्तव्य में कहा कि आज गुरु की स्मृति में मिला यह सम्मान मुझे मिले अभी तक के सम्मानों में सर्वश्रेष्ठ है।

'विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान' अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार सुश्रावक **श्री धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर** को सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार एवं पर्युषण सेवा प्रदान करने के उपलक्ष्य में प्रदान किया गया। स्वाध्याय संघ के निदेशक श्री जगदीशमल जी कुम्भट-जोधपुर द्वारा माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ आपको मुख्य अतिथि द्वारा 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया।

'विशिष्ट महिला स्वाध्यायी सम्मान' सरलमना, श्राविकारत्न **श्रीमती लीला जी सालेचा-जलगांव** को सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार एवं पर्युषण सेवा प्रदान करने के उपलक्ष्य में श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीना जी मेहता-जोधपुर द्वारा माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा दिया गया तथा मुख्य अतिथि द्वारा 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया।

'विशिष्ट युवा स्वाध्यायी सम्मान' संघनिष्ठ, युवारत्न **श्री निर्मल जी मुथा-पीपाड़शहर** को सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार एवं पर्युषण सेवा प्रदान करने के उपलक्ष्य में युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेच्छा-पाली द्वारा माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मानित किया गया तथा मुख्य अतिथि द्वारा 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

'गुणी-अभिनन्दन' के अन्तर्गत चातुर्मास में विशेष सेवाओं हेतु **श्री भायन्दर वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मुम्बई** को सम्मानित किया गया। इस हेतु भायन्दर संघ के अध्यक्ष श्री रतनराज जी भंडारी तथा मंत्री श्री नरेन्द्र सी. गांधी का माल्यार्पण तथा शॉल से शासन सेवा समिति के सदस्य श्री गौतम जी हुण्डीवाल द्वारा सम्मान किया गया एवं मुख्य अतिथि द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भी भेंट किया गया।

अनन्य गुरुभक्त, संघनिष्ठ, संघ समर्पित श्रावकरत्न **श्री विमलचन्द जी सुराणा-चेन्नई** को चेन्नई में सामूहिक रात्रि भोजन त्याग हेतु विशेष प्रयास के लिए संस्कार केन्द्र के संयोजक श्री हर्षवर्द्धन जी ललवाणी द्वारा माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भी भेंट किया गया।

चतुर्विध संघ-सेवा में उल्लेखनीय योगदान हेतु संघनिष्ठ श्रावकरत्न **श्री नरपतराज जी चौपड़ा-जोधपुर** का चातुर्मास सेवा, संघ-सेवा, विहार-सेवा एवं संघ उन्नयन में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री विनयचन्द जी डागा-जयपुर द्वारा माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ ही मुख्य अतिथि द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

संघ समर्पित तपस्वीरत्न **श्री मोहनलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर** को उत्कृष्ट तपाराधना के लिए सम्मानित किया गया। संघ सेवा सोपान समिति के उपाध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी हीरावत द्वारा उनका माल्यार्पण एवं शॉल

द्वारा सम्मान करने के साथ ही मुख्य अतिथि द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

'न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमलजी लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा प्रतिभा सम्मान' प्रतिभाशाली **श्री अंचित जी भंडारी-जोधपुर** को शैक्षणिक क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त करने के उपलक्ष्य में चातुर्मास समिति के संयोजक श्री बुधमल जी बोहरा द्वारा माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा बहुमान करने के साथ ही मुख्य अतिथि द्वारा 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति पत्र के द्वारा किया गया।

'डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान' हेतु इस बार **डॉ. धीरेन्द्र कुमार जलवानी-जोधपुर, डॉ. सुधा जी भंडारी-उदयपुर, डॉ. ममता जी जैन-उदयपुर** तथा **डॉ. संगीता जी खारीवाल-बैंगलुरू** का चयन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित डॉ. धीरेन्द्र कुमार जलवानी-जोधपुर को संघ के संयुक्त महामंत्री श्री कैलाशमल जी भंडारी तथा श्री आर.सी. जैन द्वारा माला से सम्मानित किया तथा 11 हजार की राशि का चैक प्रदान किया गया। डॉ. संगीता जी खारीवाल-बैंगलुरू को श्रीमती नलिनी जी भाण्डावत द्वारा माला से सम्मानित किया गया तथा 11 हजार की राशि का चैक प्रदान किया गया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले **आराधना जी गुलेच्छा-पाली, अंजलि जी कोठारी-अजमेर** तथा **पूजा जी गिड़िया-जोधपुर** को शिक्षण बोर्ड के संयोजक श्री अशोक जी चोरडिया द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर भोपालगढ़ में चिकित्सा हेतु अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान करने हेतु दिव्या हॉस्पिटल के **श्री एम. आर. जोशी** तथा **डॉ. श्रीगोपाल जी भंडारी** का माल्यार्पण तथा शॉल से सम्मान किया गया।

समारोह में **मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री राजेन्द्रमल जी लोढ़ा** ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आज इस भव्य समारोह में अपने आपको यहां देखकर अच्छा लग रहा है। मेरी तारीफ में बहुत कुछ कहा गया, मैं इस लायक नहीं। मैंने मेरे माताजी-पिताजी को संघ-सेवा करते हुए देखा है। मैंने अपने आपको तीन मौकों पर बहुत छोटा पाया। पहला मौका आया जब मैं गौरी कुण्ड से केदारनाथ पैदल चला। 12-13 किलोमीटर के रास्ते दोनों तरफ विशालकाय पहाड़ देखे तो अपने आपको बहुत छोटा पाया। दूसरा मौका जब मैं भारत का मुख्य न्यायाधीश बना। जब मैं कोर्ट में बैठता था तो अपने आपको बहुत छोटा समझता था। देश की दिशा कैसी हो, यह सुप्रीम कोर्ट के फैसलों पर निर्भर करती है। कहीं भी कुछ भी चूक हो गयी तो मुझे माफ नहीं किया जा सकता। अत: उस समय भी मैं अपने आपको बहुत छोटा महसूस करता। तीसरा मौका आज है जब इन सभी गुणीजनों के बीच अपने आपको छोटा मान रहा हूँ। आज उपस्थित इन गुणीजनों की जितनी भी विशेषताएं हैं उनके विपरीत मुझमें तो कुछ भी गुण नहीं हैं। भगवान् महावीर ने इतने वर्षों पूर्व समरूपता, समरसता के लिए जो कुछ भी कहा वो अगर आज के लोग अपना लें तो देश का रूप ही अलग होगा। जैन धर्म के मौलिक स्तम्भ अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्तवाद हर इंसान को इंसान बनाने के लिए बहुत हैं। मैंने भी अनेकान्तवाद के सिद्धान्त को सामने रखकर कई अच्छे फैसले लिए। मोफतराज सा तथा सुराणा साहब ने मुझे कहा कि श्रावक संघ से जुड़ें। मेरा कहना है कि अब पवेलियन में बैठने का समय नहीं है अब खिलाड़ी बनकर मैदान में उतरने का समय है। प्रत्येक श्रावक को संघ के लिए कुछ न कुछ करना चाहिए। मेरा सुराणा साहब से निवेदन है कि कम से कम रत्नसंघ का सर्वेक्षण करवाना चाहिए कि शिक्षा के क्षेत्र में कितने वर्ष हमारे बच्चे बिताते हैं। हमारे समाज में जितने पढ़े-लिखे लोग है, वे कितने धर्म से जुड़े हैं। हम केवल प्योर डायमण्ड की पॉलिश नहीं करें जबकि जो अनकट डायमण्ड है उनकी भी पॉलिश करें। एक और मेरा सुझाव है सुराणा साहब को कि जरूरत है एक शोध केन्द्र बनाने की। हमारे जो सिद्धान्त हैं वे आज के युग में बहुत उपयोगी हैं। बच्चे-बड़े सभी के मन में यह भावना होनी चाहिए कि हमारे हाथ में जो जैन धर्म की पूंजी है वह अमूल्य है। लेकिन हमारे

पास जो है, हम उसकी कीमत नहीं जानते। इसलिए आवश्यकता है एक उच्च स्तरीय शोध केन्द्र बने, उसमें जैन धर्म के बारे में विस्तृत जानकारी हो, शोध हो।

शासन सेवा समिति के संयोजक **श्री रतनलाल जी बाफना** ने अपने उद्बोधन में कहा कि बोथरा जी सहित सभी गुणीजनों को बहुत-बहुत बधाई। आज गुरुदेव ने हम सभी आपस में कैसे मिल-जुल कर रहें, इस पर प्रवचन फरमाया। बाफना साहब ने अपनी चिरपरिचित शैली में कहा कि "बोलने से पहले लब्ज आदमी के गुलाम होते हैं और बोलने के बाद आदमी लब्ज का गुलाम हो जाता है।" अत: बोलने में विवेक आवश्यक है। आज से 2200 साल पहले जैनों की संख्या 40 करोड़ थी और आज 70 लाख है। यह चिन्ता का विषय है। अभी जो जनसंख्या के आंकड़े आए हैं उनमें तो जैनों की संख्या 44 लाख ही बताई गई है। इस ओर ध्यान देने की बहुत आवश्यकता है।

राष्ट्रीय महामंत्री **श्रीमान पूरणराजजी अबानी** ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि सहित सम्मान समारोह में पधारने वाले सभी महानुभावों का, गुणीजनों का हार्दिक आभार व्यक्त किया तथा गुणी-अभिनन्दन समारोह के भव्य आयोजन के लिए भोपालगढ़ संघ को धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम का सफल संचालन श्री प्रकाश जी सालेचा-जोधपुर तथा श्राविकारत्न श्रीमती मीता जी मुल्तानी-जोधपुर ने किया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा सानन्द सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र की संयुक्त वार्षिक साधारण सभा रविवार, 17 सितम्बर 2017 को 4 बजे भोपालगढ़ में संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। आमसभा में संघ-सदस्यों द्वारा विभिन्न सुझाव प्राप्त हुए। आमसभा में चातुर्मास तथा विभिन्न प्रसंगों पर आयोजित भोजन में एक मिठाई ही रखने का प्रस्ताव स्वीकार किया गया। सभी संस्थाओं की प्रगति विवरण रूप वार्षिक प्रतिवेदन सभी उपस्थित सदस्यों को वितरित किया गया, जिसे सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया। आमसभा में संघ एवं संघीय संस्थाओं के वर्ष 2016-2017 के ऑडिटेड आय-व्यय विवरण का अनुमोदन कर वर्ष 2017-2018 के बजट को सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। संस्कार केन्द्र के संयोजक श्री हर्षवर्द्धन जी ललवाणी, चातुर्मास समिति के उपाध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा, संघ-सेवा सोपान समिति के उपाध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी हीरावत ने अपनी संस्था/समिति की जानकारी प्रदान की। *-पूरणराज अबानी, महामंत्री*

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन 15 सितम्बर, 2017 को श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ (जिला-जोधपुर) में आयोजित हुआ। वार्षिक अधिवेशन कार्यक्रम में संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, शासन सेवा समिति के संयोजक माननीय श्री रतनलालजी बाफना-जलगांव, राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराना-चेन्नई, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्रीमती सुशीलाजी बोहरा-जोधपुर, श्री आनन्दजी चौपड़ा-जयपुर, श्राविका मण्डल की निदेशक श्रीमती मधुजी सुराना-चेन्नई, अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर, कार्याध्यक्ष श्रीमती मीनाजी गोलेच्छा-जयपुर, श्रीमती प्रमिलाजी दुगड़-

चेन्नई, महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेच्छा-पाली, भोपालगढ़ संघ के अध्यक्ष श्री शिम्भूलालजी चोरड़िया तथा श्राविका मण्डल भोपालगढ़ शाखाध्यक्ष श्रीमती प्रेमलताजी नाहर व बालिका मण्डल अध्यक्ष सुश्री रक्षिताजी चोरड़िया ने मंच को सुशोभित किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता के 'ऊं परमेष्ठी वज्र पंजर स्तोत्र' से हुआ। मंगलाचरण बालिका मण्डल तथा स्वागत गीत भोपालगढ़ श्राविका मण्डल ने किया। श्राविका मण्डल महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर ने सदन को सम्बोधित करते हुए कहा कि समय आया है हमें अपने कर्त्तव्य को समझने का, एक-दूसरे से सीखने का। आप-सब सहभागिता देकर संघ के विकास में सहभागी बनें। श्राविका-मण्डल द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि प्रवास कार्यक्रम तथा सम्पर्क के कारण 74 शाखाएँ स्थापित हो गयी हैं। आगम परीक्षा योजना निरन्तर चल रही है। प्रत्येक शाखा अपने आपमें अच्छा कार्य कर रही है, परन्तु पाँच बड़ी शाखाओं को एक-एक प्रोजेक्ट दिया जा रहा है। इस प्रोजेक्ट के माध्यम से सभी शाखाएँ सम्पर्क में रहेंगी। 1. जलगाँव शाखा- आध्यात्मिक क्षेत्र में ज्ञान-ध्यान एवं शिविर आयोजित करेगी। 2. जोधपुर शाखा- नैतिक क्षेत्र में अधिक गतिविधियाँ हो इस हेतु वैयावृत्त्य एवं संत-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहेंगी। 3. बैंगलोर शाखा- सामाजिक क्षेत्र में, 4. जयपुर शाखा-व्यसन-फैशन मुक्त हो सारा जन कार्यक्रम को आगे बढ़ायेंगी। 5. चेन्नई शाखा- अधिक से अधिक बहिनों को जोड़ने का कार्य करेगी।

राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा ने अपने उद्बोधन में कहा कि क्रियोद्धार भूमि भोपालगढ़ ज्ञान-ध्यान सीखने का केन्द्र बना हुआ है। श्राविका मण्डल बहुत सक्रिय है, जिसके लिए बधाई। जिन-जिन बहिनों ने बड़ी तपस्याएँ कीं, उनका अभिनन्दन करता हूँ और संघ की ओर से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। उन्होंने नारी शक्ति की महत्ता दीक्षा की अनुमति प्रदान करने के संदर्भ में उदाहरण देकर प्रस्तुत की। तीन शाखाओं को अखिल भारतीय स्तर पर सम्मानित किया गया- 1. बैंगलोर शाखा को मानव सेवा हेतु सम्मानित किया गया। अध्यक्ष वेजयन्तीजी मेहता एवं शशिप्रभाजी गुलेच्छा ने अपनी टीम के साथ सम्मान ग्रहण किया। जोधपुर शाखा अध्यक्ष श्रीमती सुशीलाजी गुलेच्छा एवं उनकी टीम को भी सम्मानित किया गया। 2. अजमेर शाखा अध्यक्ष श्रीमती अल्का जी दुधेड़िया, सचिव श्रीमती ममता जी भण्डारी को सम्मानित किया गया। 3. सवाईमाधोपुर शाखा अध्यक्ष श्रीमती मंजूजी जैन एवं सचिव श्रीमती सपनाजी जैन का टीम सहित सम्मान किया गया।

जलगांव शाखा अध्यक्ष श्रीमती ललिताजी कटारिया, बैंगलोर शाखा अध्यक्ष श्रीमती वेजयन्तीजी मेहता ने अपने क्षेत्र की गतिविधियों से अवगत कराया। श्रीमती सरोजजी तातेड़-मेड़ता, श्रीमती शकुन्तलाजी हींगड़-पाली, श्रीमती शान्ताजी नाहर-भोपाल ने अपनी-अपनी शाखाओं एवं क्षेत्रों में हुए कार्यों की जानकारी दी।

मध्यम शाखा सम्मान के अन्तर्गत बालोतरा की अध्यक्ष श्रीमती अनिताजी चौपड़ा, सचिव श्री संजूजी भण्डारी को, अलीगढ़-रामपुरा शाखा अध्यक्ष श्रीमती अरूणाजी जैन एवं सचिव श्रीमती रेखाजी जैन को सम्मानित किया गया। श्रीमती अरूणाजी जैन ने अलीगढ़-रामपुरा की गतिविधियों की जानकारी दी। नदबई से श्रीमती गौमती जैन एवं सचिव श्रीमती शकुन्तलाजी जैन को तृतीय शाखा के रूप में सम्मानित किया गया।

छोटी शाखा के अन्तर्गत गंगापुर सिटी को रखा गया। किन्तु किसी कारण से वे नहीं पहुँच पाये। पाली शाखा अध्यक्ष श्रीमती सुभद्राजी धारीवाल एवं सचिव श्रीमती शकुन्तलाजी हींगड़ तथा तृतीय शाखा खेरली की अध्यक्ष श्रीमती कमलेशजी जैन एवं सचिव श्रीमती बुलबुलजी जैन का अभिनन्दन किया गया।

शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि नारी घर परिवार ही नहीं पूरे समाज को सुधार सकती है। संघ कार्याध्यक्ष श्रीमती सुशीलाजी बोहरा ने कहा कि श्राविका

मण्डल को भ्रूण हत्या प्रोजेक्ट पर कार्यशालाएँ आयोजित करनी चाहिए। श्राविका मण्डल की सचिव श्रीमती जया जी गोखरू ने व्यसन-मुक्ति प्रोजेक्ट के बारे में कार्य करने की जानकारी दी। श्राविका मण्डल की निदेशक श्रीमती मधुजी सुराणा ने चेन्नई शाखा की तथा श्रीमती चन्द्रलताजी मेहता ने दूदू शाखा की जानकारी दी। संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने कहा कि श्राविका मण्डल अपना एक शिविर महाबलेश्वर में आयोजित करें। सान्तवना पुरस्कार भोपाल शाखा एवं हरसाना शाखा को प्रदान किया गया। श्राविका मण्डल की गतिविधियों में सहयोग हेतु श्री राजेशजी जैन-हिण्डौनशहर तथा वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमती मोहिनीदेवीजी जैन-आलनपुर का अभिनन्दन किया गया। गोटन की श्रीमती पूनमजी चौपड़ा का संत-सतीवृन्द की विहार सेवा में उल्लेखनीय योगदान हेतु सम्मान किया गया। भोपालगढ़ शाखा अध्यक्ष श्रीमती प्रेमलताजी नाहर, श्रीमती सुमनजी लूंकड़, श्री जैन रत्न बालिका मण्डल की अध्यक्ष सुश्री रक्षिताजी चोरडिया, सचिव सुश्री भावनाजी वैद, पीपाड़ शाखा अध्यक्ष श्रीमती सुशीलाजी मेहता, सचिव श्रीमती प्रेमलताजी मेहता का भी सम्मान किया गया।

'बनें आगम अध्येता' कार्यक्रम के अन्तर्गत उत्तराध्ययन सूत्र की परीक्षा में प्रथम शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाली श्रीमती नीताजी विमलजी देवड़ा-कारंजालाड़ (महा.) का स्वागत अभिनन्दन कर प्रमाण-पत्र के साथ 31000/- की राशि का चैक प्रदान किया गया। द्वितीय स्थान पर रही श्रीमती राखीजी कोठारी-अहमदनगर (महा.) उपस्थित नहीं हो सकी। तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली श्रीमती दीपिकाजी सुरेन्द्रकुमारजी गाँधी को 11000/- की राशि का चैक प्रमाण-पत्र सहित प्रदान किया गया। आवश्यक सूत्र खुली पुस्तक परीक्षा में प्रथम रही सुश्री रुचिजी कमलचन्द जी जैन-जयपुर को 31000/- की राशि के चैक के साथ प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। श्रीमती ममताजी दिलीपकुमारजी राखेचा-बुलढ़ाणा (महा.) समारोह में उपस्थित नहीं हो सकी। तृतीय स्थान पर रही चेन्नई की श्रीमती बबीताजी विमलकुमारजी गादिया का प्रमाण-पत्र एवं 11000/- की राशि के चैक से सम्मान किया गया।

इस अधिवेशन में लगभग 30 से अधिक ग्राम-नगरों की 500 श्राविकाओं ने भाग लिया। अंत में मण्डल की परामर्शदाता श्रीमती मंजूजी भण्डारी-बैंगलोर ने हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया एवं भोपालगढ़ संघ की सुन्दर व्यवस्था हेतु भी धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता ने किया।

- पूर्णिमा लोढ़ा, अध्यक्ष

बनें आगम अध्येता

'बनें आगम अध्येता' योजना के अन्तर्गत उत्तराध्ययनसूत्र भाग-1 से 3 का पारितोषिक सभी प्रतिभागियों को भेजा गया है। आवश्यकसूत्र खुली पुस्तक का परिणाम भी प्रतिभागियों के मोबाइल पर प्रेषित किया गया है। आवश्यकसूत्र परीक्षा का पारितोषिक प्रतिभागी के बैंक खाते में ही प्रेषित की जायेगी। अत: प्रतियोगिता के प्रत्येक प्रतिभागी अपना नाम, स्थान का उल्लेख करने के साथ निम्न जानकारी व्हाट्स-अप नं. 94131-32362 पर भिजवाने का श्रम करावें :- Name of Bank, Name of Account holder, Bank Account Number, Bank Place, Bake IFS code, Micr Code, Mobile No., श्राविका मण्डल E-mail shravikamandal@yahoo.com

-बीना मेहता-महासचिव

स्वाध्याय संघ के विकासार्थ सबसे विनम्र अनुरोध

स्वाध्याय संघ जोधपुर की प्रवृत्तियों में आर्थिक सहयोग एवं पर्युषण सहयोग देकर पुण्य के भागीदार बनें। कोई भी संस्था श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को पर्युषण सहयोग राशि अथवा अन्य कोई राशि सहयोग करना चाहे तो वह राशि चैक/डी.डी. द्वारा श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के नाम से भिजवा सकते हैं

अथवा ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स जोधपुर के ऑनलाइन बैंक खाता संख्या 00592010003010 IFSC Code-ORBC0100059 में इस नाम से नकद अथवा ड्राफ्ट द्वारा जमा करवा सकते हैं। आर्थिक एवं पर्युषण सहयोग आयकर अधिनियम 80जी के अन्तर्गत कर से मुक्त है। सहयोग राशि जमा कराने वाले संघ एवं संस्थान से विनम्र अनुरोध है कि सहयोग राशि जमा कराने के साथ कार्यालय में सूचना अवश्य करावें ताकि सहयोग राशि की रसीद सम्बन्धित व्यक्ति को समय पर भिजवाई जा सके, जिससे किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। **सम्पर्क सूत्र:-** 0291-2624891 (कार्यालय), मो. 9414126279 (कार्यालय समय प्रात: 10:00 से सायं 05:00)

-ओमप्रकाश बांठिया, संयोजक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर का वार्षिक अधिवेशन शनिवार, 16 सितम्बर 2017 को श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ में आयोजित हुआ। अधिवेशन में संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत, शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना, संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा साहब, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्रीमती सुशीला जी बोहरा, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री आनन्द जी चौपड़ा, संघ महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी, श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीना जी मेहता, युवक परिषद् अध्यक्ष श्री राजकुमार जी गोलेच्छा, कार्याध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी लुंकड़, श्री लोकेश जी कुम्भट, भोपालगढ़ युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री मनोज जी बोथरा ने मंच को सुशोभित किया। युवारत्न श्री परेश जी मुथा-पीपाड़ सिटी ने मंगलचारण एवं संकल्प कराकर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

युवक परिषद् के कार्याध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी लुंकड़ ने सभी पधारे हुए अतिथिगणों एवं युवारत्नों का स्वागत करते हुए युवक परिषद् की गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों से पधारे युवारत्नों से आह्वान किया कि वे युवक परिषद् में सक्रियता से जुड़ें।

युवक परिषद् के राष्ट्रीय कार्यक्रमों का प्रगति विवरण युवक परिषद् के उपाध्यक्ष श्री विकास जी जैन, श्री नमन जी मेहता, श्री राजेन्द्र जी दुधेड़िया ने प्रस्तुत किया। सूचना संग्रहण कार्यक्रम की जानकारी देते हुए विकास जी जैन ने बताया कि अभी तक संघ के लगभग 10000 सदस्यों के फार्म वेबसाइट पर भरे गये हैं। आप सभी का सक्रिय सहयोग इसमें अपेक्षित है, जिससे यह संख्या उत्तरोत्तर बढ़ सके। धार्मिक शिक्षण एवं शिविर के बारे में जानकारी देते हुए नमन जी मेहता ने बताया कि इस वर्ष मारवाड़, मध्य राजस्थान, जयपुर, पोरवाल, पल्लीवाल, महाराष्ट्र, तमिलनाडू के 62 स्थानों पर ग्रीष्मकालीन शिविरों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। उन्होंने शिविरों में सम्पन्न कार्यक्रमों की भी जानकारी प्रदान की। श्री राजेन्द्र जी दुधेड़िया ने सामायिक-स्वाध्याय एवं निर्व्यसनता कार्यक्रम की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस वर्ष विभिन्न स्थानों पर निर्व्यसनता रैली तथा विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से उत्कृष्ट वक्ताओं ने प्रेरणा की।

युवक परिषद् के महासचिव श्री मनीष जी लोढ़ा ने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि सभी शाखाएं अपने-अपने क्षेत्र में सक्रियता से कार्य कर रही हैं परन्तु उनकी रिपोर्ट हम तक नहीं पहुंच पाती है। कार्य सभी करते हैं परन्तु कमी केवल इतनी है कि मुख्य कार्यालय में उसकी सूचना नहीं पहुंच पाती। आप सभी से निवेदन है कि किए गए कार्यों की रिपोर्ट अवश्य कार्यालय को प्रेषित करें।

वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर युवक परिषद् की पीपाड़ शहर शाखा को वृहद् शाखा श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ

शाखा से सम्मानित किया गया। इसी प्रकार लघु शाखा श्रेणी में भोपालगढ़ शाखा को सर्वश्रेष्ठ शाखा के रूप में सम्मानित किया गया। सम्मान की कड़ी में चतुर्विध संघ-सेवा हेतु बालोतरा तथा जलगांव शाखा को, व्यसन मुक्ति कार्यक्रम हेतु बीजापुर शाखा को, धार्मिक शिक्षण एवं शिविर हेतु जयपुर शाखा को, सामायिक-स्वाध्याय हेतु सूरत शाखा को तथा श्रुत-सेवा हेतु चेन्नई शाखा को सम्मानित किया गया।

वर्षीतप आराधना हेतु जोधपुर के युवारत्न श्री लोकेश जी सुरेन्द्र जी कुम्भट को सम्मानित किया गया। समाज सेवा में अपना उल्लेखनीय योगदान देने हेतु चेन्नई के युवारत्न श्री आर. गौतमचन्द जी बाघमार, श्री संजयकुमार जी चौधरी, श्री सूर्यप्रकाश जी चोरडिया का भी सम्मान किया गया। धार्मिक शिक्षण में विशेष सेवा प्रदान करने वाले युवारत्न वीर भ्राता श्री विरेन्द्र जी कांकरिया तथा श्री भरत जी बाघमार का युवक परिषद् की ओर से सम्मान किया गया। इसी के साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में संत-सती वर्ग की विहार सेवा में अपना उल्लेखनीय योगदान प्रदान करने हेतु युवारत्न बन्धुओं का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर संघाध्यक्ष महोदय श्री पी. शिखरमल जी सुराणा ने अपने उद्बोधन में कहा कि संघ की सभी गतिविधियां युवाओं के सहयोग के बिना संभव नहीं है। इसलिए सभी युवा संघ-सेवा में आगे बढ़ें, सक्रिय हों, ऐसी आशा है। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत ने फरमाया कि युवक परिषद् के अधिवेशन में युवाओं की संख्या अपेक्षा से कम नज़र आ रही है। इस ओर विशेष प्रयास करें और प्रत्येक शाखा के युवाओं को जोड़ें। अन्त में नमन जी मेहता ने सभी पधारे हुए अतिथिगणों तथा युवारत्नों का आभार प्रकट करते हुए भोपालगढ़ शाखा को सुन्दर व्यवस्था हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन कमलेश मेहता ने किया।

-मनीष लोढ़ा, महासचिव

नेहरूपार्क स्थानक, जोधपुर में आचार्य की अष्ट सम्पदा आराधना का विशिष्ट कार्यक्रम

संघनायक आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की असीम अनुकम्पा, अनुज्ञा से नेहरूपार्क, जोधपुर में व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में आचार्य की अष्ट सम्पदा आराधना का कार्यक्रम 25 अक्टूबर 2017 (ज्ञानपंचमी) से 01 नवम्बर 2017 तक आयोजित किया जा रहा है। इस विशिष्ट आराधना में देश-विदेश के सभी श्रावक-श्राविकाएँ आमन्त्रित हैं। भाग लेने के इच्छुक साधक 098281-41757, 093147-09071, 094604-65708 पर अपना नाम पंजीकृत करवाकर 24 अक्टूबर 2017 को सायंकाल तक साधना स्थल पर पधारें। आठ दिन महासती मण्डल के सान्निध्य में विशेष साधना करने का अनुपम अवसर है, अवश्य लाभ उठाएँ। सभी साधकों को संवर की साधना व कम-से-कम बियासन की तपस्या करना अनिवार्य रहेगा। सारी व्यवस्था संघ की रहेगी। *-अरुण मेहता, संयोजक, चातुर्मास समिति*

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र की उपलब्धियाँ

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सहयोगी संस्थाओं के वार्षिक अधिवेशन तथा गुणी-अभिनन्दन के अवसर पर श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के संयोजक श्री हर्षवर्द्धन ललवानी ने संस्कार केन्द्र का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा अतिथियों द्वारा 'प्रतिभा प्रदर्शन समारोह' पुस्तक का विमोचन किया गया। इस पुस्तक की 1500 प्रतियाँ आर्ट पेपर पर छपवाई गईं, जिसमें 300 प्रतियाँ अधिवेशन में उपस्थित महानुभावों में वितरित की गई तथा 800 प्रतियाँ संस्कार केन्द्र द्वारा संचालित रविवारीय संस्कार शिविरों एवं संस्कार केन्द्र के छात्रों, अध्यापकों व संयोजकों को वितरीत की गई। केन्द्र द्वारा आयोजित प्रतिक्रमण परीक्षा 2017 में प्रथम

श्रेणी से उत्तीर्ण होने वाले 36 छात्र-छात्राओं द्वारा स्थानीय स्तर पर अथवा नजदीकी स्थान पर प्रतिक्रमण करवाया गया। संवत्सरी प्रतिक्रमण कराने वाले छात्रों को 1000 रुपये तथा दो या चार दिन प्रतिक्रमण कराने वाले को 250 रुपये का प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा। 29 अक्टूबर को सामायिकसूत्र की मौखिक परीक्षा आयोजित की जा रही है, जिसमें 4 से 8 वर्ष तथा 8 वर्ष से अधिक आयु के अलग-अलग वर्ग होंगे। पोरवाल, पल्लीवाल व मारवाड़ क्षेत्र में आयोजित विधि सहित मौखिक प्रतिक्रमण परीक्षा में 170 छात्र-छात्रा उत्तीर्ण हुए हैं। सम्प्रति जोधपुर में 32 संस्कार केन्द्र एवं 40 रविवारीय संस्कार शिविर चल रहे हैं तथा जोधपुर से बाहर 39 संस्कार केन्द्र कार्यरत हैं।

-हर्षवर्द्धन ललवाणी, संयोजक

नेपाल में 250 रुपये के सिक्के पर भगवान महावीर का चित्र

नेपाल सरकार द्वारा 250 रुपये का एक सिक्का जारी किया गया है। जिस पर श्रमण भगवान महावीर का चित्र उट्टंकित है। यह सिक्का प्रभु महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक के अवसर पर जारी किया गया।

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई- अ.भा. जैन अल्पसंख्यक महासंघ (एआईजेएमएफ) की राष्ट्रीय कार्यसमिति की सभा में देश के 19 राज्यों के पदाधिकारियों व प्रतिनिधियों की उपस्थिति में डॉ. एस. कृष्णचंद चोरडिया को सर्वसम्मति से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया। यह कार्यक्रम 9 सितम्बर 2017 को नई दिल्ली स्थित महाराष्ट्र सदन में सम्पन्न हुआ। इस मौके पर एआईजेएमएफ की सुगन हाउस शाखा को सबसे बड़ी तथा सर्वश्रेष्ठ शाखा का सम्मान भी प्रदान किया गया। यह सम्मान कोषाध्यक्ष सुभाष चोरडिया ने ग्रहण किया। *-जी. संपत बागमार, शाखा सचिव*

जयपुर- दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित जैनविद्या संस्थान से 'पत्राचार जैनधर्म-दर्शन एवं संस्कृति सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम-2018' में प्रवेश हेतु आवेदन करें। जैन धर्म-दर्शन एवं संस्कृति पाठ्यक्रम की अवधि 01 से 31 दिसम्बर 2018 तक है। आवेदन-पत्र व नियमावली निम्न वेबसाइट से प्राप्त करें-jvs. jainapa.org, एवं apa. jainapa.org

इसी संस्था द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी से राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा मान्यता प्राप्त 'पत्राचार प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम' एवं 'पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम'-2018 में प्रवेश योजना निम्न प्रकार है- 1. प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम अवधि 1 जनवरी 2018 से 31 दिसम्बर 2018 तक तथा 2. अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम अवधि 1 जनवरी 2018 से 31 दिसम्बर 2018 तक है। आवेदन पत्र व नियमावली निम्न वेबसाइट से प्राप्त करें-pra.jainapa.org एवं apa. jainapa.org

तीनों पाठ्यक्रमों हेतु शुल्क सहित आवेदन पत्र कार्यालय में पहुँचने की अंतिम तिथि 28 फरवरी, 2018 होगी। **सम्पर्क-** डॉ.कमलचन्द सोगाणी, निदेशक-अपभ्रंश साहित्य अकादमी, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-302004 (राज.)

हैदराबाद- अनेक वर्षों से ऊँट राजस्थान से हैदराबाद की ओर आ रहे हैं। विभिन्न प्रसंगों पर इनका कत्ल धर्म के नाम कर दिया जाता है। पशु प्रेमी पूनम कपूर ने मलकपेट पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कर पशु कानून के तहत इन ऊँटों को सुरक्षित बचा लिया तथा 17 वें मेट्रोपोलिटियन मजिस्ट्रेट आदेशानुसार राजस्थान वापस भेजने का आदेश दे दिया। पशु कल्याण संगठनों की मदद से 8 लॉरियों में क्रेन से चढ़ाकर राजस्थान की ओर अहिंसा रत्न श्री जसराजजी श्रीश्रीमाल एवं जीवदया प्रेमी श्री सुरेन्द्रजी भण्डारी के नेतृत्व में रवाना किया गया। जिसमें मुख्य भूमिका G.S.P.C.A, भारतीय प्राणी मित्र संघ, पिपुल्स फॉर एनिमल्स, करुणा इण्टरनेशनल इत्यादि संगठनों की रही। अब तक 171 ऊँटों

को कत्ल होने से बचाकर सुरक्षित राजस्थान भेजा गया है। राजस्थान सरकार द्वारा कानून को और सख्त बनाकर ऊँटों की सुरक्षा की जायेगी। *-श्री श्रीपाल देशलहरा*

नगरी- अखिल भारतीय स्तर पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है, जिसका विषय 'युग निर्माता आचार्य श्री रामेश एक विराट् व्यक्तित्व एवं कृतित्व' है। शब्द सीमा 2000 शब्द है तथा प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए उम्र का कोई बंधन नहीं है। पुरस्कार इस प्रकार देय हैं- **प्रथम पुरस्कार**-5000/-, **द्वितीय पुरस्कार**-3000/-, तृतीय पुरस्कार- 2000/-, चतुर्थ पुरस्कार-500/-, पाँच प्रोत्साहन पुरस्कार- 300/- प्रत्येक। निबन्ध भेजने की अन्तिम तिथि 30 नवम्बर 2017 है। चयनित निबंध पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जायेगा। **भेजने का पता**- महेश नाहटा, नगरी-493778, जिला-धमतरी (छतीसगढ़), मोबाइल : 94062-01351

जयपुर- ईद से पूर्व जैन श्वेताम्बर संघ, जयपुर के तत्त्वावधान एवं श्री राजेशमुनिजी महाराज के सान्निध्य में 27 अगस्त 2017 को 95 बकरों को अभयदान दिया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में जीवदया प्रेमी श्री नरेन्द्रजी कक्कड़ के प्रयास रहे। *-मनोज बाफना, अध्यक्ष, श्री वर्ध. स्था. जैन श्रावक संघ*

अजमेर- श्री जैन श्वेताम्बर संस्था, वैशाली नगर, अजमेर में महासती श्री इन्दुप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में पूज्य श्री जैनमतीजी म.सा. की जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में जीवदया प्रेमी जयपुर निवासी श्री नरेन्द्र जी कक्कड़ के तन-मन-धन से सहयोग से 103 बकरों को अभयदान दिलाकर 57 बकरे जैतारण एवं 46 बकरे भोपालगढ़ बकरा शाला में भेजे गए। *-रमेश सिंघी*

विजयपुर (कर्नाटक)- श्री जैन रत्न युवक परिषद् बीजापुर द्वारा दो दिन में 7 अलग-अलग जगहों पर कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी दुधेड़िया बैंगलोर ने "मेरी माँ जिद्दी है", "रिश्ते जीतना मेरी आदत है" आदि अनेक विषयों पर संबोधित किया, जिसमें 2000 से ज्यादा लोगों को लाभ मिला। *-नीरज पारसमल बोथरा*

जयपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर द्वारा 4-5 नवम्बर, 2017 को **"Empowerment of Girls"** कार्यक्रम का आयोजन स्वाध्याय भवन, महावीर नगर स्थानक, जयपुर में करने जा रही है, जिसमें 12 वर्ष से ऊपर की सभी अविवाहित बालिकाएँ आमन्त्रित हैं। इस कार्यक्रम की अधिक जानकारी के लिए श्री सुनीलजी कोठारी-9314933516 एवं श्री शैलेषजी कोठारी-9680030080 से सम्पर्क करें। *-मनीष मुणोत, क्षेत्रीय प्रधान*

बधाई

चेन्नई- साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को साहित्य मण्डल, नाथद्वारा (राजस्थान) की ओर से 14 सितम्बर 2017

को 'हिन्दी भाषा भूषण' से विभूषित किया गया तथा उन्हें गद्य-पद्यमय अभिनन्दन पत्र प्रदान कर 'रघुनाथ सम्मान-2017' से सम्मानित किया गया। 'हिन्दी लाओ देश बचाओ' समारोह के अन्तर्गत 19 राज्यों के हिन्दी साहित्यकारों की 'हिन्दी उपनिषद्' में डॉ. धींग ने 'दक्षिण भारत में हिन्दी' विषय पर व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने प्राकृत, हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के सम्बन्धों को रेखांकित किया। *-डॉ. एस. कृष्णचंद चोरडिया, महासचिव*

पीपाड़ शहर- श्री सौरभ भण्डारी सुपुत्र श्रीमती उषा दिलखुशराजजी भण्डारी सुपौत्र स्व. श्रीमती मोहनकंवर

उगमराजजी भण्डारी का Oriental Bank of Commerce (सरकारी सेवा) में प्रथम प्रयास में 24 वर्ष की आयु में Assistant Manager (Financial Analyst) पद पर चयन हुआ है। सौरभ ने पूर्व में सी.ए. की परीक्षा 19 वर्ष एवं सी.एस. की परीक्षा 22 वर्ष की उम्र में प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की। जैन आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की 8 वीं तक परीक्षा भी आपने उत्तीर्ण की है।

चेन्नई- श्री प्रणत धींग ने 3 सितम्बर 2017 को ए.एम. जैन कॉलेज में हुई तमिलनाडु स्तरीय अंतरविद्यालयी

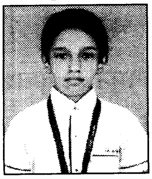

भक्तामर स्तोत्र स्पर्धा में प्रथम स्थान पाया। प्रणत लगातार चौथे वर्ष विजेता बने। इस बार वे नौवीं-दसवीं कक्षा वर्ग में अव्वल रहे। उन्हें पुरस्कार और प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि प्रणत 2013 से विद्यालय की दैनिक प्रार्थना में भक्तामर के एक-एक श्लोक का पाठ करके हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत करते हैं। *-डॉ. दिलीप धींग, शोध निदेशक*

न्यू जर्सी (अमेरिका)- श्री आगम कोठारी सुपुत्र श्रीमती श्वेताजी-अतुलजी एवं सुपौत्र श्रीमती विमलाजी एवं

कैलाशजी कोठारी (जयपुर) ने बारह वर्ष की उम्र में अठाई तप सम्पूर्ण किया। विदेश में रहते हुए भी माता-पिता से प्राप्त संस्कारों की दृढ़ता के कारण तथा गुरुभगवन्तों की कृपा से उन्होंने बिना किसी दिक्कत के सुखसातापूर्वक तप पूर्ण किया। इस तप को करने में उनकी दादी ने भी सहयोग करते हुए अठाई तप किया।

जोधपुर- सुश्री नेहा जैन सुपुत्री श्रीमती अनीताजी-श्री गजराजजी जैन एवं सुपौत्री श्रीमती रमकुदेवीजी-

जवरीमलजी छाजेड़ की Assistant Director (Group A Service) in Ministry of Finance के पद पर नियुक्ति हुई है। आप सामाजिक क्षेत्र के साथ धार्मिक क्षेत्र में भी होनहार छात्रा हैं। युवक परिषद् जोधपुर द्वारा आयोजित शिविरों में भी आप हमेशा वरीयता सूची में रहीं। जोधपुर में रहते हुए आप हमेशा संत-सतियों के दर्शन-वंदन का लाभ लेती हैं।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- संघ-समर्पित सुश्राविका श्रीमती जवरीदेवीजी बोहरा का 18 सितम्बर 2017 को देहावसान हो गया। उनका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी सदैव तत्पर रहती थीं। आचार्यप्रवर, उपाध्याप्रवर आदि संत-सतीमण्डल के रतकुड़िया पधारने पर आप सहित बोहरा परिवार ने अपूर्व धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। बोहरा परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी बोहरा परिवार सदैव समर्पित रहा है।

-पूरणराज अबानी, महामंत्री

कोयम्बतूर- सुश्राविका श्रीमती सुखीदेवीजी श्रीश्रीमाल (कानाना वालों) का 09 सितम्बर 2017 को 79 वर्ष की वय में स्वर्गारोहण हो गया। आप नित्य सामायिक करती थीं। आप व्यवहार से सरल, सहज और विनम्र थीं। आपके पति श्री पुखराजजी श्रीश्रीमाल कानाना ओसवाल समाज के अध्यक्ष एवं नाकोड़ा तीर्थ के ट्रस्टी रह चुके हैं।

पाली- सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती कमलाजी धर्मपत्नी श्री घिसुलालजी तलेसरा का 80 वर्ष की उम्र में 14 सितम्बर, 2017 को देहावसान हो गया। मेड़ता चातुर्मास में महासती श्री चन्द्रकलाजी पर छत गिरने से उनकी हड्डी क्रेक हो गई, तब आपने जोधपुर-जयपुर में साथ रहकर सेवाकार्य में सहयोग दिया। टायफाइड जैसे बड़े और छोटे रोगों के आप घरेलू उपचार जानती थीं। इस जानकारी से आपने कई संत-सतियों की सेवाएँ कीं।

कोटा- धर्मनिष्ठ, सरल स्वभावी सुश्रावक श्री बिहारीलालजी जैन सुपुत्र श्री गोवर्धनलालजी जैन (अरनेठा वाले) का 21 अगस्त 2017 को देवलोकगमन हो गया। नियमित सामायिक व स्वाध्याय आपकी दिनचर्या का अंग था। आप साधु-सन्तों की सेवा में परिवार सहित सदैव तत्पर रहते थे। आपने अपने जीवनकाल में कई बार तेले की तपस्या की। आचार्य भगवन्त के कोटा वर्षावास में आपने उनके मुखारविन्द से सजोड़े आजीवन शीलव्रत के नियम

ग्रहण किये थे। आप श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन संघ-महावीर नगर-कोटा के अध्यक्ष श्री गिर्राजी भाया के अग्रज थे। *-अनिलकुमार जैन, सहमंत्री*

कोटा- दृढ़धर्मी वरिष्ठ सुश्रावक श्री नेमीचन्दजी जैन का 02 जून, 2017 को परलोकगमन हो गया। आप नियमित सामायिक व स्वाध्याय करते थे। आपका पूरा परिवार साधु-सन्तों की सेवा में सदैव तत्पर रहता है। आपने कई वर्षों तक सामूहिक रूप से व कई बार अकेले भी पौषध व्रत की आराधना स्थानक में रहकर पूर्ण की, जो कि आपके जीवन की विशेषता थी। *-अनिलकुमार जैन, सहमंत्री*

जैपुर झाड़ी (उड़ीसा)- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सोहनी बाई राय सोनी धर्मसहायिका श्री पूनमचन्दजी रायसोनी

का 06 जुलाई 2017 को 68 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सरल एवं सात्त्विक था। आप मासक्षपण की तपस्या, नवपद की ओली, अठाई, उपवास, एकासना, बियासना आदि करते रहते थे। गुरु भगवन्तों के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। *-चेतन सांखला-094385-38616*

सोजत- श्रीमती बादलकंवरजी धर्मसहायिका श्री मदनलालजी श्रीश्रीमाल का 23 जुलाई 2017 को संथारा सहित पण्डितमरण हो गया। आपका जीवन धर्म से ओत-प्रोत था, आप बहुत ही सरल स्वभावी, मिलनसार थीं। आपकी दिनचर्या में कई व्रत-प्रत्याख्यान शामिल थे एवं नित्य 5-7 सामायिक करते थे। *-महावीरचन्द श्रीश्रीमाल*

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

स्वाध्यायी भाई/बहनों के लिये अति आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के सभी स्वाध्यायी भाई-बहनों को जिनवाणी पत्रिका के दिसम्बर-2016 के अंक में प्रकाशित विज्ञप्ति के माध्यम से निवेदन किया गया था कि आप अपना परिचय-पत्र भरकर शीघ्र ही स्वाध्याय संघ कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) के पते पर प्रेषित करावें, ताकि सभी स्वाध्यायी भाई-बहनों के परिचय-पत्र प्राप्त हुए हैं। जिन स्वाध्यायी भाई-बहनों ने परिचय-पत्र भरकर स्वाध्याय संघ कार्यालय को भिजवा दिया है, उन्हें यह परिचय-पत्र पुनः भरने की आवश्यकता नहीं है। शेष सभी स्वाध्यायी भाई-बहनों से अन्तिम निवेदन है कि आप अपना परिचय-पत्र भरकर 30 अक्टूबर, 2017 तक अवश्य भिजवा दें, इसके पश्चात् प्राप्त परिचय-पत्रों को निर्देशिका में शामिल किया जाना सम्भव नहीं हो सकेगा। *-जगदीशमल कुम्भट, निदेशक*

कषाय आत्मा के सब गुणों को नष्ट कर देता है

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

कहा गया है कि मुनि, साधक या तपस्वी कड़े कष्ट से, बड़ी तकलीफ सहन करके, गुणों के समूह को, चिरदिनों में इकट्ठा करता है। मगर वह सब का सब कषाय की एक घड़ी में विनष्ट हो जाता है। जैसे जुआरी का लड़का या सटोरिया का लड़का, बाप-दादा की लाखों-करोड़ों की पूँजी को सट्टे के एक दांव पर चढ़ाकर नष्ट कर देता है, ऐसे ममत्व भाव वाला जीव, क्षण भर के कषाय भाव में, चिर संचित तप को नष्ट कर देता है।

समाज में ऐसी कई करोड़पतियों की पेढ़ियाँ मिलेंगी, फर्में देखने को मिलेंगी कि जिनके गाँव, परगाँवों में, कई इमारतें थीं और सात पीढ़ी तक खावे तो भी पूँजी नहीं खुटे, इतनी बड़ी सम्पत्ति थी। किन्तु उनके लड़के जुए-सट्टे में ऐसे लगे कि सारी सम्पत्ति एवं कोठी-बंगले सब नष्ट कर दिए। जैसे जुए-सट्टे वाले, क्षण भर में सब नष्ट कर देते हैं- ऐसे ही प्रमाद और कषाय भी गुणों के समूह को नष्ट कर देते हैं। *-जिनवाणी, फरवरी 1985 से साभार*

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15840 से 15850 तक 11 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

11000/- श्री किस्तूरचन्दजी बाफणा, जलगाँव, सुपौत्र श्री राहुल एवं सुपौत्रवधू सौ.कां. निष्ठाजी एवं सुपुत्र श्री सुशील कुमारजी बाफणा के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

5000/- श्री कनकमल जी एवं श्रीमती शांतिदेवी जी भण्डारी, जोधपुर। सुश्री मिताली भण्डारी के मासखमण के उपलक्ष्य में।

4100/- श्री राजेन्द्र कुमारजी गोखरू, भीलवाडा की ओर से सप्रेम भेंट।

3100/- श्रीमती विमलाजी कैलाशचन्दजी कोठारी, जयपुर, सुपौत्र चि. आगमजी कोठारी सुपुत्र श्रीमती श्वेता-अतुलजी कोठारी के न्यूयार्क में अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

3100/- श्रीमती विमलाजी कैलाशचन्दजी कोठारी, जयपुर, पर्युषण पर्व में श्रीमती विमला के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2500/- श्री हेमन्त कुमारजी, मनोज कुमारजी ओस्तवाल (भोपालगढ़ वाले), बैंगलोर, श्रीमती चंचलबाईजी पारसमलजी ओस्तवाल परिवार की ओर से सप्रेम भेंट।

2500/- श्रीमती रेणु रिखबचंद जी बोहरा, दिल्ली। स्व. श्री बस्तीमल जी बोहरा की पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री शांतिलाल जी बागरेचा, हैदराबाद।

2100/- श्रीमती प्रेमदेवीजी पींचा, नागौर-बड़ौदा, श्री सागरमलजी पींचा का 24 अगस्त 2017 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री अरविन्दजी, श्री अमितजी-स्नेहलताजी जैन, जोधपुर, समकित जैन सुपुत्र श्रीमती स्नेहलता-अमितजी के चतुर्थ वर्षगांठ के उपलक्ष्य में।

2000/- श्री निर्मलचन्दजी डागा, बून्दी, भोपालगढ़ में सपत्नीक सौ. ललितप्रभाजी सजोड़े पर्युषण पर्व भोपालगढ में साधना-आराधना के साथ मनाने एवं सुपुत्री श्रीमती रश्मिजी धर्मसहायिका श्री रितेशजी पुत्रवधू श्री सरदारसिंहजी बोथरा के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

2000/- सुश्राविका मनोहरबाईजी धर्मपत्नी झवरीलालजी जैन (निमाज वाले), चेन्नई, भोपालगढ़ चातुर्मास में पर्युषण पर्व साधना-आराधना के साथ सम्पन्न होने की खुशी में।

2000/- श्री झवरीलालजी, प्रकाशचन्दजी लूणिया (निमाज वाले), पल्लीपेट-चेन्नई, भोपालगढ़ चातुर्मास में पर्युषण पर्व साधना-आराधना के साथ सम्पन्न होने की खुशी में।

2000/- सुश्राविका श्रीमती आयचुकीदेवीजी लोढ़ा (नाड़सर वाले), बैंगलोर, सुपुत्र श्री प्रकाशचन्दजी एवं पुत्रवधू श्रीमती पुष्पाजी के सजोड़े गुरुचरणों में अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2000/- सुश्राविका श्रीमती कमलादेवीजी लोढ़ा (नाड़सर वाले), बैंगलोर, सुपुत्र श्री किशोरचन्दजी लोढ़ा एवं पुत्रवधू श्रीमती शोभाजी के सजोड़े अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में ।

2000/- श्री सागरमलजी, महावीरजी, राजेशजी छाजेड़, चेन्नई, भोपालगढ़ में पर्युषण-पर्व साधना-आराधना के साथ सम्पन्न होने की खुशी में।

2000/- श्रीमती प्रकाशदेवीजी छाजेड़, चेन्नई, भोपालगढ़ चातुर्मास में पर्युषण पर्व साधना-आराधना के साथ सम्पन्न होने की खुशी में।

2000/- श्री सुरेशजी बाफणा सुपुत्र श्री माँगीलालजी बाफणा (भोपालगढ़ वाले), जलगाँव, चि. रितेशजी एवं सौ. निराली(सुपुत्रवधू) द्वारा गुरु आम्नाय लेने पर।

2000/- सुश्राविका सौ. सरोजजी सुरेशजी बाफणा (भोपालगढ़ वाले), जलगाँव, की ओर से।

2000/- श्री ईश्वरलालजी, हर्षल कुमारजी लोढ़ा, जामनेर, सुपुत्रवधू सौ.कां. डिम्पलजी के 15 उपवास की तपस्या एवं सुपुत्र श्री योगेशजी लोढ़ा के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम।

2000/- श्री सोहनलालजी, बुधमलजी, सम्पतराजजी, राजनजी बाघमार, मैसूर, सपरिवार भोपालगढ़ चातुर्मास में साधना-आराधना की खुशी में।

2000/- सुश्राविका श्रीमती मैनाबाईजी धर्मपत्नी श्री सोहनलालजी बाघमार,मैसूर, भोपालगढ़ चातुर्मास में सपरिवार साधना-आराधना की खुशी में।

1500/- श्री शांतिलालजी खाबिया, मैसूर, भोपालगढ़ चातुर्मास में सपरिवार साधना-आराधना होने की खुशी में।

1250/- श्री गणपत जी मंजूश्री जी सुराणा, प्रकाश आशा जी सुराणा, जोधपुर। स्व. श्री उम्मेदमल जी सुराणा की 21 अक्टूबर 2017 को पुण्यतिथि के अवसर पर।

1250/- श्रीमती मंजूश्री गणपतजी सुराणा, आशाजी प्रकाश जी सुराणा, जोधपुर। स्व. श्रीमती लाड़कंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री उम्मेदमलजी सुराणा की 16 अक्टूबर 2017 को पुण्यतिथि के अवसर पर।

1111/- श्री महावीर प्रसाद जी, गौतमचंद जी, संदीप जी, श्रेयांश जी, चित्रांश जी जैन, जवाहर नगर, कोटा। अपने निवास स्थान पर 72 घंटे नवकार मंत्र का जाप सानंद सम्पन्न होने पर।

1101/- श्री आशीषजी, अमितजी, सुमितजी जैन (श्यामपुरा वाले), सवाईमाधोपुर, सुश्रावक श्री धनसुरेशजी जैन के अठाई की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में।

1101/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मण्डावर-दौसा, पर्युषण पर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1101/- श्री धनसुरेशजी, अशीषजी, सुमितजी जैन, सवाईमाधोपुर, सुपौत्री प्रिषाजी जैन सुपुत्री सुमितजी-महिमाजी जैन के प्रथम जन्म दिवस 13 सितम्बर 2017 के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1101/- श्री मनोहरमलजी, महेन्द्रमलजी, नरेन्द्रमलजी, राजेन्द्रमलजी सुराणा (नागौर वाले), चेन्नई, सुश्री दीपिकाजी सुपौत्री श्रीमती सिरदारकँवरजी एवं स्व. श्री मानमलजी सुराणा के 9 की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्रीमती मैनाबाईजी बोहरा, आवड़ी-चेन्नई, भोपालगढ़ चातुर्मास में पर्युषण पर्व साधना-आराधना के साथ सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री मदनलालजी बोहरा, आवड़ी-चेन्नई, भोपालगढ़ चातुर्मास में पर्युषण पर्व साधना-आराधना के साथ सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री धर्मचन्दजी, कमल कुमारजी, संजय कुमारजी, प्रियांशु कुमारजी मेहता, दूदू, भोपालगढ़ चातुर्मास में पर्युषण पर्व साधना- आराधना के साथ सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री ज्ञानचन्दजी, हेमराजजी लूणिया (निमाज वाले), पल्लीपेठ-चेन्नई, भोपालगढ़ चातुर्मास में पर्युषण पर्व साधना- आराधना के साथ सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री महावीरचन्दजी श्रीश्रीमाल, सोजतसिटी, श्रीमती बादलकँवरजी धर्मपत्नी श्री मदनलालजी श्रीश्रीमाल का 23 जुलाई 2017 को संथारा सहित महाप्रयाण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री हरिचन्दजी, सुनीलजी, शुभम्जी हीरावत, जयपुर की ओर से सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती ललिताजी महेन्द्रमलजी गांग (जोधपुर वाले), सूरत, श्रीमती पुष्पकँवरजी धर्मपत्नी श्री मनमोहनमलजी गांग की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती मधु-मोहितजी, मेघना एवं मायाजी सिंघवी, मुम्बई श्री राजेन्द्रचन्दजी सिंघवी सुपुत्र श्रीमती मानकँवरजी-श्री किस्तूरचन्दजी सिंघवी के 10 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री मन्नालालजी, महेन्द्र कुमारजी, राजेशजी लोढ़ा, नाड़सर, सुश्राविका श्रीमती लीलाबाईजी धर्मपत्नी श्री पन्नालालजी की अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- सुश्राविका श्रीमती आचुकीदेवीजी लोढ़ा (नाड़सर वाले), बैंगलोर, सुपुत्र शांतिलालजी लोढ़ा के भोपालगढ़ चातुर्मास में पर्युषण पर्व में दो तेले की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री बंशीलालजी बाघमार (कोसाणा वाले), कानपुर की ओर से सप्रेम भेंट।

1100/- श्री दीपकजी, अक्षयजी छाजेड़, चेन्नई, भोपालगढ़ चातुर्मास में पर्युषण पर्व साधना-आराधना के साथ सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री रितेशजी एवं सौ. निरालीजी, जलगाँव, भोपालगढ़ में धर्मसाधना-आराधना की खुशी में।

1100/- श्री सुभाषचन्दजी, नितिन कुमारजी रांका, पिपलनेर, भोपालगढ़ में ससंघ गुरुचरण-सन्निधि प्राप्ति हेतु।

1100/- श्री नेमीचन्दजी, नीलमचन्दजी चोरड़िया, जलगाँव, भोपालगढ़ में ससंघ गुरुचरण-सन्निधि में साधना-आराधना हेतु।

1100/- श्री रमेशचन्दजी, प्रवीण कुमारजी छाजेड़ (बाकोद), जलगाँव, सुपुत्रवधू सौ.कां. हर्षाजी के 11 की तपस्या के अनुमोदन पर सुपुत्रवधू सौ.कां. अर्पणाजी के 45 एकान्तर तपाराधना की खुशी में।

1100/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संस्थान, बजरिया-सवाईमाधोपुर की ओर से सप्रेम भेंट।

1100/- श्री महावीरचन्दजी, आशीष कुमारजी नाहटा (पीपलिया कला), बंगारपेठ, चि. आशीषजी संग सौ.कां. जयन्तीजी के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री मुकेशजी, प्रदीपजी, मनीषजी जैन, कोटा, पूज्य पिताजी श्री बिहारीलालजी (अरनेठा वाले) का 21 अगस्त को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1100/- सुश्राविका श्रीमती चंचलदेवीजी, आशादेवीजी,

इन्दूजी बाघमार, मैसूर, सपरिवार भोपालगढ़ चातुर्मास में साधना- आराधना होने की खुशी में ।

1100/- श्री मगनचन्दजी जैन (फाजिलाबाद वाले), जयपुर, सुपुत्र श्री मुकेश कुमारजी जैन के अठाई की तपस्या एवं पुत्रवधू श्रीमती शोभाजी जैन के तेले की तपस्या सम्पन्न होने की खुशी में ।

1100/- श्री धर्मचन्दजी, कमल कुमारजी, संजय कुमारजी, प्रियांशजी मेहता, दूदू, सपरिवार भोपालगढ़ में साधना-आराधना की खुशी में।

1100/- श्रीमती अनिता धर्मपत्नी अमित जी भण्डारी, जोधपुर। अपने पुत्र श्री अंचित भण्डारी सुपौत्र श्री विरदराज जी भण्डारी के बी.ए.एल.एल.बी. में स्वर्ण पदक प्राप्त करने पर न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा युवा शिक्षा सम्मान से सम्मानित होने पर।

1100/- श्री धर्मचंद जी जैन, जोधपुर। अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा 17 सितम्बर, 2017 को भोपालगढ़ में आयोजित गुणी अभिनन्दन समारोह में वरिष्ठ स्वाध्यायी सम्मान से सम्मानित होने पर।

1100/- श्री गौतमचंद जी भंवरलाल जी कटारिया।

1100/- श्री रूपकुमारजी, मोहनलालजी, मदनराजजी, धर्मेशजी चौपड़ा कवास वाले, बालोतरा, श्री धर्मेशजी-अनिताजी चौपड़ा के सुपौत्र एवं श्री श्रेणिकजी-सैफालीजी चौपड़ा के पुत्ररत्न के जन्म की खुशी में सप्रेम।

1100/- श्रीमती कमलाजी हणवन्तमलजी सुराणा, नेहरू पार्क, जोधपुर, जिनवाणी सहयोगार्थ।

1100/- श्रीमती कमला नौरतनमलजी लोढ़ा, हैदराबाद-जोधपुर, अपने प्रपौत्र निशित सुपुत्र श्रीमती साक्षी अंकितजी लोढ़ा एवं सुपौत्र श्रीमती लीला-प्रदीपजी लोढ़ा के जन्मोत्सव पर स्वर्ण सीढ़ी चढ़ने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती कमलादेवीजी तलेसरा,पाली की पुण्य स्मृति में उनके परिवार की ओर से।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार प्राप्त

51000/- श्री जैन रत्न हितैषी श्राविका मण्डल, बैंगलोर की ओर से सत्साहित्य प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

30000/- श्री शांतिलालजी, हेमन्तजी, मुकेशजी, रवीन्द्रजी (पींचा) जैन, जोधपुर, 'कुलक कथाएँ' के पुनः मुद्रण हेतु ।

21000/- श्री ज्ञानचन्दजी संतोषदेवीजी बाघमार, श्रीकलाहस्ती की ओर से साहित्य निधि पोषक हेतु।

2500/- श्रीमती चंचलबाईजी ओस्तवाल (भोपालगढ़ वाले), बैंगलोर के अठाई की तपस्या एवं श्री पारसमलजी ओस्तवाल की तृतीय पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

11000/- श्री गौतमचंद जी संकलेचा, कुम्बकोणम्, चेन्नई। श्री प्रवीण कुमार जी पुत्र स्व. श्रीमती सुशीला गौतमचंद जी संकलेचा के 9 उपवास सम्पन्न होने की खुशी में।

5100/- श्री राजेन्द्र जी बोहरा, होसुर। सहयोग हेतु।

5000/- श्री राजेन्द्र जी मकाणा, होसुर। सहयोग हेतु।

3100/- श्री अमृत जी मुथा, अमरावती। पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी सेवा में सिल्लौड़ पधारने हेतु।

3100/- श्री निर्मलचंद जी संजयकुमार जी बाघमार, जबलपुर।श्रीमती इन्द्रा जी बाघमार द्वारा मासखमण की तपस्या सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

2700/- श्री अमृतलालजी, गौतमचन्दजी, संदीपकुमारजी, विक्रमजी सुराणा, हा.मु. खण्डप, हुबली (कर्नाटक), स्वाध्याय शिक्षा सहयोग हेतु।

2100/- श्री स्वरूप जी सुराणा, जोधपुर। अपने सुपुत्र संयम-आकांक्षा के पुत्री जन्म एवं स्व. श्रीमती किरण देवी भंवरलाल जी सुराणा के पड़पौत्री के जन्म के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री शांतिमल जी जौहारमल जी मेहता, जोधपुर। सहयोग हेतु।

2100/- श्री प्रेमबाबू जी जैन, बजरिया, सवाई माधोपुर। अपने पुत्र चि. सौरभ जैन का शुभ विवाह सौ. प्रज्ञा जैन के साथ सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री शांतिलाल जी बागरेचा, हैदराबाद।

2100/- श्री राजरूपमल जी मेहता, शिवकासी।

2100/- श्री राजेन्द्र जी सुरेन्द्र जी जैन, जोधपुर। अपनी माताजी श्रीमती मैनादेवी जी खिंवसरा के 9वें वर्षीतप के उपलक्ष्य में।

2100/- श्रीमती प्रेमदेवीजी पींचा, नागौर-बड़ौदा, श्री सागरमलजी पींचा का 24 अगस्त, 2017 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2000/- श्रीमती उमराव बाई जी भण्डारी, रायचूर।

2000/- वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, धुलिया, महाराष्ट्र। सहयोग हेतु

1100/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हिण्डौन सिटी। सहयोग हेतु।

1100/- श्री धर्मचंद जी जैन, जोधपुर। अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा 17 सितम्बर, 2017 को भोपालगढ़ में आयोजित गुणी अभिनन्दन समारोह में वरिष्ठ स्वाध्यायी सम्मान से सम्मानित होने पर।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को पर्युषण सहयोग प्राप्त

31000/-	एम.एम.डी. कॉलोनी	21000/-	मजल
17000/-	पल्लीपेट	15001/-	कोलकाता
11000/-	पोल्लुर	11000/-	अतुल
10000/-	कानपुर	7100/-	आरकाट
7100/-	वेल्लीचेरी	6100/-	चाकसू
5100/-	डोम्बीवली	5100/-	बिन्नीमिल
5100/-	श्रीकालाहस्ती	5100/-	वलसरवाकम
5000/-	शिवकासी	5000/-	मिसारपेट
4100/-	चेकपेटवनवासी	4100/-	सिलवासा
3200/-	कोलीडम	3100/-	प्रतापनगर, जयपुर
3100/-	सिल्लौड़	3100/-	अन्ना नगर
3100/-	कलाकुची	3100/-	वालाजाबाद
3100/-	निगम्बाकुम	3000/-	गुडवांचरी
2500/-	चिदम्बरम्	2500/-	बैरछा मण्डी
2100/-	सिद्धिकगंज मगरदा	2100/-	नीमच सिटी
2100/-	नंगनल्लुर	2100/-	पाडी
2100/-	विन्द्राचलम्	2100/-	दूदू
2100/-	अलीगढ़, रामपुरा	2100/-	मण्डावर
2000/-	बागली	2000/-	कडलुर
2000/-	गरोठ	1550/-	श्योरपुर कलां
1500/-	नेल्लीकुपम	1100/-	उलन्दुरपेट
1100/-	देवली	1100/-	आकोदिया मण्डी
1100/-	कालूखेड़ा	1100/-	हातोद
1100/-	कडम्बातुर	1100/-	कावेरीपाकम
1100/-	देऊर बुद्रक		

श्री महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ को पर्युषण साभार प्राप्त

9700/-	जयपुर	4500/-	रालेगांव
6813/-	कलवाडी	5100/-	बडनेरा
4100/-	धरणगांव	3100/-	भोकरदन
3000/-	वाकोद	2100/-	दूसरबीड़
2100/-	बाघली	2001/-	भूम
1511/-	वालुज	1501/-	होलनाथा
1501/-	नसीराबाद	1500/-	वरखेडी
1111/-	तोंडापुर	1100/-	इच्छापुर
1100/-	वरणगांव	1100/-	बेटावद
1100/-	उम्बरखेड़	1100/-	विटनेर
1100/-	कासमपुरा		

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

51000/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, महामंदिर, जोधपुर, जीवदया हेतु।

50000/- श्री विपुलजी, विमलाजी, प्रमिलाजी, पायलजी, मानजी, विनयजी एवं समस्त ढाबरिया परिवार, सूरत, जीवदया हेतु।

19000/- श्री गौतमचन्दजी, प्रवीणकुमारजी, मनोजकुमार जी, रक्षिताजी, शैलेषजी, सिद्धार्थजी संकलेचा, कुम्बकोणम् (तमिलनाडु), परिवार की ओर से सुश्राविका श्रीमती सुशीलाजी संकलेचा की पावन स्मृति में संघ सहायतार्थ।

11000/- श्री गोपालराजजी अबानी, जोधपुर, संघ सहयोग।

3100/- श्री पारसमलजी, मगराजजी बोहरा, जीवदया हेतु।

2100/- श्री दिलीपजी, दीपकजी, कमलाजी संकलेचा परिवार, सोपिया-वीरभूम (पश्चिम बंगाल) जीवदया हेतु।

2000/- श्रीमती आशाजी भण्डारी, जोधपुर, जीवदया हेतु।

2000/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, धुलिया (महा.) संघ सहायतार्थ।

22000/- वीरपिता श्री निर्मलकुमारजी जैन, हिण्डौनशहर, जिला-करौली, संघ सहायतार्थ।

2000/- प्रभुतारा परिवार, हिण्डौनशहर, जिला-करौली, संघ सहायतार्थ।

1500/- श्री मदनमोहनजी भण्डारी, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1500/- श्रीमती शैलीजी मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1100/- वीरमाता श्रीमती रेखाजी, निर्मलकुमारजी जैन, हिण्डौनशहर, जिला-करौली, संघ सहायतार्थ।

1100/- जैन श्रीसंघ, आगोलाई, जीवदया हेतु।

1100/- श्रीमती उमादेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री अचलमलजी सिंघवी, जोधपुर, जीवदया हेतु।

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, को प्राप्त साभार।

50640/- श्री सागरमलजी जैन-नीमच (श्री सुभाषजी जैन U.S.A अमेरिका) पुस्तक प्रकाशन में सहयोग।

11111/- श्री संदीपजी लाभचंदजी नाहर, सूरत, सहायतार्थ।

5500/- श्री दिलखुशराजजी मेहता, मुम्बई, सहायतार्थ।

5000/- श्री सुमतिविजयराजजी, श्री अशोकराजजी, श्री पदमराजजी, श्री गौतमराजजी सिंघवी, कडलूर, (तमिलनाडु), सहायतार्थ।

5000/- श्री संजयजी हरकचंदजी बोरा, धुलिया, सहायतार्थ।

3100/- श्री निर्मलचंदजी, श्री संजयकुमारजी बागमार, जबलपुर, श्रीमती इन्द्रा जी बागमार धर्मपत्नी श्री निर्मलजी बागमार के मासखमण तपस्या सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

2000/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ,

धुलिया, सहायतार्थ।

1100/- श्रीमती चन्द्रकलाजी जैन पत्नी श्री इन्दरसिंहजी जैन, सहायतार्थ।

1100/- श्री धर्मचंदजी जैन,रजिस्ट्रार-अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर, अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा भोपालगढ़ में 17 सितम्बर 2017 को वरिष्ठ स्वाध्यायी सम्मान से सम्मानित होने के उपलक्ष्य में।

संस्कार केन्द्र, जोधपुर को साभार प्राप्त

21000/- श्री एस. बुधमलजी, एस. सम्पतजी, एस. राजनजी बागमार, मैसूर-कोसाणा, श्रीमती मैनाकंवरजी धर्मपत्नी श्री सोहनलालजी बागमार, मैसूर के 15 अगस्त 2017 को जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

10000/- श्री रतनलालजी, कस्तूरचन्दजी, सज्जनदास जी बाफना, जलगाँव, सहयोगार्थ।

10000/- श्री भोपालचन्दजी, राजेन्द्रजी, महेन्द्रजी पगारिया, बैंगलोर, सहयोगार्थ।

6000/- श्री नारायणलालजी, मदनलालजी, सुनील कुमारजी श्रीश्रीमाल, चित्तौड़गढ़, सहयोगार्थ।

3100/- श्री निर्मलचन्दजी, संजयकुमारजी बागमार, जबलपुर, श्रीमती इन्द्रा जी बागमार धर्मपत्नी श्री निर्मलचन्दजी बागमार द्वारा मासक्षपण तपस्या सानन्द सम्पन्न करने के उपलक्ष्य में।

2000/- श्री वर्धमान जैन स्थानकवासी श्री संघ, धुलिया (महा.) सहयोगार्थ।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर को साभार प्राप्त

5000/- श्रीमती चन्द्राजी रोशनलालजी हीरावत, जयपुर, अपनी सुपौत्री समीक्षा व मोक्षा के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड
(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)
दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

24000/- श्री दिनेशजी, राजेशजी सुराना, बैंगलोर, अपने माता-पिता श्रीमती सपनाजी सम्पतराजजी सुराणा, जोधपुर के वैवाहिक जीवन की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

12000/- श्री रतनलालजी, कस्तूरचन्दजी बाफना, जलगांव।

12000/- श्री अजीतजी-प्रमीलाजी चोरडिया, अहमदाबाद।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. M. Harish Kawad**, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व तिथि

कार्तिक कृष्णा 8,	गुरुवार	12.10.2017	अष्टमी, आचार्य श्री गुमानचन्द्रजी म.की 216 वीं पुण्यतिथि
कार्तिक कृष्णा 14,	बुधवार	18.10.2017	चतुर्दशी
कार्तिक कृष्णा 30,	गुरुवार	19.10.2017	पक्खी, भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक
कार्तिक शुक्ला 5 ,	बुधवार	25.10.2017	ज्ञान पंचमी
कार्तिक शुक्ला 6,	गुरुवार	26.10.2017	आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 55वां दीक्षा-दिवस
कार्तिक शुक्ला 8 ,	शनिवार	28.10.2017	अष्टमी
कार्तिक शुक्ला 14 ,	शुक्रवार	03.11.2017	चतुर्दशी, पक्खी, चातुर्मास पूर्ण
मार्गशीर्ष कृष्णा 8 ,	शनिवार	11.11.2017	अष्टमी
मार्गशीर्ष कृष्णा 12 ,	बुधवार	15.11.2017	आचार्य श्री विनयचन्द्र जी म.सा. की 102वीं पुण्य-तिथि
मार्गशीर्ष कृष्णा 14 ,	शुक्रवार	17.11.2017	चतुर्दशी
मार्गशीर्ष कृष्णा 30,	रविवार	18.11.2017	पक्खी

बाल-जिनवाणी

गाय का पश्चात्ताप

डॉ. दिलीप धींग

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 29 जून 2017 को अहमदाबाद (गुजरात) में आयोजित एक समारोह में अपने भाषण में एक सच्ची घटना सुनाई। घटना इस प्रकार है- "मेरे जीवन की एक सत्य घटना है। हमारे घर के सामने एक परिवार रहता था। शादी के कई साल बाद उनके यहाँ सन्तान हुई। घर के सामने संकरी गली थी। यहाँ सुबह-सुबह एक गाय गुजरती और लोग उसे रोटी देते। एक दिन बच्चों ने पटाखे फोड़ दिये और गाय हड़बड़ाकर भागने लगी। हालात ऐसे बने कि बड़ी उम्र के दम्पती का जो बच्चा मुश्किल से तीन-चार साल का था, वह गाय के पैरों तले कुचल गया और उसकी मृत्यु हो गई।

परिवार में दुःख का माहौल था। दूसरे दिन सुबह ही गाय उनके घर के सामने आकर खड़ी हो गई थी। उसने किसी भी घर के सामने जाकर रोटी नहीं खाई। उसके आँसू कभी नहीं रुके। एक दिन, दो दिन, पाँच दिन; गाय न खाना खा रही, न पानी पी रही थी। कई दिनों तक उसने कुछ नहीं खाया, कुछ नहीं पिया।

पीड़ित परिवार के लोग भी उसे खिलाने की कोशिश करते, लेकिन गाय ने संकल्प नहीं छोड़ा। उस बालक की मृत्यु के पश्चात्ताप में आखिरकार गाय ने शरीर छोड़ दिया।"

इस मार्मिक घटना को सुनाते हुए प्रधानमंत्री भावुक भी हो गये थे। इस घटना में अनेक तथ्य समाविष्ट हैं -

1. पटाखे फोड़ने की अप्रत्याशित धमाकेदार तेज आवाज़ पशु-पक्षियों को अत्यन्त भयभीत कर देती है।
2. मूक प्राणी भी शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक सुख, दुःख, प्रेम और पीड़ा का अनुभव करते हैं।
3. परिस्थितिवश अनजाने में हुई गलती का भी गाय को भारी पश्चात्ताप हुआ। गाय ने खाना-पीना छोड़ दिया, लेकिन अपना संकल्प नहीं छोड़ा, 'अनशन' नहीं तोड़ा।
4. अथाह दुःख में डूबे परिवार ने भी गाय को खिलाने-पिलाने का प्रयास किया। गाय से नफरत नहीं की।
5. गाय रोज की तरह गली में तो आई, लेकिन किसी से कुछ भी नहीं खाया-पिया। मानो वह रोटी खिलाने वालों के प्रति आभार जताने और सबके समक्ष अपने भूलवश हुए पाप का पश्चात्ताप करने ही वहाँ आई।
6. कर्मों की विडम्बना कैसी कि लम्बी प्रतीक्षा के बाद हुआ बेटा भी चल बसा।

ये प्रेरणा के बिन्दु इंसान को काफी शिक्षाएँ देते हैं।

-अध्यक्ष, अहिंसा विचार मंच, उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

पशु-पक्षी हैं मित्र हमारे!

डॉ. नरेन्द्र भानावत

ये हैं सुख-दुःख के चिर साथी,
चाहे कीड़ी चाहे हाथी,
सबको प्यारी आतम-थाती,
निर्दय वह, जो इनको मारे।
पशु-पक्षी हैं मित्र हमारे।।

स्वामी-भक्त निराले सेवक,
हर आफत में सदा सहायक,
गुरु, प्रेमी, सन्देश वाहक,

भाँति-भाँति के रिश्ते न्यारे।
पशु-पक्षी हैं मित्र हमारे।।

ये चुपचाप व्यथा सह लेते,
अपनी पीड़ा कभी न कहते,
श्रम निष्ठायुत जीवन जीते,
सेवारत, संस्कृति रखवारे।
पशु-पक्षी हैं मित्र हमारे।।

इनकी रक्षा अपनी रक्षा,
इनकी सेवा आत्म-समीक्षा,
इनकी सन्निधि, धैर्य तितिक्षा,
निखिल सृष्टि सौन्दर्य सितारे।
पशु-पक्षी हैं मित्र हमारे।।

जो इनकी सेवा करता है,
मूक व्यथा उर में धरता है,
जग में परमातम बनता है,
ईसा, कृष्ण, मोहम्मद प्यारे!
पशु-पक्षी हैं मित्र हमारे!!

(जिनवाणी, जून 1984 से गृहीत)

-सी-235 ए, तिलकनगर, जयपुर-302004 (राज.)

Without Love & Spirituality-Nothing

Compiled by : Mrs. Sashi Suresh Rathi

God asked- What do you want in this modern society?

I said- "I need lot of money. I want to buy good food, clothing, house, car and all the material comforts".

God gave me lot of it. I was comfortable.

God again asked-"Do you need something more?".

I said-"I want more education, intelligence and a better personality."

God gave me all.

After some days he again asked me- "Are you completely happy?. Do you need anything more?".

I said-"I want a beautiful wife, good children, relatives and friends."

He gave me those.

After sometime, God again asked- "Do you need something else?". I asked for recognition & fame.

Anything else!.....He asked me....

Now I had almost all things, I said, I'll get back...."

After few months, I went back to him and requested for power, influence, connections with politicians and bureaucracy.

He gave me all those.

So, I had everything to be happy. I lived on. He asked me after sometime, "Are you completely happy now?" I said, "No".

What do you want now?....

I said-"I need your closeness (Spirituality) and I need love from my family and friends".

This time he kept a condition, "Can you give something in exchange?".

After some bargaining. I aggreed to give 50% of my wealth, influence, power, recognition. He asked for more....

Ultimately, I agreed to give everything I had because without love & Spirituality, I found nothing was comforting me.

(from book of "Anmol Ratan")

छठा बोल- प्राण दस

छठा बोल प्राण दसः- 1. श्रोत्रेन्द्रिय-बलप्राण, 2. चक्षुरिन्द्रिय बलप्राण, 3. घ्राणेन्द्रिय बलप्राण, 4. रसनेन्द्रिय बलप्राण, 5. स्पर्शनेन्द्रिय बलप्राण, 6. मनोबलप्राण, 7. वचन बलप्राण, 8. काय बलप्राण, 9.

श्वासोच्छ्वास बलप्राण, 10. आयुष्य बलप्राण।

प्राण:– सामान्यतः पर्याप्ति वाले को ही प्राणों की आवश्यकता होती है, अतः पर्याप्ति के बाद प्राणों का कथन किया गया है। जिसके द्वारा शरीरधारी जीवन धारण करे अथवा जिनके सहारे जीव जीवित रहे उसे 'प्राण' कहते हैं अथवा जीवन जीने की शक्ति विशेष को 'प्राण' कहते हैं। ये प्राण दस प्रकार के हैं–

1. **श्रोत्रेन्द्रिय बलप्राण:–** कानों के द्वारा शब्दों को ग्रहण करने की अथवा सुनने की शक्ति विशेष को 'श्रोत्रेन्द्रिय बलप्राण' कहते हैं।
2. **चक्षुरिन्द्रिय बलप्राण:–** आँखों के द्वारा देखने की शक्ति विशेष को 'चक्षुरिन्द्रिय बलप्राण' कहते हैं।
3. **घ्राणेन्द्रिय बलप्राण:–** नासिका के द्वारा गंध ग्रहण करने की शक्ति विशेष को 'घ्राणेन्द्रिय बलप्राण' कहते हैं।
4. **रसनेन्द्रिय बलप्राण:–** रसना के द्वारा खट्टा, मीठा आदि स्वाद को ग्रहण करने की शक्ति विशेष को 'रसनेन्द्रिय बलप्राण' कहते हैं।
5. **स्पर्शनेन्द्रिय बलप्राण:–** पदार्थ में रहे हुए ठण्डे, गर्म आदि आठ प्रकार के स्पर्शों को ग्रहण करने की शक्ति विशेष को 'स्पर्शनेन्द्रिय बलप्राण' कहते हैं।
6. **मनोबलप्राण:–** द्रव्य मन की सहायता से किसी भी प्रकार का चिन्तन-मनन करने की शक्ति विशेष को 'मनोबलप्राण' कहते हैं।
7. **वचन बलप्राण:–** भाषा वर्गणा के पुद्गलों की सहायता से वचन बोलने की शक्ति विशेष को 'वचन बलप्राण' कहते हैं।
8. **काय बलप्राण:–** औदारिक, वैक्रिय आदि शरीर के माध्यम से चलने-फिरने, उठने-बैठने की शक्ति विशेष को 'काय बलप्राण' कहते हैं।
9. **श्वासोच्छ्वास बलप्राण:–** श्वासोच्छ्वास वर्गणा के पुद्गलों की सहायता से श्वास लेने और श्वास छोड़ने की शक्ति विशेष को 'श्वासोच्छ्वास बलप्राण' कहते हैं।
10. **आयुष्य बलप्राण:–** एक निश्चित समय तक निश्चित भव में जीवित रहने की शक्ति को 'आयुष्य बलप्राण' कहते हैं।

Good Thoughts

1. The quality of our thought determines our own personal degree of happiness.
2. Facts are facts and will not disappear on account of your liking or disliking.
3. The integrity of men is measured by their conduct, not by their professions.
4. Two persons look out through the same door, one sees mud and the other stars.

स्थिरता व गति

श्रीमती मीनाक्षी दिनेश जैन

चक्की के दो पाटों में से एक स्थिर और दूसरा गतिमान हो, तभी अनाज पिसता है।

ठीक उसी प्रकार मनुष्य में भी दो पाट होते हैं, एक मन और दूसरा तन। यदि मन स्थिर और तन गतिमान रहे तभी इस जीवन की सफलता है।

-17/729, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-342008 (राज.)

प्रकृति का नियम

श्रीमती कंचन जैन

आपको जीवन से जो कुछ भी मिले उसे पचाना जरूरी है, क्योंकि- भोजन न पचने पर रोग बढ़ते हैं। पैसा न पचने पर दिखावा बढ़ता है। बात न पचने पर चुगली बढ़ती है। प्रशंसा न पचने पर अहंकार बढ़ता है। निंदा न पचने पर दुश्मनी बढ़ती है। राज न पचने पर खतरा बढ़ता है। दुःख न पचने पर निराशा बढ़ती है और सुख न पचने पर पाप बढ़ता है। *-सुराणा की बड़ी पोल, नागौर (राज.)*

तीर्थंकर वर्ग पहेली

प	जै	ल	शा	का	म	अ	दा	वा	न्त	न	अ
ज	म	ऋ	आ	न्ति	र	मु	प्र	स	थां	श्रे	क
वि	अ	र्म	ष	कु	स	था	त	र्श्व	ज	प	थ
प	ध	चं	प्र	भ	न्थु	जि	पा	व	व	ना	अ
ज	द	स	द्र	भु	अ	सु	ति	भ	र	म	नि
अ	चं	म	प	प्र	भु	म	सं	अ	भ	मु	ल
सु	वि	धि	प्र	न	भु	पा	श्‍	र्व	नि	प्र	न
शी	सु	म	ति	भु	पा	न	मि	सु	न	मि	र
व्रा	त	ऋ	हा	श्‍	सू	त	व्र	शी	प्र	रि	वी
सु	म	ल	पा	वी	पू	त	अ	भु	अ	पा	हा
ल्लि	अ	भि	न	न्द	न	अ	रि	ष्ट	ने	मि	म
न	म	ज	म	ज	प	भु	सु	वी	कि	श्रे	पा

नोटः– 24 तीर्थंकरों के नाम ढूँढ कर उस पर सीधे–तिरछे आयताकार चिह्न बनाने हैं।

बाल-स्तम्भ

सहेली की सीख

श्रीमती विमला भण्डारी

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 नवम्बर, 2017 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

शैलजा और प्रज्ञा की कुछ दिन पहले ही मित्रता हुई थी। एक दिन स्कूल से घर लौटते समय प्रज्ञा ने शैलजा को अपने घर चलने के लिए कहा।

शैलजा अपनी असमर्थता जताते हुए बोली- ''नहीं, आज नहीं। मैं फिर किसी दिन आऊँगी।''

''आज क्यों नहीं? तुम्हें आज ही चलना होगा।'' प्रज्ञा ने जिद करते हुए कहा। उसने आगे बताया- ''हमारे गैराज में आज सुबह ही 'क्रोकोडायल' ने तीन बच्चे दिए हैं।''

क्रोकोडायल प्रज्ञा की पालतू पामेरियन कुतिया का नाम था।

''दो सुन्दर-सुन्दर सफेद और एक काला चितकबरा।'' प्रज्ञा हाथों को नचाते हुए पिल्लों की सुन्दरता का वर्णन करने लगी।

''अच्छा, तब तो मैं उन्हें देखने कल जरूर आऊँगी।''

''जरूर आओगी न।''

''वादा रहा'', कहती हुई शैलजा अपने घर की ओर जाने वाली गली में मुड गई।

दूसरे दिन शाम को शैलजा प्रज्ञा के घर पहुँची। शैलजा का हाथ पकड़कर लगभग खींचते हुए प्रज्ञा उसे अपने गेराज की ओर ले गई, ''देख, है न सुन्दर-सुन्दर पिल्ले? बता इनका क्या नाम रखें?'' अपनी सहेली की ओर देखती हुई प्रज्ञा ने अपनी गोल-मोल आँखें मटकाते हुए पूछा।

''आहा, कितने सुन्दर पिल्ले? नाम भी इनके इतने ही सुन्दर होने चाहिए,'' कुछ सोचती हुई शैलजा काले चितकबरे की ओर इशारा करते हुए बोली- ''इसका नाम 'ब्राऊनी' ठीक रहेगा।''

''हाँ, बिल्कुल ठीक। इन दोनों का नाम 'व्हाइटी' और 'क्रीमी' रख लेते हैं।''

दोनों सहेलियाँ पिल्लों को प्यार करने में मग्न थीं। शैलजा सफेद पिल्ले 'व्हाइटी' को गोद में उठाकर पुचकार रही थी कि 'व्हाइटी' झट से अपनी माँ की ओर कूद गया और चपर-चपर अपनी माँ का दूध पीने लगा। यह देख प्रज्ञा पिल्ले की पीठ सहलाती हुई कहने लगी- ''भूख लगी है तुझे व्हाइटी? ठीक है, जा दूध पी ले अपनी माँ का।''

इतने में प्रज्ञा को माँ ने आवाज दी पर प्रज्ञा ने सुनकर अनसुना कर दिया। यह देख शैलजा बोली- ''प्रज्ञा, तुम्हें माताजी पुकार रही हैं।''

''पुकारने दो, माँ की आदत है।'' लापरवाही से कंधे उचकाती हुई प्रज्ञा बोली और फिर से पिल्लों से

खेलने लगी।

फिर माँ की आवाज सुनाई दी तो शैलजा बोली-"प्रज्ञा, तुम्हारी माताजी नाराज हो जायेगी।"

"होने दो, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। माँ तो हर बात पर नाराज होती है।"

प्रज्ञा की यह हरकत शैलजा को बिलकुल अच्छी नहीं लगी।

"अच्छा, अब मैं चलती हूँ।" कहती हुई शैलजा उठ खड़ी हुई।

"रुको न, हम थोड़ी देर और पिल्लों से खेलेंगे।"

"नहीं नहीं, मेरी माँ इंतजार कर रही होगी।" कहती हुई शैलजा फाटक खोलकर बाहर निकल गई।

दूसरे दिन स्कूल में प्रज्ञा की कलम शैलजा के पास रह गई थी। घर आकर प्रज्ञा जब स्कूल का काम करने लगी तो उसे कलम की याद आई। वह तुरन्त शैलजा के घर पहुँची। उस समय शैलजा पलंग पर बैठी धुले हुए सूखे कपड़ों की तह बनाकर समेट रही थी।

"आओ प्रज्ञा।" प्रज्ञा को देख शैलजा ने कहा और प्रज्ञा का परिचय अपनी माँ से कराया। शैलजा की माँ खुश होती बोली-"बैठो बेटी, मैं अभी तुम्हारे लिए आइसक्रीम लेकर आती हूँ।"

प्रज्ञा को आइसक्रीम बहुत पंसद थी। मन ही मन वह खुश होती हुई सोच रही थी कि शैलजा की माँ कितनी अच्छी है। वह शैलजा की माँ और अपनी माँ की तुलना करने लगी, 'उंह, कभी कोई सहेली आ जाती है, तब भी मेरी माँ खयाल नहीं करतीं और ऊपर से किसी न किसी काम के लिए पुकारती रहती है।'

प्रज्ञा को शैलजा के यहाँ बहुत अच्छा लगा। उसके बाद वह अक्सर शैलजा के यहाँ आने लगी। वह देखती शैलजा कभी रसोई में रखे गीले बरतनों को पोंछ कर रख रही है तो कभी फर्श पर पोंछा लगा रही है। उसके आते ही वह झट से उसके साथ खेलने लग जाती पर शैलजा की माँ कभी शैलजा को बीच में नहीं पुकारती और ऊपर से वह हमेशा कुछ-न-कुछ खाने को भी देती।

एक दिन तो उसके आश्चर्य की हद हो गई। उस दिन टीवी पर एक बढ़ियाँ फिल्म आ रही थी और शैलजा माँ के साथ आलू के चिप्स सुखाने में मग्न थी।

"उफ, कितना ऊबाऊ काम करती हो तुम?" प्रज्ञा शैलजा के कानों के पास मुँह ले जाकर फुसफुसाते हुए बोली, "चल, टीवी देखते हैं।"

"नहीं, अभी बहुत चिप्स बाकी हैं, जाओ तुम देखो।"

"चल न छोड़। यह काम तो माँ कर लेंगी।"

"माँ अकेली क्या-क्या करें? थक जाती हैं। फिर वह यह सब बनाती भी तो हमारे लिए ही हैं।" शैलजा चिप्स सुखाते हुए बोली।

विवश होकर प्रज्ञा भी शैलजा के साथ चिप्स सुखाने लगी। दोनों के इकट्ठे काम करने से काम जल्दी खत्म हो गया। शैलजा की माँ दोनों को अन्दर बैठक में बैठाती हुए बोली- "क्या खाओगी बेटी?"

"माँ, बड़ी जोर से भूख लगी है।" शैलजा ने कहा तो उसकी माँ उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरते व पुचकारते हुए बोली- "मैं अभी तुम्हारे लिए बिस्कुट व नमकीन लाती हूँ।"

प्रज्ञा को उदास देख शैलजा ने पूछा- "बुरा मान गई?"

"ना", गर्दन हिलाते हुए प्रज्ञा बोली- "तुम्हारी माँ बहुत अच्छी हैं।"

"माँ तो सबकी अच्छी ही होती हैं।"

प्रज्ञा कुछ नहीं बोली। वह उदास सी चुपचाप बैठी रही। बिस्कुट खाते समय भी वह बहुत गम्भीर रही। अपने घर लौटते समय वह मन ही मन सोच रही थी कि मेरी माँ तो बहुत चिड़चिड़ी हैं। जरा-जरा सी बात पर डाँटने लगती हैं और शैलजा की माँ उसका कितना

खयाल करती हैं। यह सोच कर प्रज्ञा बहुत दुःखी हो गई। ऐसा लग रहा था जैसे अभी उसकी रुलाई फूट पड़ेगी।

घर पहुँचते ही प्रज्ञा से उसकी माँ ने कहा- ''देखो प्रज्ञा, कल स्कूल से आकर तुमने अपनी स्कूल की पोशाक भी धोने के लिए नहीं रखी। यहाँ तक कि तुम्हारा बस्ता भी अभी तक भोजन वाली मेज की कुर्सी पर पड़ा है।''

प्रज्ञा की माँ प्रज्ञा से और भी बहुत कुछ कह रही थीं किन्तु उसको कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा था। वह चुपचाप बुझे-बुझे कदमों से अपना बस्ता उठाकर अपने कमरे में चली गई। ''क्या खाओगी बेटी?'' शैलजा की माँ की आवाज उसके कानों में बराबर गूंज रही थी। वह दुःखी मन से वहीं पलंग पर भूखी ही लेट गई। शाम को जब शैलजा पिल्लों के साथ खेलने के लिए प्रज्ञा के घर पहुँची तो प्रज्ञा को उदास पाया।

''क्या बात है प्रज्ञा? आज तुम सुबह से ही उदास हो।''

प्रज्ञा कुछ नहीं बोली।

''बता भी, क्या बात हुई? क्या मुझसे नाराज हो?''

''नहीं।''

''तो फिर क्या हुआ? चल व्हाइटी, क्रीमी और ब्राऊनी के साथ खेलते हैं।'' कहते हुए प्रज्ञा शैलजा को साथ लेकर पिल्लों के पास पहुँची। देखा, क्रोकोडायल अपने बच्चों को चाट रही है।

''सबकी माँएँ अपने बच्चों को प्यार करती हैं। एक मेरी माँ हैं जो बस हर समय डांटती ही रहती हैं।''

प्रज्ञा के मुँह से यह बात सुनकर आश्चर्य-चकित शैलजा बोली- ''कैसी बातें करती हो प्रज्ञा? तुम्हारी माँ तो इतनी बड़ी लेखिका हैं। तुम्हें तो अपनी माँ पर गर्व होना चाहिए।''

''होंगी बड़ी लेखिका।'' मुँह बिचकाती हुई प्रज्ञा बोली- ''बात-बात पर डांटना। ऐसा क्यों कर दिया? वहाँ क्यों रख दिया? ये नहीं किया? वह नहीं किया- ''कहते-कहते प्रज्ञा की गोलगोल आँखों से आँसू छलछला आए।

अपने नन्हें-नन्हें हाथों से प्रज्ञा के आँसू पोंछती हुई शैलजा बोली- ''एक बात कहूँ प्रज्ञा, बुरा तो नहीं मानोगी?''

'ना' में गर्दन हिलाती प्रज्ञा आँखें पोंछ रही थी- ''कहो, क्या कहना है तुम्हें?''

शैलजा बोली- ''एक बात बताओ प्रज्ञा, तुम अपनी माँ का कितना ध्यान रखती हो?''

''माँ कोई छोटी बच्ची हैं जो उनका ध्यान रखूँ?'' खीजती हुई प्रज्ञा बोली।

''मेरे कहने का मतलब है कि माँ जब तुम्हें कुछ कहती हैं तो तुम सुना का अनसुना कर देती हो। माँ के काम बताते ही तुम मना कर देती हो। यदि तुम छोटे-मोटे कामों में माँ का सहयोग कर सको तो उनका काम काफी हलका हो जाएगा। मुझे देखो, मैं माँ के बिना बताए ही काम कर देती हूँ। मेरे छोटे-मोटे काम कर देने से माँ को बहुत राहत मिलती है। जब माँ अकेली घर का काम देखेंगी व अस्त-व्यस्त बिखरा सामान देखेंगी तो उन्हें समेटते-समेटते स्वाभाविक रूप से उन्हें गुस्सा आ ही जाता होगा।''

प्रज्ञा को मन ही मन अपनी गलती का एहसास हो रहा था। शैलजा के जाने के बाद प्रज्ञा ने मन ही मन कुछ निश्चय किया।

सुबह प्रज्ञा माँ के बिना उठाए ही उठ गई। यहाँ तक कि उसने चादर भी समेट कर अलमारी में रख दी। प्रज्ञा को उठा देख माँ ने दूध का गिलास मेज पर रख दिया था। हमेशा दूध के लिए नानुकूर करने वाली प्रज्ञा ने चुपचाप दुध पी लिया। खाली गिलास उठाकर रसोई में चली गई व सिंक में रखे सभी प्यालों व गिलासों को धो-पोंछ कर ठीक से यथावत् रख दिया।

"क्या खाओगी बेटी, आज क्या बनाऊँ?" प्रज्ञा की माँ प्रज्ञा से पूछ रही थी। प्रज्ञा ने कनखियों से माँ का मुस्कुराता चेहरा देख लिया था। यह देख उसे बड़ी खुशी हुई।

हमेशा शाम को स्कूल से लौटकर प्रज्ञा बस्ता पटककर कर मौजे इधर-उधर फेंक, बिना स्कूल की पोशाक बदले ही बाहर खेलने के लिए भाग जाती थी। माँ आवाज देती रह जातीं किन्तु वह सुनती कहाँ थी?

उस दिन प्रज्ञा ने स्कूल से आकर अपना सामान यथावत् रखा। स्कूल की पोशाक बदली और हाथ-मुँह धो लिए। कमरे में झांक कर देखा तो पता चला कि माँ कुछ लिखने में तल्लीन थीं। लिखते समय माँ को तंग करने वाली प्रज्ञा उस दिन चुपचाप दबे पांव, बिना आहट किए रसोई की ओर मुड़ गई। देखा सारी रसोई बिखरी पड़ी थी। दिन में शायद माँ से मिलने कुछ मेहमान आए होंगे, यह सोच कर प्रज्ञा ने सारा सामान समेट कर सफाई की व पूरी रसोई सुव्यवस्थित कर दी। यह सब करने के बाद वह खुद अपने हाथों से डब्बों में से केक, बिस्कुट निकाल कर प्लेट में रख कर चुपचाप खाने लगी।

वहीं से वह माँ को लिखते हुए देख रही थी। आज उसे पहली बार माँ बहुत सुन्दर लग रही थी। पहली बार प्रज्ञा को यह सोच कर गर्व हो रहा था कि उसकी माँ बड़ी लेखिका हैं।

जब माँ का लेखन कार्य पूरा हुआ तो कमरे से बाहर निकलीं। जब उनकी नजरें पूरे घर में घूमीं तो उन्होंने खुशी के मारे प्रज्ञा को अपने सीने से लगा लिया- "ओह, मेरी बेटी अब समझदार हो गई है।"

दूर बैठी क्रोकोडायल अपने बच्चों को दूध पिला रही थी और बच्चे उसके ऊपर उछल-कूद कर रहे थे। क्रोकोडायल पिल्लों को चाट रही थी। यह देख प्रज्ञा भी माँ की बांहों में झूम उठी

-'बगिया के फूल' पुस्तक से साभार

प्रश्नः-

1. प्रज्ञा को अपनी माँ बुरी क्यों लगती थी?
2. शैलजा की माँ प्रज्ञा को अच्छी क्यों लगती थी?
3. शैलजा ने प्रज्ञा को कैसे समझाया?
4. क्या आपने कभी अपनी माँ के कार्य में हाथ बंटाया?
5. माँ तो अच्छी ही होती है। इसकी पुष्टि में पाँच पंक्तियाँ लिखिए।
6. प्रज्ञा में क्या कमी थी? क्या आप भी अपनी कमी को दूर करना चाहेंगे? यदि हाँ तो कौनसी कमी को?
7. ऐसी कोई घटना लिखिए, जिससे आपके जीवन में परिवर्तन आया हो।

बाल-स्तम्भ [अगस्त-2017] का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-2017 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'पिंजरे का बन्धन' के प्रश्नों के उत्तर 24 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	अनिकेत जैन-जयपुर (राज.)	28.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	आशा मिन्नी-भीनासर, बीकानेर (राज.)	26.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	अरिष्ट कोठारी-अजमेर (राज.)	25.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	भावेश जैन-भैसोदामण्डी (म.प्र.)	25
	गुंजन प्रशान्तजी कोठारी-धुलिया (महा.)	25
	ऋषभ चौपड़ा-जोधपुर (राज.)	25
	कशिश जैन-कोटा (राज.)	25
	अमिषा कोठारी-अजमेर(राज.)	24.5

जय गुरु हस्ती ||GURUDEV|| जय गुरु हीरा–मान

गुरु हस्ती के दो फरमान
सामायिक स्वाध्याय महान

गुरु हीरा का यह सन्देश
व्यसन मुक्त हो देश विदेश

UDAY GROUP

UDAY INDUSTRIES CHENNAI PVT. LTD.
IMPORT & EXPORT AND DEALERS OF IRON & STEEL
LONG & FLAT PRODUCTS

UDAY CONSULTS LLP
OVERSEAS AND DOMESTIC MANPOWER RECRUITMENT
AND
FACILITY MANAGEMENT

CONNECTING BRIGHT TALENT WITH THE RIGHT COMPANY

STEEL | LOGISTICS | MANPOWER

WITH BEST COMPLIMENTS from:
G R SURANA & RAJESH SURANA
No.10&11, Jawaharlal Nehru Road,
Koyambedu, Chennai - 600 107.
Mobile No: 9940566666, Contact No: 044-24797675
Website: www.udaygroup.net
Mail Id: industries@udaygroup.net

भण्डारी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

Since 1986

(आपके स्वास्थ्य के साथ हमेशा)

Certificate No. H-2012-0136

राजस्थान व पड़ौसी राज्यों में लेजर, लैप्रोस्कोपी एवं लिथोट्रिप्सी का सर्वश्रेष्ठ एवं विश्वसनीय सेन्टर

~ अस्पताल की विशेषताएं ~

दूरबीन पद्धति से पेट, अपेन्डिक्स, हर्निया, प्रोस्टेट, पाइल्स आदि की शल्य चिकित्सा की सुविधा।

शरीर में किसी भी स्थान पर होने वाली पथरी के ईलाज का सर्वश्रेष्ठ संस्थान।

स्त्री रोग, नॉर्मल, सिजेरियन व हाई रिस्क डिलेवरी का अग्रणीय संस्थान।

विशेषज्ञों की सेवायें

- मूत्र व पथरी रोग
- पेट, लीवर व आंत रोग
- जनरल व मोटापा निवारण सर्जरी
- स्त्री रोग
- जनरल फिजिशियन
- प्लास्टिक व कॉस्मेटिक सर्जरी
- बाल रोग एवं बाल शल्य चिकित्सा
- न्यूरो सर्जरी
- दन्त रोग
- नाक, कान व गला रोग
- चर्म रोग

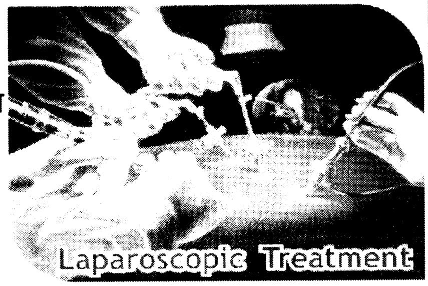

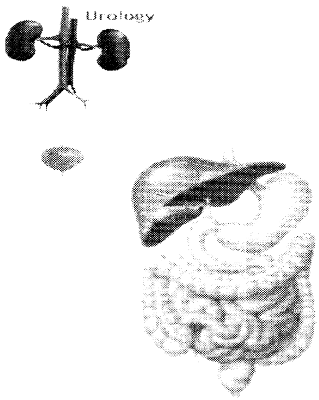

सुविधायें

- 30 वर्ष का अनुभव
- 4 लाख से अधिक रोगियों का सफल ईलाज
- 2 लाख से अधिक रोगियों का शल्य क्रिया द्वारा उपचार।
- 50,000 से अधिक पथरी रोगियों का उपचार।
- NABH & NABL से मान्यता प्राप्त।
- MLC (Medico Legal Case) की सुविधा
- 24x7 ICU, Emergency Facilty

CGHS, ECHS, ESIC, NPCIL (Rawatbhata), BSNL, BHEL, GAIL, IOCL, CWC, FCI, NFL, MNIT, CIPET, CSWRI, HCL, AAI, Coal India, CISF (8th RES BN), Rajasthan University, केन्द्र व राजस्थान सरकार के सभी कर्मचारी व पेंशनर्स एवं सभी प्रमुख TPA व इंश्योरेंस कंपनीयों से ईलाज हेतु अधिकृत

138-ए, वसुन्धरा कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, टोंक रोड़, जयपुर - 302018

फोन: 0141-2703851-52 (मो.) 9660006228, 9829770055

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है,
जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

– आचार्य श्री हस्ती

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT RE-BARS

Committed to Quality. Committed to You.

CUSTOMER GUARANTEED SATISFACTION

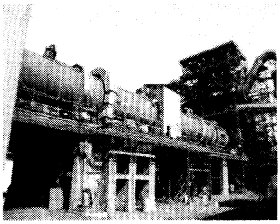

DRI Plant

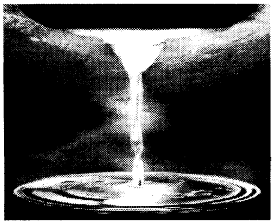

Electric Arc Furnace

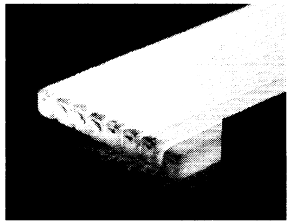

Billets

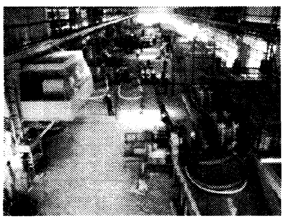

Rolling Mill

Captive Power Plant

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

 # 29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का ।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

Acharya Hasti Scholarship Fund

Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam..........

Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.

Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. - AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

- **For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad,Chennai (+91 95001 14455)**

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन श्रीमान् रिखबचंद सा सुखानी, रायचूर (कर्नाटक)	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकंवर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन–चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

M. Harish Kumar Kavad - 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-600056** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई **(Mob. +91 95430 68382)**

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम् ।।

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports
Paras Chand Hirawat
CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),
Mumbai-400 098 (MH)
Tel. : +91 22 4018 5000
Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
PACHPADRA-PALI-ERODE
K.L. ASSOCIATES
'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)
Mobile : 094141-22757
135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)
Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

BHANSALI GROUP
Dhanpatraj V. Bhansali
BHANSALI DEVELOPERS
Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E),
Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O),
E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS
Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)
FC51, Bharat-Diamond Bourse,
Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)
Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429
Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates, C.A.
BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd.,
Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt.Ltd.
बसंत के जैन
अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,
Mumbai - 400020 (MH)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.
N.H. Studios ***Launches*** ***N.H. Jewells***
A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg,
Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)
Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

!!Jai Guru Heera!! !!Jai Guru Hasti!! !!Jai Guru Man!!

LIFE
SHOULD NOT
ONLY BE LIVED,
IT SHOULD BE
CELEBRATED!

With best compliments from:

C. R. Kothari & Sons Group of Companies
Stock Broking - DP-CDSIL-NBFC-Solar Power

Mumbai - Baroda - Jaipur - Ajmer

Pradeep Kothari
Sanjay Kothari
Hemant Kothari
Alok Kothari

KALPA-TARU

WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

022 3064 3065

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office**:101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email**: sales@kalpataru.com | **Website**: www.kalpataru.com

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

In association with HDFC PROPERTY FUND

(आ. स. 6700)
श्री मन्त्री महोदय
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा–382007,
जिला–गाँधीनगर (गुजरात)

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन